त्रिकूटारहस्यम्

TRIKŪTĀ RAHASYAM



सम्पादक

आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी

नवशक्ति ग्रन्थमाला-४

त्रिकूटारहस्यम्

(कल्याणी हिन्दी टीका सहित)

सम्पादक/टीकाकार

आचार्य मृत्युञ्जय त्रिपाठी



नवशक्ति प्रकाशन, चौकाघाट, वाराणसी

२००२ ई.

प्रकाशक :
नवशक्ति प्रकाशन
जे० १३/२४ के० चौकाघाट, वाराणसी-२
दूरभाष : ०५४२-२०२२३७

I.S.B.N : 01-07904-04-6

प्रथम संस्करण : २००२ ई.

मूल्य : सजिल्द १४०/-
अजिल्द १००/-

अक्षर विन्यास :
न्यूमाप्रॉस कम्प्यूटर्स
चौकाघाट, वाराणसी-२

मुद्रक :
प्रभा प्रेस,
चौकाघाट, वाराणसी-२
दूरभाष : ०५४२-२१३७२६,२०२२३७

अपनी बात

गुरुदेव पं० केदार नाथ तिवारी से दीक्षा ग्रहण के साथ ही उन्हीं की प्रेरणा एवं जगदम्बा की असीम अनुकम्पा से शक्तिसाधना के शास्त्रीय एवं साहित्यिक पक्ष की ओर ध्यान गया। वस्तुतः यह साधना भोग एवं मोक्ष दोनों ही साथ-साथ प्रदान करने में समर्थ है। पराप्रकृति, पञ्चप्रकृति, त्रिदेवियों के क्रम से होती हुई यह साधना स्थानीय ग्रामदेवियों की उपासना तक पहुँच गई है। योगिनी व मातृका-पूजन, गायत्री-जप तो हिन्दू-कर्मकाण्ड के अङ्ग ही बन गये हैं। इसी आधार पर द्विजमात्र शाक्त कहे गये हैं। शक्ति साधना के क्रम में महाविद्या या विद्या उपासना का विशिष्ट स्थान रहा है। अनेक साधकों ने अपनी रुचि, श्रद्धा एवं उद्देश्य के अनुरूप समय-समय पर दस महाविद्याओं की उपासना की है। इनकी उपासना का ज्ञान हमें विविध तन्त्र ग्रन्थों में मिलता है। तंत्रों में यामल ग्रन्थ और यामलों में भी रुद्रयामल का अद्वितीय स्थान है। इसका उत्तर भाग प्रकाशित हो चुका है किन्तु पूर्व भाग आज भी दुर्लभ है। यद्यपि 'देवी रहस्य,' 'त्रिकूटारहस्य' तथा कतिपय स्तोत्रों की पुष्पिका में रुद्रयामल तन्त्रे देखकर, उनकी रुद्रयामल तन्त्र से मूल उत्पत्ति का संकेत मिलता है।

तन्त्र की गोपनीयता एवं साधकों की स्वाभिमुखता (अन्तर्मुखता) ने तान्त्रिक साहित्य को संकटग्रस्त बना दिया है। आज तन्त्र का क्षेत्र, साधना से दूर का भी सम्बन्ध न रखने वाले वीभत्साचारी, चेटक, चमत्कार कर्ता तान्त्रिकों के प्रभाव से सर्वजन के लिए आतंक और घृणा का पर्याय बन गया है। तन्त्र के नाम पर अनेक साहित्य जिनमें षट्कर्म की सरल युक्तियाँ बताई गई हैं, सुलभ हैं। आगम-ग्रन्थ दुरूह हैं। गोपनीयता के कारण उनके प्रकाशन में भय लगता है तथापि आगम ग्रन्थों को सर्वजन सुलभ बनाने की दिशा में मैं सनातन धर्म के पुनरुद्धारक आदि शङ्कराचार्य के आदिपीठ काशी सुमेरुपीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर जगद्गुरुशङ्कराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज के आदेश और आशीर्वाद से गुरुकृपा का सम्बल तथा पूर्ववर्ती विद्वानों डॉ० परमहंस मिश्र और स्व० राम कुमार राय आदि के कार्यों से प्रोत्साहन प्राप्त कर इन ग्रन्थों के प्रणेता महाकाल या भैरव एवं महाकाली या भैरवी से क्षमायाचना पूर्वक प्रवृत्त हुआ हूँ।

'त्रिकूटा रहस्य' का कल्याणी हिन्दी टीका युक्त प्रस्तुत संस्करण, इस क्रम में सर्वप्रथम प्रयास है। यह अपनी पुष्पिका के आधार पर तान्त्रिक वाङ्मय के मूर्धन्य ग्रन्थ रुद्रयामलतंत्र का ही एक दुर्लभ अंश है। जिसमें दश महाविद्याओं में अप्रतिम श्रीविद्या की उपासना पद्धति का दिग्दर्शन कराया गया है। यद्यपि भगवत्पाद आदिशङ्कराचार्य तथा धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज ने श्रीविद्या उपासना हेतु एक परम्परा प्रचलित की थी जो आज बहुचर्चित एवं अर्चित हो साधकों के हृदय का हार बनी हुई है।

श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, त्रिपुरा, षोडशाक्षरी एक ही विद्या के पर्याय हैं। अतः श्रीविद्या उपासना के 'त्रिपुरा' नाम से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थ मिलते हैं। अतः प्रस्तुत ग्रन्थ का त्रिकूटा नाम भी सामान्य दृष्टि में त्रिपुरा का अपभ्रंश ही प्रतीत होता है किन्तु 'त्रिकूटा रहस्य' की एक दुर्लभ

पाण्डुलिपि के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि इसमें श्रीविद्या, त्रिपुरा एवं उसके भैरव कामेश्वर के षोडशाक्षरी विद्या के तीनों कूटों के समावेश के कारण ही इसका त्रिकूटा नामकरण किया गया हैं। श्रीविद्या उपासना के अनेक ग्रन्थों के मध्य भी कुल मार्गी श्रीविद्या उपासकों के लिए यह एक अमूल्य ग्रन्थ है। अत: इसके हिन्दी अनुवाद को ही साधकों द्वारा प्रथम स्थान दिया गया।

त्रिकूटा रहस्य की विशेषताएँ

श्रीविद्या षोडशाक्षरीविद्या के रूप में प्रचलित है। अत: उसके मूर्तरूप इस ग्रन्थ का सोलह-सोलह पटलों के दो खण्डों में सम्पादन किया गया है।

प्रथम उपासना-खण्ड

इसका प्रथम खण्ड, उपासना-खण्ड है। त्रिकूटारहस्य का यह उपासना खण्ड साधना के जप एवं पूजन पक्ष को पूर्णत: प्रकाशित करता है। इसमें श्रीविद्या के मंत्रोद्धार एवं पूजाविधियों का वर्णन किया गया है। इसमें त्रिकूटारहस्य के पूर्वार्ध के सोलह पटल हैं, जिनमें उपासना के व्यावहारिक पक्ष का विवेचन मिलता है।

इसके **प्रथम पटल** में सम्पूर्ण ग्रन्थ की विषयानुक्रमणिका संक्षिप्त रूप में दी गई है तथा श्रीषोडाशाक्षरी विद्या का मंत्रोद्धार, इसकी उपासना का माहात्म्य तथा भगवती त्रिपुरा का ध्यान वर्णित है। **द्वितीय पटल** में उक्त विद्या के तीनों कूटों (खण्डों) के उद्धार (निर्णय) निर्दिष्ट है। इस प्रकार प्रथम एवं द्वितीय पटलों में त्रिपुरा के षोडाशाक्षरी-मंत्र निर्णय के पश्चात् **तृतीय पटल** में इस मंत्र के पुरश्चरण हेतु पूजा-स्थल, जपनीय मन्त्र संख्या, हवन, तर्पण, मार्जन आदि का उल्लेख किया गया है। मंत्रोद्धारक्रम में ही **पञ्चम पटल** में त्रिकूटा के भैरव कामेश्वर के षोडशाक्षरी मन्त्र एवं उसके त्रिकूटों का उद्धार तथा चतुर्दश पटल में त्रिकूटा, षोडशी, बाला, सुमुखी, तारा इन पाँच देवियों का मंत्रोद्धार षोडशाक्षरीविद्या के पूरक पञ्चरत्नेश्वरी विद्या के मंत्रोद्धार के रूप में किया गया है। जहाँ **चतुर्थ पटल** में आचार-विधि के अन्तर्गत शक्ति-साधना के वामाचार, कुलाचार, दक्षिणाचार, नामक तीन प्रकार के आचार पक्षों का भी तात्त्विक विवेचन किया गया है, वहीं त्रयोदशपटलान्तर्गत तांत्रिक प्रयोगों, षट्कर्म विधानों के अपेक्षा त्रिकूटामन्त्र के दशकर्मगत प्रयोगों का व्यावहारिक वर्णन भी किया गया है। सामान्यत: तन्त्र के क्षेत्र में मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, आकर्षण, शान्तिकरण रूप में षट्कर्मों का वर्णन मिलता है, किन्तु स्तम्भन, पुष्टिकरण, शान्तानिक एवं मौक्तिक चार अन्य कर्मों सम्बन्धी उपासनागत निर्देश इस ग्रन्थ की उपयोगिता को समृद्ध करते हैं। इस ग्रन्थ के षष्ठ से द्वादश तक के सात पटलों तथा षोडश पटल में विभिन्न तथा विशिष्ट पूजा विधियों का वर्णन मिलता है। **षष्ठ पटल** में भगवती त्रिकूटा की नित्य-पूजा का विस्तृत वर्णन किया गया है। जिसमें यंत्र-निर्माण, पात्र-स्थापन आदि का विशद वर्णन किया गया है। पटल के आरम्भ में ही **''सूतके मृतके वापि पथि कान्तार मण्डले। म्लेक्ष्छभूभौ च कारायां सङ्कटे रणमण्डले। मनसैव चरेत्पूजां त्रिकूटाया: महेश्वरी।।''** द्वारा आपात्काल में मानसी-पूजा का निर्देश है। तात्पर्य यह कि चाहे जो भी परिस्थितियाँ हों, पूजा अवश्य ही की जानी चाहिये।

सप्तम से द्वादश तक छह पटल विशिष्ट पूजाओं से सम्बन्धित हैं, जिन्हें ग्रन्थकार द्वारा समय पूजा के अन्तर्गत रखा गया है। इनका महत्व अग्रलिखित श्लोक से ही सिद्ध है—

न सिध्यन्ति महादेवी नित्य पूजा जपादयः।
यज्ञ होमादयो देवि विना समय पूजया।।

इसी क्रम में **सप्तम पटल** में भगवती त्रिकूटा के सूर्यग्रहणकालिक पूजा-विधि में सम्बन्धित यन्त्र-निर्माण, पूजन, जपादिका विधिवत वर्णन इसके फलश्रुति सहित किया गया है। इसी प्रकार **अष्टम पटल** में चन्द्रग्रहण, **नवम पटल** में भूकम्प, **दशम पटल** में चैत्र नवरात्र, **एकादश पटल** में आश्विन नवरात्र, **द्वादश पटल** में कन्या संक्रान्ति कालिक-पूजा का विधिवत विनियोगादि निर्देश पूर्वक वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ के **पञ्चदश पटल** में कार्तिक मास में दीपदान के रूप में एक विशिष्ट सामयिक-पूजा का वर्णन है जो साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक है।

पञ्चदशी के प्रथम कूट के पाँच अक्षर हैं। उसी प्रकार इसके प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पञ्चम एवं चतुर्दश पटल मंत्र सम्बन्धी, सप्तम से द्वादश तक के छः पटल द्वितीय कूट के छः मन्त्र वर्णो की भाँति मूल-पूजा के पोषक छः सामयिक पूजाओं से सम्बन्धित हैं। शेष चतुर्थ, सप्तम, त्रयोदश, पञ्चदश, ये चार पटल तृतीय कूट के चार वर्णों के समान साधक के आचार पक्ष के परिचायक हैं तथा षोडश एवं अन्तिम पटल तो इन सबकी परिणति ही है। यह ग्रन्थ के इस भाग का सारभूत एवं बहुमूल्य अंश है, जिसमें शक्ति-पूजा की विशिष्ट- विधि का प्रतिपादन हुआ है। सम्भवत: मन्त्र-जाप-साधन का आधार, पूजाएँ, उसकी पोषिका तथा शक्ति ही भगवती के रूप में उपासना साधना की चरम परिणति हैं। वाममार्ग या कुलाचार में बाहर से दीखने वाला समस्त आचार भ्रामक एवं रहस्यमय है इसे गुरु कृपा या इष्टादेश से ही जाना जा सकता है। अत: योग्य गुरु के अभाव में सम्बद्ध विद्या के भैरव या साम्बसदाशिव को ही गुरुरूप में प्रतिष्ठापित कर आगे बढ़ा जा सकता है।

द्वितीय स्तुति (कवच) खण्ड

प्रत्येक पूजा-विधान में यन्त्र-निर्माण, पूजन-विधि, जप, होम, अनन्तर यंत्र या पूज्य के सम्मुख स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम आदि के पाठ का आग्रह किया गया है। इसी दृष्टि से ग्रन्थ के **सप्तदश** से **द्वित्रिन्शः** तक के १६ पटलों में विविध कवचात्मक स्तुतियों का विनियोग एवं फलश्रुति समेत विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है।

ग्रन्थ के **सप्तदश पटल** के वज्रपञ्जर कवच में बालादि नामों वाली देवियों से रक्षा की प्रार्थना की गई है। **अष्टादश पटल** का चिन्तामणि कवच सभी आशाओं को पूर्ण करने वाला मंत्र अवयवमय कवच हैं। **एकोन्विन्श पटल** में श्रीविद्या की सिद्धि में सहायक जगन्मङ्गल नामक कवच, **विंशपटल** में जगन्मोहक नामक दिव्य कवच का वर्णन किया है। **एकविंशपटल** में सर्वसिद्धिप्रद जगदीश, **द्वाविंशपटल** में विद्याधरों में भी है श्रेष्ठत्व प्रदायक कामिका कवच वर्णित हैं। इसके **त्रयोविंशपटल** में त्रयक्षरी से युक्त देवियों से शरीर के विभिन्न अङ्गों की रक्षा हेतु त्र्यक्षरा-विधि नामक कवच का वर्णन किया गया है। **चतुर्विंशपटल** में त्रिविक्रम नामक कवच तथा **पञ्चविंशपटल** में सर्वत्रविजयप्रद त्रैलोक्यभूषण कवच वर्णित है। इसी प्रकार **षड्विंश पटल** में विरुपाक्ष और **सप्तविंशपटल** में मात्रिकाक्षरमयी श्रीविद्या से सर्वार्थसाधक कवच के माध्यम से आत्मरक्षार्थ प्रार्थना की गई है। **अष्टाविंश पटल** में अङ्गन्यासमय आनन्द-वर्धन नामक कवच तथा **एकोनत्रिंशपटल** में भी यन्त्र के अङ्ग-उपाङ्ग पर प्रकाश डालने वाले

वैरीनाश कवच का वर्णन किया गया है। **त्रिंशपटल** का विजय नामक कवच श्रीविद्या के मंत्रोद्धार पर प्रकाश डालने वाला है। **एकत्रिंशपटल** का विषापह नामक कवच सब प्रकार का विषभय दूर करने वाला तथा **द्वित्रिंशपटल** का मुक्ति-साधक-कवच है। इस प्रकार के १६ पटलों में वर्णित उपर्युक्त १६ कवच दिव्य, गोपनीय तथा अभीष्टप्रद है।

ग्रन्थ के अन्त में कवचों के धारण की विधि तथा शक्ति सहित पाठ का महत्व दर्शाया गया है। वहीं इस ग्रन्थ को देवी का स्वरूप मानकर घर में रखने, पढ़ने या इसके अनुसार साधना करने का फल बताया गया है। इस ग्रन्थ के अधिकारी के विषय में निर्देश देते हुए स्वयं इसे शिव स्वरूप बताकर ग्रन्थ का समापन किया गया है।

इन सबके अतिरिक्त प्रथम खण्ड में पञ्चरत्नेश्वरी विद्या का षोडशाक्षरी विद्या की सहायिका के रूप में उल्लेख किया गया है तथा अन्तिम पटल का समापन ग्रन्थ के माहात्म्य से होता है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ श्रीभैरव एवं महेश्वरी के संवाद के रूप में है।

यद्यपि इस ग्रन्थ की कुछ प्रतियाँ सरस्वती ग्रन्थालय में तथा एक प्रति पं० उमाशंकर तिवारी ग्राम-चमरहा, सुरियावाँ, जिला-सन्त रविदास नगर (भदोही) के यहाँ हस्तलिखित रूप में उपलब्ध हैं। तथापि प्रस्तुत प्रतिलिपि सुलभ कराने हेतु मैं **सर्वश्री पं० आद्या प्रसाद जी द्विवेदी, पं० अभय कुमार द्विवेदी** तथा **पं० अजय कुमार द्विवेदी** का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने अपने पैतृक-संग्रहालय से इसे सुलभ कराया है। अत एव अपनी हिन्दी टीका सहित यह ग्रन्थ रुद्रयामल के अज्ञातनामा संकलनकर्ता को शिरसा नमनपूर्वक **श्रीविद्या के अनन्य उपासक स्वर्गीय पं० काली प्रसाद द्विवेदी** जी के करकमलों में यह सर्वतोभावेन सादर समर्पित है।

डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी एवं डॉ० शीतला प्रसाद उपाध्याय ने अपने सुझाव द्वारा इसे उपयोगी बनाने में जो आशीर्वाद प्रदान किया है, उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। अप्रत्यक्षरूप से पूज्य गुरुदेव केदारनाथ तिवारी, आचार्य बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते तथा प्रत्यक्षरूप में गुरुवर स्वामी ऋद्धेश्वरानन्द तीर्थ एवं ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती के प्रति कृतज्ञता शब्दों में नहीं व्यक्त की जा सकती।

नवशक्ति प्रकाशन के श्री लोकेश कृष्ण त्रिपाठी एवं **प्रभा प्रेस** के अधिकारी श्री योगेश दत्त त्रिपाठी के सक्रिय एवं सुरुचिपूर्ण सहयोग से ही यह कृति प्रस्तुत हो सकी है। अतएव वे दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

गुरुदेव तिवारी जी महाराज जगदम्बा काली को कल्याणी के नाम से पुकारा करते थे अत: उनके ही नाम और अनुकम्पा से सम्पन्न यह टीका 'कल्याणी' नाम से प्रसिद्ध हो, कल्याणकारिणी होवे, यही जगदम्बा से प्रार्थना है।

पुनश्च यह पुस्तक साधनापरक है। इसमें स्थान-स्थान पर मुद्रादि के सङ्केत हैं। साधना का आधार गुरुदीक्षा होती है। अत: साधकों से करबद्ध निवेदन है कि इससे श्रद्धापूरित हो आराधना तो करें किन्तु उचित इष्ट एवं गुरु तथा सत्शास्त्रों का आश्रय अवश्य लें।

वर्ष प्रतिपदा
२०५९ वि०

–मृत्युञ्जय त्रिपाठी

वैदिक, कर्मकाण्डी, तान्त्रिक



जन्म १९२६ ई० पं० काली प्रसाद द्विवेदी जी निधन - १९७५ ई०

वैदिक कर्मकाण्डी तान्त्रिक

समर्पण

श्रीविद्या के अनन्य उपासक
स्वर्गीय पं० काली प्रसाद द्विवेदी जी
के करकमलों में यह सर्वतोभावेन
सादर समर्पित है ।

प्रकाशकीय

कल्पश्चतुर्विधः प्रोक्तः आगमो ड्डमरस्तथा।
यामलश्च तथा तन्त्र तेषां भेदाः पृथक् पृथक्।।

—वाराही तन्त्र

एक प्राचीन अवधारणा के अनुसार पुरातन काल में तन्त्र अथवा आगम साहित्य का जो विशाल भण्डार विद्यमान था; वह काल के प्रभाव से प्रायः लुप्त होता गया, जिसके कारण संसार का आध्यात्मिक मार्ग अवरुद्ध-सा हो गया। फलतः चिन्तित होकर कैलाश पति भगवान शिव स्वयं वक्ता बने और उन्होंने तन्त्र के गूढ़तम रहस्यों से आवरण हटाया। भगवान शिव द्वारा वर्णित यह समस्त शास्त्र 'शिवमुखोक्त शास्त्र' के अन्तर्गत आता है। यही शिव कहीं-कहीं भैरव के रूप में भी वर्णित हैं। यह शास्त्र आगम, डामर, यामल, तन्त्र आदि कितने ही भागों में प्राप्य है, जिनमें यामल ग्रन्थ और यामलग्रन्थों में भी 'रुद्रयामल तन्त्र' का अपने साहित्यिक एवं प्रायोगिक पक्षों के कारण अद्वितीय स्थान है। प्रस्तुत ग्रन्थ **'त्रिकूटा रहस्य'** की उत्पत्ति का सङ्केत, मूलतः रुद्रयामल तन्त्र से ही मिलता है। यह ग्रन्थ तन्त्र के प्रायोगिक कारकों, तदुपरान्त निष्कर्षों पर प्रकाश डालता हुआ आज के परिप्रेक्ष्य में साधकों के लिए उनके इष्ट के साथ गुरु के निर्देश पर अत्यन्त उपयोगी एवं सार्थक ग्रन्थ है और भोग एवं मोक्ष दोनों पुरुषार्थों का साथ-साथ प्रदाता है।

अपनी स्थापना से ही शक्ति साहित्य और साधना के प्रचार-प्रसार में संलग्न **नवशक्ति प्रकाशन** बृहद्देवी सूक्तम्, श्री महाभागवत उपपुराण, दिव्य चण्डीक्रमा दुर्गासप्तशती आदि ग्रन्थों के पावन क्रम में ही इस महान ग्रन्थ **'त्रिकूटा रहस्य'** का प्रकाशन कर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है तथा जगदम्बा और उनके साधकों के आशीर्वाद से प्राणिमात्र के सर्वार्थ अभिवृद्धि के सिञ्चन का आकांक्षी है।

–लोकेश कृष्ण त्रिपाठी

विषय-सूची

त्रिकूटारहस्यम् (उपासना-खण्ड)

प्रथमपटल:	मन्त्रोद्धार कथन	१-५
द्वितीयपटल:	मन्त्र विद्या प्रकाश	६-९
तृतीयपटल:	पुरश्चर्या विधि वर्णन	१०-१३
चतुर्थपटल:	आचार विधि वर्णन	१४-१७
पञ्चमपटल:	कामेश्वर मन्त्रोद्धार वर्णन	१८-२१
षष्ठपटल:	पूजा विधि वर्णन	२२-३४
सप्तमपटल:	सूर्यग्रहण पूजा विधि	३५-३९
अष्टमपटल:	चन्द्रग्रहण पूजा विधि	४०-४३
नवमपटल:	भूकम्पार्चन विधि	४४-४७
दशमपटल:	चैत्र नवरात्र अर्चन विधि	४८-५२
एकादशपटल:	आश्विन नवरात्र अर्चन विधि	५३-५७
द्वादशपटल:	कन्या संक्रान्ति पूजा विधि	५८-६१
त्रयोदशपटल:	दश प्रयोग विधि	६२-६६
चतुर्दशपटल:	पञ्चरत्नेश्वरी मन्त्रोद्धार	६७-६९
पञ्चदशपटल:	कार्तिक दीपदान विधि	७०-७३
षोडशपटल:	शक्ति पूजा विधि	७४-७७

त्रिकूटारहस्यम् [स्तुति (कवच) खण्ड]

सप्तदशपटल:	वज्रपञ्जर कवच	७८-७९
अष्टादशपटल:	चिन्तामणि कवच	८०-८१
एकोनविंशपटल:	जगन्मङ्गल कवच	८२-८४
विंशपटल:	जगन्मोहन कवच	८५-८६
एकविंशपटल:	जगदीश कवच	८७-८८
द्वाविंशपटल:	कामिका कवच	८९-९०
त्रयोविंशपटल:	त्र्यक्षरा विधि कवच	९१-९२
चतुर्विंशपटल:	त्रिविक्रम कवच	९३-९४
पञ्चविंशपटल:	त्रैलोक्य भूषण कवच	९५-९६
षड्विंशपटल:	विरूपाक्ष कवच	९७-९८
सप्तविंशपटल:	सर्वार्थ साधक कवच	९९-१००
अष्टाविंशपटल:	आनन्दवर्धन कवच	१०१-१०२
एकोनत्रिंशपटल:	वैरीनाश कवच	१०३-१०४
त्रिंशपटल:	विजय कवच	१०५-१०६
एकत्रिंशपटल:	विषापह कवच	१०७-१०८
द्वात्रिंशपटल:	मुक्ति साधक कवच	१०९-११६



क्रीं

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।

त्रिकूटारहस्यम्

(उपासना-खण्ड)

प्रथमपटलः

मन्त्रोद्धार कथन

।। श्रीदेव्युवाच ।।

भगवन् सर्ववेत्ता त्वं त्रैलोक्यप्रभुरीश्वरः ।
त्रिगुणात्मा त्रिलोकेशस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरान्तकः ।।१।।

श्रीदेवी बोलीं–हे भगवन् ! आप सब कुछ जानने वाले हो, तीनों लोकों के स्वामी, ईश्वर, तीनों गुणों से युक्त, तीनों लोकों के रक्षक, तीन नेत्रों को धारण करने वाले हो। आप ही त्रिपुर का अन्त करने वाले भी हो ।।१।।

त्वमेव सृष्टिकृद्देव त्वं रक्षाप्रलयक्षमः ।
त्वमेव तन्त्रसारज्ञं त्वं मन्त्राम्भोनिधिप्लवः ।।२।।

आप ही सृष्टि कार्य के करने वाले देवता हो तथा आप ही उसकी रक्षा और प्रलय (विनाश) के कार्य में भी समर्थ हो। आप ही तन्त्र के सारतत्त्व को जानने वाले हो एवं मन्त्रों के सागर को पार करने वाली नौकारूप भी आप ही हो ।।२।।

भगवन्त्वत्प्रसादेन श्रुतं तन्त्रसमुच्चयः ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि रहस्यं त्वं निवेदय ।।३।।

हे भगवन् ! आपकी कृपा से मैंने तन्त्र समूहों को सुना है। अब मैं जिस रहस्य को सुनना चाहती हूँ, कृपया आप उसे सुनावें (कहें) ।।३।।

श्रीविद्यायाः महादेव महाविद्या समाश्रितम् ।
मन्त्रराजपरंतत्त्वं वद शीघ्रं करुणानिधे ।।४।।

हे महादेव ! हे करुणा के सागर ! आप शीघ्र ही श्रीविद्या नामक महाविद्या से सम्बन्धित अत्यन्त श्रेष्ठ मन्त्रराज तथा उसके परमतत्त्व को बताइये ।।४।।

।। श्रीभैरव उवाच ।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यं सर्वकामिकम् ।
श्रीविद्यायाः परंतत्त्वं तन्त्रमन्त्रैकसाधनम् ।।५।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! मैं तुमसे सभी कामनाओं को पूरा करने वाला, तन्त्र-मन्त्रों का एकमात्र साधन, श्रीविद्या के परंतत्त्व को कहता हूँ, तुम उसे सुनो ।।५।।

चतुःषष्टयात्मकं तन्त्रं रुद्रयामलमीरितम् ।
तच्चालोड्य प्रवक्ष्यामि तन्त्रमेतन्महेश्वरि ।।६।।

हे महेश्वरि ! रुद्रयामल तन्त्र, चौसठ तन्त्रों से युक्त बताया गया है। मैं उस (रुद्रयामल तंत्र) का आलोडन (मंथन) करके इस तन्त्र को कहूँगा ।।६।।

श्रीत्रिकूटाया रहस्याख्यं तन्त्रमन्त्रैक सुप्रिये ।
गुह्यं रहस्यं सर्वस्वं मम चैव दिवौकसाम् ।।७।।

हे प्रिये ! तन्त्र मन्त्रों में एक (अद्वितीय) यह त्रिकूटा रहस्य नामक तन्त्र, मेरा सर्वस्व है तथा देवताओं के लिए अत्यन्त गोपनीय रहस्य है ।।७।।

इदानीं तव भक्त्याऽहं कथयामि सविस्तरम् ।
श्रीत्रिकूटाया रहस्याख्यं तन्त्रमन्त्रैकसागरम् ।।८।।

इस समय तुम्हारी भक्ति के कारण मैं तन्त्र-मन्त्र के एकमात्र सागर (संग्रह) श्री त्रिकूटा रहस्य नामक इस तन्त्र की विस्तारपूर्वक कथा करता हूँ ।।८।।

तत्रादौ देवि संगुह्यामनुक्रमणिकां पराम् ।
तन्त्रेस्मिन्त्वां समासेन वक्ष्यामि शृणु सुन्दरी ।।९।।

हे देवि ! वहाँ (उस प्रसङ्ग में) मैं सर्वप्रथम इस तंत्र में वर्णित अत्यन्त गोपनीय किन्तु श्रेष्ठ अनुक्रमणिका (विषय-सूची) को संक्षेप में कहता हूँ। हे सुन्दरी ! तुम उसे सुनो ।। ९ ।।

अनुक्रमणिका वर्णन

मन्त्रोद्धारपटलस्त्रिकूटानिर्णयोपरः ।
पुरश्चर्य्याविधिश्चैव कुलाचारविधिस्ततः ।।१०।।

इसमें मन्त्रोद्धार पटल, तब त्रिकूटा का निर्णय, पुरश्चर्या (पुरश्चरण) की विधि तदन्तर कुलाचारविधि का वर्णन किया गया है ।।१०।।

नित्यकामेश्वरस्याऽपि मंत्रोद्धार विनिर्णयः ।
नित्यपूजाविधिश्चैव उपरागार्चनं ततः ।।११।।
सूर्य्यस्यैव च चन्द्रस्य भूकम्पस्य महेश्वरी ।
चैत्रेऽर्चानवरात्रोत्था तथा चाश्विनमासिकी ।।१२।।

हे महेश्वरि ! इसमें नित्य कामेश्वर के भी मन्त्रोद्धार सम्बन्धी निर्णय, नित्य पूजा-

विधि एवं सूर्य-चन्द्रमा के ग्रहण तथा भूकम्प के समय, चैत्र नवरात्र और अश्विन मास के नवरात्र की विशेष पूजाओं का क्रमशः वर्णन किया गया है ॥११-१२॥

कन्यासंक्रान्तिपूजाऽपि स्तम्भनादि विधिस्ततः ।
पंचरत्नेश्वरीविद्या दीपदानविधिस्ततः ।।१३।।

इसी प्रकार कन्यासंक्रान्ति-कालिक पूजा का भी वर्णन हुआ है । तत्पश्चात स्तम्भन आदि कर्मों की विधि और पञ्चरत्नेश्वरीविद्या तथा दीपदानविधि का भी क्रमशः वर्णन किया गया है ॥१३॥

शक्तिपूजा विधिश्चेति पटलाः षोडशास्मृताः ।
तन्त्रेस्मिन्प्रथमं ख्याता कवचानि तु षोडश ।।१४।।

उपर्युक्त के अतिरिक्त शक्तिपूजाविधि नामक कुल १६ पटलों का इस तन्त्र के प्रथम भाग में तथा दूसरे भाग में क्रमशः १६ कवचों का वर्णन किया गया है ॥१४॥

सोलह कवचों का वर्णन

वज्रपंजरकाख्यं स्याज्जगच्चिंतामणिस्ततः ।
जगन्मंगलकाख्यं च जगन्मोहनकोपरः ।।१५।।
जगदीशः काम्यकाख्यस्त्र्यक्षराख्यस्त्रिविक्रमः ।
त्रैलोक्यभूषणं नाम विरुपाक्षाभिधोपरः ।।१६ ।।
सर्वार्थसाधकं नाम सर्वसिद्धिप्रदपरः ।
वैरिनाशाभिधो देवि विजयाख्यो विषापहः ।।१७ ।।
मुक्तिसाधनकं चेति सर्वदारिद्र्य नाशनम् ।
पटलैर्कवचैर्देवि युक्तं षोडशभिः परम् ।।१८।।

हे देवि ! वे कवच क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) वज्रपंजरक, (२) जगत् चिन्तामणि, (३) जगन्मङ्गल, (४) जगन्मोहन, (५) जगदीश, (६) काम्यक (कामिक), (७) त्र्यक्षर, (८) त्रिविक्रम, (९) त्रैलोक्यभूषण, (१०) विरुपाक्ष, (११) सर्वार्थसाधक, (१२) सर्वसिद्धिप्रद (आनन्द वर्धन), (१३) वैरीनाश, (१४) विजय, (१५) विषापह और (१६) मुक्ति साधनक[१] । हे देवि ! इन १६ पटलों तथा कवचों से युक्त यह तन्त्र दारिद्र्य का नाश करने वाला और अत्यन्त श्रेष्ठ है ॥१५-१८॥

तन्त्रं गुह्यतमं देवि न प्रकाशं कदाचन ।
द्वात्रिंशत्पटलैर्युक्तं श्रीविद्यायारहस्यकम् ।।१९।।

हे देवि ! यह तन्त्र गुह्यतम है । इस बत्तीस पटलों वाले श्रीविद्या के रहस्य से सम्बन्धित तन्त्र को कभी भी (अनधिकारी के सामने) प्रकाशित नहीं करना चाहिए ॥१९॥

---

१. उपर्युक्त सभी कवचों का वर्णन इस तन्त्र के दूसरे स्तुति-खण्ड के क्रमागत (१७-३२ तक के) १६ पटलों में किया गया है ।

वक्ष्यामि श्रृणु तन्त्रेशं भक्तिपूर्वं महेश्वरि ।
श्रीविद्यायाः महाविद्या त्रिकूटेति सुविश्रुता ।।२०।।

हे महेश्वरि ! श्रीविद्या की त्रिकूटा नाम से प्रसिद्ध तन्त्रों में श्रेष्ठ इस महाविद्या को कहूँगा, तुम भक्तिपूर्वक सुनो ।।२०।।

पञ्चरत्नेश्वरी देवि सृष्टिस्थितिलयात्मिका ।
विद्याराज्ञी चेतनेतित्रैगुण्यपरिभूषणा ।।२१।।

हे देवि ! पञ्चरत्नेश्वरी सृष्टि स्थिति लय तीनों ही के सम्पादन में समर्थ है, यही विद्याराज्ञी है, चेतना है तथा तीनों गुणों से सब प्रकार से सुशोभित है ।।२१।।

तस्या वक्ष्यामि देवेशि मन्त्रोद्धारं महेश्वरि ।
यस्य श्रवण मात्रेण साधको मुक्तिभाग्भवेत् ।।२२।।

हे महेश्वरि ! हे देवेशि ! उसका मन्त्रोद्धार तुमसे कहूँगा, जिसके सुनने मात्र से ही साधक मुक्ति का अधिकारी हो जाता है ।।२२।।

लक्ष्मीपरामदनवाग्भवशक्तियुक्ता
तारं च भूतिकमलाकहसादविद्याः ।
शक्त्यादिकं तु विपरीततया प्रयुक्तं
श्रीषोडशार्णं निगमागम संप्रसिद्धिः ।।२३।।

लक्ष्मी (श्रीं) परा (ह्रीं), मदन (क्लीं) वाग्भव (ऐं) शक्ति (सौः) तारं (ॐ) और भूति (ह्रीं) कमला (श्रीं) कादि (क ए इ ल ह्रीं), हादि (ह स क ह ल ह्रीं), सादि (स क ल ह्रीं) विद्याएँ तत्पश्चात् पूर्ववर्णित शक्त्यादि (सौः आदि) विपरीत क्रम से प्रयोग करने पर **श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्री श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं** से श्रीषोडशाक्षरी विद्या बनती है, ऐसी निगम (वेद) एवं आगम (तन्त्र) में प्रसिद्धि है ।।२३।।

नास्य विघ्नो नचाशौचं न कायक्लेशविप्लवः ।
सिद्धसाध्यारिदोषो न न वा प्रतिविपर्ययः ।।२४।।

इसका न कोई विघ्न है, न अशौच है, न किसी प्रकार का शारीरिक क्लेश रूपी बाधा अथवा सिद्ध, साध्य, अरि आदि दोष ही हैं और न किसी प्रकार का इसमें विपर्यय (व्यातिक्रम) ही है ।।२४।।

साक्षादमृतसाध्योऽयं सर्वसिद्धिप्रदोमनुः ।
श्रीविद्यायाः महाराज्ञाः कीलितोपि न दोषभाक् ।।२५।।

श्रीविद्या महाराज्ञी का यह मन्त्र साक्षात् अमृतसाध्य और सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाला है। यह कीलित होने पर भी दोषयुक्त नहीं है ।।२५।।

पूर्वार्णषट्दीर्घबीजैर्न्यासोविधीयते ।
करयोर्हृदयादीनामङ्गानां परमेश्वरि ।
मूलेनैव करन्यासं षडंगन्यासमाचरेत ।।२६।।

हे परमेश्वरि ! पहले छः दीर्घ बीजाक्षरों से करन्यास और हृदयादि अङ्गन्यास किया जाता है अथवा मूल मन्त्र से करन्यास एवं षडंगन्यास करना चाहिये ॥२६॥

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।।२७।।
येन ध्यानेन ब्रह्माण्डकटाहान्तं विलीयते ।
यस्य स्मरण मात्रेण शिव एव न संशयः ।।२८।।

अब मैं इस (त्रिपुरा देवी) का सभी तन्त्रों में गुप्त रूप से वर्णित ध्यान कहूँगा। जिस ध्यान में (स्वरूप में) ब्रह्माण्डकटाह विलीन हो जाता है, जिसके स्मरण मात्र से साधक शिव ही हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है ॥२७-२८॥

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां
धनुश्शरयुतांकुशकामपाशान् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीशिवशक्तिरूपां
कामेश्वरी हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ।।२९।।

जो तपे हुये सोने के समान सुन्दर वर्णवाली, सूर्य-चन्द्र एवं अग्नि रूपधारी तीनों नेत्रों वाली हैं, जो अपनी सुन्दर भुजाओं में धनुष-बाण, अङ्कुश, पाश को धारण किये हुए हैं, जिन्होंने अपने मस्तक पर चन्द्रलेखा (चन्द्रकला) को धारण किया है, ऐसी शिवशक्ति-स्वरूपिणी भगवती कामेश्वरी देवी का मैं हृदय से भजन (ध्यान) करता हूँ ॥२९॥

अनेन ध्यानमन्त्रेण ब्रह्मविष्णुहराः शिवे ।
इन्द्रादयः सुरगणा जाता निष्पंदचक्षुषः ।।३०।।

इस ध्यान मंत्र के प्रयोग से ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि देवगण स्थिर नेत्रों वाले (ध्यानस्थ) हो गये ॥३०॥

इतीदं पटलं दिव्यं मन्त्रोद्धारप्रकाशकम् ।
गुह्यं त्रिपुरसुन्दर्य्याः गायमानं च गोपयेत ।।३१।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये मन्त्रोद्धारकथनं नाम प्रथमपटलः ॥ १ ॥

यह त्रिपुर सुन्दरी का (अपात्रों हेतु) गुह्य किन्तु साधकों द्वारा गाये जाने योग्य मन्त्रोद्धार पर प्रकाश डालने वाला पटल सम्पूर्ण हुआ ॥३१ ॥

श्री रुद्रयामल तन्त्र के त्रिकूटारहस्य का मन्त्रोद्धार कथन नामक
प्रथमपटल सम्पूर्ण हुआ ॥ १ ॥



द्वितीयपटलः

मंत्र विद्या प्रकाश

।। श्रीदेव्युवाच ।।

देवदेव महादेव शरणागतवत्सल ।
मूलमन्त्रस्य यो श्रीविद्या कथिता त्वया ।।१।।
त्रिकूटेति महाविद्या महापंचदशाक्षरी ।
तन्मनूद्धारणविधिं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।।२।।

श्रीदेवी बोलीं–हे देवताओं के भी देव, शरण में आये हुए लोगों से प्रेम करने वाले, महादेव ! पूर्वोक्त मूल मन्त्र में आपके द्वारा जो त्रिकूटा (तीन कूटों वाली) पञ्चदशाक्षरी (पन्द्रह अक्षरों वाली) श्रीविद्या सम्बन्धी महाविद्या कही गयी हैं, अब मैं उस महामन्त्र के उद्धार की विधि तत्त्वत: (यथार्थ रूप में) सुनना चाहती हूँ ।।१-२।।

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना श्रृणु देवेशि त्रिकूटामन्त्रनिर्णयम् ।
गुह्यं गुह्यतमं देवि न कस्य कथितं मया ।।३।।

श्री भैरव बोले–हे देवशि ! अब तुम त्रिकूटामन्त्र का निर्णय (निर्धारण) सुनो । हे देवि ! यह गोपनीय से भी गोपनीय है अभी तक किसी से भी मेरे द्वारा कहा नहीं गया है ।।३।।

हिमाद्रिशिखरेऽलंघ्ये कैलासाख्ये तपस्यतः ।
मम जाता पराशक्ति सृष्टिस्थितिलयात्मिका ।।४।।

हिमालय पर्वत के अलंघ्य कैलाश शिखर पर तपस्या करते हुए मेरे में सृष्टि (उत्पत्ति), स्थिति (पालन) तथा लय (विनाश) की महान शक्ति उत्पन्न हुई ।।४।।

तथा स्तोत्रैः परैर्दिव्यैस्तुष्टात्रिपुरसुन्दरी ।
प्रादुर्बभूव सा देवी वरदानसमुद्यता ।।५ ।।

और मैंने श्रेष्ठ दिव्य स्तोत्रों से भगवती त्रिपुरसुन्दरी को प्रसन्न किया । तब वह देवी वरदान देने की इच्छा से मेरे सम्मुख प्रकट हुईं ।।५।।

तया मां कथिता विद्या कूटत्रयसमुद्भवा ।
परमया शक्त्या सुगृहीता गोपिता मया ।।६।।

तब उस परमाशक्ति के द्वारा तीनों कूटों से समुत्पन्न (निर्मित) यह महाविद्या मुझसे कही गयी तथा मेरे द्वारा सुन्दर ढंग से ग्रहण की गयी और रक्षा की गयी है ।।६।।

अस्याः कूटत्रयोद्धारः सर्वतन्त्रेषु गोपितः ।
ब्राह्मादिस्तंबपर्यन्तं व्याप्तं येन हि तच्छृणु ।।७।।

इसके तीन कूटों का उद्धार सभी तंत्रों में रक्षित है, वह ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्त व्याप्त है। अब उसे मुझसे सुनो ।।७।।

यः ककारादि कूटः स्यात्पंचवर्णसमुज्ज्वलः ।
पंचाननसमुद्भूतः पंचरत्नेश्वरी प्रियः ।।८।।

इसका जो पाँच वर्णों से युक्त ककारादि प्रथम कूट (क ए ई ल ह्रीं) है, वह पञ्चानन शिव से उत्पन्न तथा पञ्चरत्नेश्वरी को प्रिय है ।।८।।

यो हकारादिकूटः स्यात्षडक्षरविभूषितः ।
षडाननः सकौमारः सर्वदेवनमस्कृतः ।।९।।

इसका छः वर्णों से सुशोभित जो हकारादि (ह स क ह ल ह्रीं) द्वितीय कूट है, वह स्वयं सभी देवताओं के वन्दनीय सेना नायक षडानन, कुमार कार्तिकेय का ही स्वरूप है, उसी भाँति सभी देवताओं से वन्दनीय है ।।९।।

यः सकारादिकूटस्याश्चरमश्चतुरक्षरः ।
चतुर्वक्त्रः स विश्वादिर्विश्वत्रयविभास्करः ।।१०।।

जो सकार से प्रारम्भ होने वाला चार अक्षरों का बना अन्तिम कूट है, वह (स क ल ह्रीं) स्वयं चतुर्मुख ब्रह्मा का रूप है। वह विश्व (सब) का मूल कारण है, तथा तीनों विश्वों (लोकों) को प्रकाशित करने वाला है ।।१०।।

एभिः कूटत्रयैर्देवि व्याप्तं हि सचराचरम् ।
जगद्ब्रह्मांडकटकं कटाहं कुल कौलिकम् ।।११।।

हे देवि ! इन्हीं उपर्युक्त तीनों कूटों से ही यह चराचर व्याप्त है। यह जगत क्या ब्रह्माण्ड वृत्तकटाह तथा कौलिकों का कुल मार्ग इससे व्याप्त है (भरा हुआ है) ।।११।।

एषां बीजाक्षरोद्धारं शृणु देवि यथाक्रमम् ।
तव भक्त्या ब्रवीम्यद्य न प्रकाश्यं कदाचन ।।१२।।

हे देवि ! अब क्रमशः इन बीजों का उद्धार (व्याख्या) मुझसे सुनो जो मैं आज तुम्हारी भक्ति के कारण तुमसे कह रहा हूँ। यह कभी भी (अपात्र के सम्मुख) प्रकाशित करने योग्य नहीं है ।।१२।।

ककारं पूर्वमाद्यं स्याच्छिवार्णाद्यं द्वितीयकम् ।
शक्त्यर्णाद्यं तृतीयं स्याद्भुवनत्रयपालकम् ।।१३।।

इसका ककारादि पहला आदिकूट है। दूसरा शिव (ह) अक्षर से प्रारम्भ होने वाला कूट, हकारादि कूट तथा तीसरा शक्ति (स) अक्षर से प्रारम्भ होने वाला सकारादि कूट, तीनों लोकों का पालन करने वाला है ।।१३।।

।। अथकूटोद्धार ।।

प्रथम कूट का प्रथम उद्धार

वेधाबीजमथोर्ध्वोष्ठौ बीजं विष्णुस्तमपराम् ।
कूटं सर्वव्यापकः स्यात्कामेशः कामवर्धनः ।।१४।।

पहले वेधा ब्रह्मा (क) तब उर्ध्वओष्ठ (ए), विष्णु (इ), तम (ल), तथा परा (ह्रीं बीज मन्त्रों के संयोग से क ए ई ल ह्रीं नाम वाला कामेश्वर नामक कूट बनता है सर्वव्यापक तथा कामनाओं को बढ़ाने वाला है ।।१४।।

अनेन सृजते विश्वं महात्रिपुरसुन्दरी ।
ब्रह्मादिकटाहान्त जयदं भुवनत्रये ।।१५।।

इसी से तीनों लोकों में विजय दिलाने वाली महात्रिपुरसुन्दरी देवी ब्रह्मा से आ हुए इस सम्पूर्ण ब्राह्माण्ड की सृष्टि करती हैं ।।१५।।

प्रथम कूट का द्वितीय उद्धार

मायाधिरूढतिमिरं तिमिराधिरूढंजिष्णुस्तथैव च ।
लता मघवाधिरूढ़ा वल्याधिरुढ़वरुणोप्ययमादि कूटः ।
स्यादीशविष्णुकमलासनजप्यमानाः ।।१६।।

माया (ह्रीं) बीज पर सवार तिमिर (ल), उस तिमिर पर सवार जिष्णु (इ), उ मघवा (इ) पर लता या वल्ली (ए) और उस वल्ली पर आरूढ़ वरुण (क) मिलकर अ या प्रथम कूट सिद्ध करता है। यह शिव, विष्णु और कमलासन (ब्रह्मा) द्वारा जपा ज है ।।१६।।

द्वितीय कूट का प्रथम उद्धार

शिवशक्तिशिरः कांतिस्तमोमायाषडक्षरः ।
कूटोभुवो व्यापकोयं द्वितीयो भुवन प्रभुः ।।१७।।

शिव (ह), शक्ति (स), शिर (क), कांति (ह), तम (ल) माया (ह्रीं) बीजों के य से छः अक्षरों वाला भुवः लोक तक व्यापक यह तीनों लोकों का स्वामी **ह स क ह ल** द्वितीय कूट बनता है ।।१७।।

अनेन पाल्यते देवि जगत्स्थावरजंगमम् ।
ब्रह्मादिस्तंबपर्यन्तं महाश्रीषोडशाक्षरी ।।१८।।

षोडशाक्षरों वाली देवी महालक्ष्मी ब्रह्म से स्तम्ब (तृण) पर्यन्त सम्पूर्ण स्थावर जङ्गम जगत का इसी से पालन करती हैं ।।१८।।

द्वितीय कूट का द्वितीयं उद्धार

मायारूढ़स्तमउदाधवस्त्राधिः रुढ़ाछविस्तत्परं ।
कांत्यारूढ़शिरस्ततः परमहो मूर्ध्नादिरूढ़ा शरत् ।

शक्त्यारूढ़छविस्तविन्दुमुकुटो नान्यो द्वितीयोप्ययम् ।
सर्वाभाजन जप्यमानइन्द्रवद्रम्यास्पदं संपदाम् ।।१९।।

माया (ह्रीं) पर आरूढ़ सवार तम (ल), उस उदधिवस्त्रा (ल) पर सवार छवि (ह), उस कांति (ह) पर सवार शिर (क), उस मूर्धा (शिर) पर आरूढ़ शरत् (स) एवं उस शक्ति (स) पर सवार छवि (ह) से बना ह स क ह ल ह्रीं षडक्षर मन्त्र तुम्हारा चन्द्र मुकुट है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा ऐसा नहीं है, जो जपने पर इन्द्र के समान श्रेष्ठ स्थान और सुन्दर सम्पदा का अधिकारी बना सके ॥१९॥

तृतीय कूट का प्रथम उद्धार

शक्ति शिरस्तमोमाया कूटः स्याच्चतुरक्षरः ।
भूव्यापको महादेवि त्रिपुरायास्तृतीयकः ।।२०।।

हे महादेवि ! शक्ति (स), शिर (क), तम (ल), माया (ह्रीं) इन चार अक्षरों से त्रिपुरा का भूलोक में व्याप्त तृतीय कूट **स क ल ह्रीं** बनता है ॥२०॥

अनेन ह्रियते विश्वं महात्रिपुरसुन्दरी ।
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं भुवनत्रयशोषिणी ।।२१।।

प्रलय काल में ब्रह्म से आरम्भ कर तृण पर्यन्त तीनों लोकों का शोषण करने वाली महादेवी त्रिपुरसुन्दरी इसी के द्वारा विश्व का संहार करती हैं ॥२१॥

तृतीय कूट का द्वितीय उद्धार

मायारूढंध्वान्तबीजं महेशि
मोहारूढ़ा वरुणी वर्णशक्तिः ।
मूर्धारूढ़ास्याच्छरच्चन्द्रमान्यः
कूटेस्त्वीन्द्रोपेन्द्रसूर्येन्दु जाप्यः।।२२।।

हे महेशि ! माया (ह्रीं) के पीछे ध्वान्त बीज (ल), उस मोह (ल) पर सवार वरुण की वर्ण शक्ति (क), इस मूर्धा, शिर (क) के बाद शरत् चन्द्र (स) युक्त यह जो तृतीय कूट है, वह इन्द्र, उपेन्द्र (विष्णु), सूर्य तथा चन्द्रमा के द्वारा जपा जाता है ॥२२॥

नान्या सदृशी विद्या त्रिकूटा परमेश्वरी ।
गोपनीया प्रयत्नेन चेत्याज्ञा परमेश्वरी ।।२३।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये मंत्रविद्यानाम द्वितीयपटलः ॥ २ ॥

हे परमेश्वरी ! इस त्रिकूटा विद्या के समान कोई अन्य विद्या नहीं है। यह स्वयं में ही परमेश्वरी है। इसकी प्रयत्नपूर्वक (अपात्रों से) रक्षा की जाय, यही मेरी आज्ञा है ॥२३॥

श्री रुद्रयामल तन्त्र के त्रिकूटारहस्य का मन्त्रविद्या नामक
द्वितीयपटल सम्पूर्ण हुआ ॥ २ ॥

तृतीयपटलः

पुरश्चर्या विधि वर्णन

।। श्रीभैरव उवाच ।।

इदानीं शृणु देवेशि पुरश्चर्य्याविधिं परम्।
यं विधाय महादेव्यामंत्रसिद्धिमुपेष्यति ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवेशि ! अब तुम वह श्रेष्ठ पुरश्चर्या विधि सुनो जिसे करके महादेवी (त्रिपुरा) के मन्त्र की सिद्धि प्राप्त होती है ।।१।।

शुभेऽह्नि देवि गत्वादौ श्मशानं साधकोत्तमः ।
गुरुं ध्यात्वा हृदम्भोजे देवीं ध्यात्वा च तन्मयीम् ।।२।।

हे देवि ! सर्वप्रथम श्रेष्ठ साधक शुभ दिन में श्मशान भूमि जाकर वहाँ पहले गुरु का ध्यान करे तत्पश्चात् गुरु स्वरूपिणी देवी का अपने हृदय कमल में ध्यान करे ।।२।।

जप्त्वा बीजत्रयं कूटं विधिवत्साधकेश्वरी ।
गुरवे चैव देव्यै चैव समर्प्य जपमादरात् ।।३।।

हे ईश्वरी ! तीनों कूटों के बीजमन्त्रों का विधिपूर्वक जप करके साधक गुरु एवं देवि के लिए आदरपूर्वक उस जप को समर्पित करे ।।३।।

गृहीत्वाज्ञां गुरोः शीघ्रं आगत्य जपमंडपम् ।
आदौ मंत्रमयं न्यासं कृत्वा मंत्री च प्राङ्मुखः ।।४।।

मन्त्र सिद्धि का इच्छुक व्यक्ति शीघ्र ही गुरु की आज्ञा लेकर, जपमण्डप में जाकर सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख बैठकर मन्त्रमय न्यास करे ।।४।।

उत्तराभिमुखो भूत्वा प्राणायामत्रयं चरेत् ।
त्रिराचम्य महादेवि पुरश्चर्य्याक्रमं चरेत् ।।५।।

हे महादेवि ! तत्पश्चात् वह उत्तराभिमुख हो, पहले तीन प्राणायाम करे और तब तीन बार आचमन कर पुरश्चर्याक्रम का आचरण करे ।।५।।

वर्णलक्षं महादेवि तदर्धं वा महेश्वरी ।
एकलक्षावधिं कुर्यादतो न्यूनं न कारयेत् ।।६।।

हे महादेवि ! हे महेश्वरी ! मन्त्र में जितने वर्ण हैं[१] उतनी लाख संख्या में या उसका आधा या एक लाख तक पुरश्चरण हेतु मन्त्र जप करे। इससे कम तो नहीं ही करे ।।६।।

---

१. त्रिकूटा मन्त्र में १५ वर्ण हैं। अतः इसके पुरश्चरण में १५ लाख या साढ़े सात लाख अथवा कम से कम एक लाख मन्त्र जप अवश्य करना चाहिए।

जीवहीनं यथादेहं सर्वकर्मसु न क्षमः ।
पुरश्चरणहीनो हि न मंत्रः फलदायकः ।।७।।

जिस प्रकार जीवन से हीन शरीर सभी कर्मों के सम्पादन में समर्थ नहीं होता, उसी प्रकार पुरश्चरणकर्म से हीन मन्त्र फलदायक नहीं होता ।।७।।

शून्यागारे विल्वमूले श्मशाने च चतुष्पथे ।
अर्धरात्रेथ मध्यान्हे पुरश्चर्य्यां चरेच्छिवे ।।८।।

हे शिवे ! शून्य (एकान्त) गृह में, विल्व मूल (बेल के पेड़ के नीचे), श्मशान में, चौराहे पर, आधीरात में अथवा मध्याह्न में पुरश्चरण करे ।।८।।

यथार्धरात्रसमये कृत्वा विष्टरशोधने ।
उपलक्षणपूर्वं तु जपं देव्या समर्पयेत् ।।९।।

जैसे यदि आधी रात में पुरश्चरण करना हो तो पहले विष्टर (आसन) शोधन (शुद्धि) करे तब उपलक्षण के अनुसार जप कर उसे देवी को समर्पित करे ।।९।।

कृत्वा षडंगविधिवद्भूतशुद्धिं ततः परम् ।
प्राणान्संस्थाप्य देवेशि मूलमन्त्रं जपेत्ततः ।।१०।।

हे देवेशि ! विधिपूर्वक षडंगन्यास करने के पश्चात् भूतशुद्धि करे तथा प्राण प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र (अभीष्ट मन्त्र) का जप करे ।।१०।।

जपादशांशतोहोमस्तद्दशांशेन तर्पणम् ।
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम् ।।११।।

जप के दशांश (१ ।। लाख, ७५००० या १००००) मन्त्रों से हवन तथा उसके दशांश (१५०००, ७५००, या १०००) मन्त्रों से तर्पण, तपश्चात् उसके दशांश (१५०० या ७५० या १००) मन्त्रों से मार्जन करे और तब उसकी दशांश संख्या (१५०, ७५ या १०) में ब्राह्मण भोजन कराये ।।११।।

सर्पिमत्स्यण्डिमृद्वीका गुडपुष्पैः प्रसूनकैः ।
पीतैः कार्यो महान्होमः पुरश्चरणकस्यहि ।।१२।।

घी, मत्स्याण्डि (राब), मृद्वीका (अंगूर), गुडपुष्प (महुआ) के फूलों तथा पीले पुष्पों से पुरश्चरण करने वाला महान् हवन करे ।।१२।।

हवन विधि वर्णन

अथ होमविधिं वक्ष्ये दशांशस्य महेश्वरि ।
जपं संपाद्य विधिवदयुतं परमं पदम् ।।१३।।
तद्दशांशं चरेद्धोमं साधक स्वस्य सिद्धये ।
होमं संपाद्य श्रीविद्यां तर्पयेत्साधकोत्तमः ।।१४।।

हे महेश्वरि ! अब दशांश हवन की विधि कहता हूँ। विधिवत् अयुत के परमपद अर्थात् १००००० संख्या में मन्त्र का जप कर लेने के पश्चात्, अपने उद्देश्य की सिद्धि

हेतु साधक को किये हुए जपमान का दशांश हवन करना चाहिये। साधकों में श्रेष्ठ वह साधक हवन सम्पन्न कर लेने के पश्चात् श्रीविद्या का तर्पण करे ॥१३-१४॥

त्रिकोणकुंडमुत्खन्यशिवादि कोणतः शुभम्।
तत्र संलिख्ययेद्देवि तत्र यंत्रं विभावयेत्॥१५॥

हे देवि ! शिवादि (ईशान) कोण में उत्तम सुन्दर त्रिकोण कुण्ड खुदवाये। उस स्थान पर सुन्दर यन्त्र लिखे ॥१५॥

यन्त्र वर्णन

त्र्यस्त्रं षिन्दुयुतं देवि षट्कोणं वृतमंडलम्।
चतुर्द्वारांकितं देवि पूजयेत्साधकोत्तमः॥१६॥

हे देवि ! उत्तम साधक को चाहिए कि वह विन्दुयुक्त त्रिकोण, वृत्त से घिरा हुआ षट्कोण, चार द्वारों युक्त यन्त्र रूपी देवी की पूजा करे ॥१६॥

गणेशं धर्मराजं च कुबेरवरुणौ ततः।
सम्पूजयेद्देवि षट्कोणे पूजयेत् परदेवताम्॥१७॥

हे देवि ! तत्पश्चात् उसे गणेश, धर्मराज, कुबेर, वरुण का पूजन कर षट्कोण में परदेवता का पूजना करना चाहिये ॥१७॥

मायां च मोहिनीं चैव तृतीयां च मनोन्मनीम्।
मातङ्गीं मुक्तकेशीं च मदिराक्षीं षडस्त्रके॥१८॥

षट्कोणों में क्रमशः माया, मोहिनी, मनोन्मनी, मातङ्गी, मुक्तकेशी तथा मदिराक्षी परदेवताओं का पूजन करे ॥१८॥

बिन्दौ सम्पूजयेद्देवि महात्रिपुरसुन्दरीम्।
बिंदौ सदाशिवं पूज्यं वह्निस्वाहायुतं ततः॥१९॥

विन्दु में देवी महात्रिपुरसुन्दरी का पूजन करना चाहिये। विन्दु में सदाशिव तथा स्वाहा सहित अग्नि का पूजन करे ॥१९॥

वर्णसंख्यां क्षिपेद् बिन्दौ स्वर्णस्य परमेश्वरी।
स्वर्णतः द्विगुणितं रौप्यं ताम्रं त्रिगुणितं शिवे॥२०॥

हे परमेश्वरी ! मन्त्र के अक्षरों की संख्या के समान (१५) स्वर्ण की बूँदें तथा हे शिवे ! स्वर्ण से दूनी (३०) चाँदी की बूँदें अथवा स्वर्ण से तीन गुनी (४५) ताँबे की बूँदें चढ़ाये ॥२०॥

तत्र नैवेद्यगन्धादिधूपदीपप्रसूनकैः।
नैवेद्य मूलमंत्रेण दशांशं होममाचरेत्॥२१॥

वहाँ नैवेद्य (भोग), गन्ध (चंदन), धूप, दीप, पुष्प आदि मूल मन्त्र से अर्पित करे तथा जप के दशांश हवन का आयोजन करे ॥२१॥

ॐकारां अग्नये स्वाहा मन्त्रेणेति महेश्वरी ।
वह्निमावाह्य प्रज्ज्वाल्य त्रिकूटेनाहुतित्रयम् ।।२२।।
दद्यादौ महादेवि पश्चाद्धोमं समाचरेत् ।
न कदाचित्प्रकुर्वीत पुरश्चर्य्यां स्वयं सुधीः ।।२३।।

हे महेश्वरी ! 'ॐ अग्नये स्वाहा' इस मन्त्र से अग्नि का आवाहन और प्रज्वलन कर त्रिकूटा (तीनों कूटों) से प्रारम्भ में तीन आहुतियाँ दे तत्पश्चात् होम करे। बुद्धिमान् साधक को स्वयं अपने आप पुरश्चरण नहीं करना चाहिये ॥२२-२३॥

गुरोर्हस्तेन कुर्वीत साधकस्या पिवा शिवे ।
ततोन्यां वै पुरश्चर्य्यां स्वयं कुर्याच्च साधकः ।।२४।।

हे शिवे ! साधक अपनी पुरश्चर्या गुरु के माध्यम से करे तत्पश्चात् वह दूसरी पुरश्चर्या स्वयं करे ॥२४॥

ततः सिद्धिमवाप्नोति साधको मंत्रसाधकः ।
होमं संपाद्य संतर्प्य संमार्ज्य मनुना शिवे ।।२५।।

हे शिवे ! तब मन्त्र की साधना करने वाला साधक मन्त्र द्वारा होम सम्पन्न करने तथा तर्पण एवं मार्जन के पश्चात् सिद्धि को प्राप्त करता है ॥२५॥

विप्रांश्चभोजयित्वादौ विसृज्य स्वगृहं व्रजेत् ।।२६।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये पुरश्चर्याविधिवर्णननाम तृतीयःपटलः ॥ ३ ॥

तब पहले ब्राह्मणों को भोजन कराकर देवी का विसर्जन कर वह अपने घर को जावे ॥२६॥

श्री रुद्रयामल तन्त्र के त्रिकूटारहस्य का पुरश्चर्याविधिवर्णन नामक
तीसरापटल सम्पूर्ण हुआ ॥३॥



चतुर्थपटलः

आचार विधि वर्णन

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अथाचारं प्रवक्ष्यामि साधकस्येष्टसिद्धये।
गुह्यं परमगुह्यं च मंत्रादपि महेश्वरि ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे महेश्वरि ! अब मैं साधक की इष्टसिद्धि हेतु (अपेक्षित) आचार विधान का वर्णन करूँगा, जो मन्त्र से भी अधिक गुप्त रखने योग्य है ।।१।।

अन्य मंत्रार्चने शुद्धामन्यमन्त्रस्य साधनम्।
मनसापि न कुर्वीत सिद्धिहानिभवेद्ध्रुवम् ।।२।।

अन्य मन्त्र के साधन हेतु शुद्ध (दीक्षित या श्रद्धावान) होकर, अन्य मन्त्र का साधन मन से भी नहीं करे। अन्यथा सिद्धि में हानि अवश्य होती है। (दीक्षाविहीन मन्त्र की साधना नहीं करनी चाहिये) ।।२।।

वामाचारः कुलाचारो दक्षिणाचार इत्यपि।
त्रयःकूटा शिवे ख्यातास्तथाचारास्त्रय स्मृताः ।।३।।

हे शिवे ! जिस प्रकार से तीन कूट (बीज समूह) बताये गये हैं, उसी प्रकार वामाचार, कुलाचार एवं दक्षिणाचार नाम से शक्ति साधकों के तीन आचार भी बताये गये हैं ।।३।।

कुलजां परकीयां वा स्वकीयां देवि कामिनीम्।
दृष्ट्वा नत्वा तथा स्पृष्ट्वा भवेन्मंत्रस्य साधकः।
सकृदुच्चारमात्रेण सिद्धयोऽष्टौ भवंति हि ।।४।।

हे देवि ! शक्ति के साधकों के कुल में उत्पन्न (कुलाचार ग्रन्थों में वर्णित कुल कामिनियों के वर्ग वाली), पराई या अपनी स्त्री[1] को देखने, नमस्कार करने और स्पर्श करने के पश्चात्, एक बार भी मन्त्र के उच्चारण मात्र से साधक, मन्त्र का यथार्थ साधक हो जाता है तथा उसे आठो सिद्धियाँ उपलब्ध हो जाती हैं ।।४।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

भगवन् सर्वतत्वज्ञ सर्वलोकनमस्कृत।
आचाराणां विधिं ब्रूहि श्रीविद्यायाः महेश्वर ।।५।।

---

१. टिप्पणी : तात्त्विक दृष्टि से कुलजा (सुषुम्ना), परकीया (इड़ा), स्वकीया (पिंगला) नाड़ियाँ तथा दर्शन, नमन और स्पर्शन, क्रमशः चिन्तन, मनन, निदिध्यासन जैसे कर्म भी हो सकते हैं। उपासना क्रम में अन्य भी तात्कालिक विवाह (शैव विवाह) विधि द्वारा स्वकीया ही हो जाती है अतः शाक्ताचार में अनाचार मानना भ्रमपूर्ण है।

श्रीदेवी बोलीं–हे भगवन्, आप सभी तत्त्वों को जानने वाले हैं तथा सभी के प्रणम्य हैं। हे महेश्वर ! आप श्रीविद्या (उपासना) सम्बन्धी आचारों की विधि बताइये ॥५॥

वामाचार वर्णन

।। श्रीभैरव उवाच।।

वामाचारं प्रवक्ष्यामि श्रीविद्यासाधन प्रिये।
यं विधाय कलौ शीघ्रं मान्त्रिकं सिद्धिभाग्भवेत्।।६।।

श्री भैरव बोले–हे प्रिये ! मैं श्रीविद्या साधन की दृष्टि से (सर्वप्रथम) वामाचार को बताऊँगा, जिसका आचरण कर कलियुग में मांत्रिक (मंत्र की साधना करने वाला साधक) शीघ्र ही सिद्धि (लाभ) का अधिकारी होता है ॥६॥

मालां नृर्दंतसंभूतां पात्रं मानुषमुंडकम्।
आसनं सिंहचर्मादि कंकणं स्त्रिकचोद्भवम्।।७।।
द्रव्यं मद्यं च मत्स्याद्यं भक्ष्यमांसादिकं शिवे।
चर्वणं बालमत्स्यापि मुद्रा वीणारवः कथा।।८।।
मैथुनं परकांताभिः सर्ववर्णसमानता।।९।।

हे शिवे ! मनुष्य के दाँतों से बनी माला, नरमुण्ड (मनुष्य की खोपड़ी) का बना पात्र, सिंह आदि के चर्म का बना आसन, स्त्रियों के शिर के बाल से बना हुआ हाथ का कंकण धारण, द्रव्य (पूजा पदार्थ) मद्य एवं मत्स्यादि और भक्ष्य (खाने योग्य) मांसादि तथा चर्वण की, (चबेना) बाल मत्स्य (छोटी मछलियाँ) मुद्रा तथा कथा वीणा की मधुर ध्वनि होती हैं। पराई स्त्री से मैथुन तथा सभी वर्णों (वर्णवालों) के प्रति समानता की भावना होती हैं ॥७-९॥

प्रवृत्ते भैरवीतन्त्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवीतन्त्रे सर्ववर्णाः पृथक् पृथक्।।१०।।

भैरवी तंत्र में प्रवृत्त होने पर सभी वर्ण द्विज हो जाते हैं तथा भैरवी तंत्र से मुक्त होते ही सभी वर्ण वाले पृथक् पृथक् वर्णाचार का पालन करते हैं यह विश्वास— ॥१०॥

वामाचार इति प्रोक्तं सर्वसिद्धिप्रदः शिवे।
अन्यथा मन्त्रहानिः स्यात् मंत्रस्यास्य महेश्वरी।।११।।

हे शिवे ! उपर्युक्त आचरण ही वामाचार कहा गया है, जो (विशेषतः कलियुग में) सब प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करने वाला है। हे महेश्वरि ! इसके विपरीत आचरण से इस मन्त्र की मन्त्रहानि होती है अर्थात् मन्त्रसिद्धि नहीं होती ॥११॥

तस्मान्नित्यं भजेद्वामं वामेव परागतिः।
त्रिकूटायाः परं तत्त्वं वामाचारो मयास्मृतः।।१२।।

इसलिये नित्य वामाचार का ही अनुसरण करना चाहिये। वामाचार परमगति (दायक) है। मैंने वामाचार को ही त्रिकूटा का परम तत्व माना है ॥१२॥

कुलं च दक्षिणं चैव साधकैः सिद्धिवांछिकैः।
त्याज्यं दूरात्कलौ देवि वाममेव भजेत्कलौ ।।१३।।

हे देवि ! कलियुग में कुलाचार और दक्षिणाचार का सिद्धि की कामना करने वाले साधकों द्वारा दूर से ही त्याग करना चाहिये। कलियुग में केवल वामाचार का ही अनुसरण करना चाहिये ।।१३।।

कुलाचार वर्णन

वक्ष्यामि दक्षिणाचारं कुलाचारं च पार्वती।
कुलाचारं परं पुण्यं सेव्यं योगिभिरुत्तमैः ।।१४।।

हे पार्वती ! अब मैं तुमसे दक्षिणाचार एवं कुलाचार के विषय में कहता हूँ। इसमें कुलाचार अत्यन्त पुण्यदायक तथा उत्तम योगियों (साधकों) द्वारा सेवन (आचरण) के योग्य है ।।१४।।

कुलस्त्रियं कुलगुरुं कुलदेवीं महेश्वरीम्।
नित्यं यः पूजयेद्विश्वं कुलाचारः स उच्यते ।।१५।।

कुलस्त्री[1], कुल गुरु, कुल देवी तथा महेश्वरी आदि की जिसमें नित्य पूजा की जाती है, उसे कुलाचार कहते हैं ।।१५।।

कुल स्त्रियं शिवां ज्ञात्वा नत्वा नृत्वा महेश्वरी।
घटादानीय संपूज्य तथाभोगं विधाय च ।।१६।।

हे महेश्वरी ! साधक कुल स्त्री को शिवा (देवी) का स्वरूप जानकर नमस्कार करे। हाव-भाव दिखाकर उसे प्रसन्न करे, यत्नपूर्वक उसे लाकर घटादि से पूजन कर भोगादि नैवेद्य अर्पित करे ।।१६।।

रेतसा तर्पयेद्देवीं महात्रिपुरसुन्दरीम्।
कामेश्वरं च विधिना जपं कुर्याद्विशेषतः ।।१७।।

तदनन्तर रेतस् द्वारा देवी महात्रिपुरसुन्दरी तथा कामेश्वर का तर्पण करे और विधिपूर्वक मूल मन्त्र का जप करे ।।१७।।

तत्पूर्वकं चरेद्धोमं कुलकान्ता विभूषयेत्।
नानालंकरणैर्दिव्यैर्रत्नैश्चाभिकरेण च ।।१८।।

उपर्युक्त कार्य पहले करके हवन करे, तत्पश्चात् उस आवाहित कुल स्त्री का तरह-तरह के आभूषणों, दिव्य रत्नों तथा अभिकरणों से श्रृङ्गार करे ।।१८।।

मुक्ताहारैश्च माल्यैश्च भक्ष्यैर्भोज्यैः सलेह्यकैः।
चोष्यैः, पेयैर्महादेवी संतर्प्य कुलयोषिताम् ।।१९।।

हे महादेवि ! उस कुलकामिनी को मोतियों की माला, पुष्पमाला, भक्ष्य, भोज्य,

१. शक्ति साधना में काली कुल एवं श्री कुल—दो कुलों का उल्लेख है, इनसे सम्बन्धित स्त्री, वृक्षादि की जानकारी योग्य गुरु से प्राप्त करनी चाहिये।

लेह्य (चाटने योग्य), चोष्य (चूसने योग्य), चर्व्य (चबाने योग्य) या पेय (पीने योग्य) द्वारा संतुष्ट करे ॥१९॥

कुलीनं साधकं चैव तथा कुलगुरुं शिवे ।
प्रत्यक्षं देवतारूपां ध्यात्वा भोगं चरेत्तथा ।
प्रत्यहं वै चरेदेवं कुलाचार इति स्मृतः ।।२०।।

हे शिवे ! कुलीन (कुलाचार से पूर्णाभिषिक्त) साधक और कुल गुरु का तथा प्रत्यक्ष देवता के रूप में शक्ति का ध्यान करके पूजनादि (भोग) करे । प्रतिदिन इस प्रकार का आचरण करने को ही कुलाचार कहा गया है ॥२०॥

दक्षिणाचार वर्णन

प्रभातस्नानसंध्यादि मध्याह्न जपमीश्वरी ।।२१।।
और्णमासनमात्मार्थं भक्ष्यं पायस शर्करा ।
मालारुद्राक्षसंभूता पात्रं पाषाणसंभवम् ।।२२।।

हे महेश्वरि ! प्रातः उठकर स्नान, सन्ध्यावन्दन आदि करना, मध्याह्न (दोपहर) में जप, अपने लिए ऊन का बना आसन, खाद्य पदार्थ के रूप में खीर तथा चीनी का प्रयोग, रुद्राक्ष के दानों की माला, पत्थर के निर्मित पात्र (चषक) ॥२१-२२॥

भोगः स्वकीयकान्ताभिः दक्षिणाचार इत्यहम् ।
चिरेण फलदं सिद्धेर्द्रव्येण मधुना शिवे ।।२३।।

हे शिवे ! अपनी विवाहिता पत्नी का भोग यह सब दक्षिणाचार कहा गया है । इसमें मधु (शहद) का प्रयोग द्रव्य रूप में किया जाता है । यह सिद्धि की दृष्टि से विलम्ब से फल देने वाला है ॥२३॥

गुडद्रव्येण देवेशि सिद्धिहानिकरोमतः ।
इत्याचारः पर श्रीमान्कुलस्त्री गुरुपूजकः ।।२४।।
वामाचारपरोमन्त्री मुक्तिभाग्भवतिध्रुवम् ।
शिवेन कथितं प्रीत्या गोपयेन्नगनंदिनि ।।२५।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये आचारविधिनाम चतुर्थपटलः ॥ ४ ॥

हे देवेशि ! अथवा गुड़द्रव्य (महुआ से बने पेय पदार्थ) का भी उपयोग किया जा सकता है, किन्तु यह सिद्धि हानि करने वाला है । हे गिरिनंदिनी (पार्वती) ! आचारों से युक्त श्रीमान् (श्रीविद्योपासक), कुलस्त्री तथा कुलगुरु का पूजन करता हुआ वामाचार परायण, मन्त्रोपासक निश्चय ही मुक्ति का अधिकारी होता है । शिव द्वारा प्रेमपूर्वक कहे गये इस आचार की गोपनीयता बनाए रखनी चाहिये ॥२४-२५॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का आचारविधिनामक चतुर्थपटल सम्पूर्ण हुआ ॥



पञ्चमपटलः

कामेश्वर मन्त्रोद्धार वर्णन

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि वक्ष्यामि मंत्रोद्धारं महेश्वरीम् ।
कामेश्वरस्य श्रीविद्याशिवरूपस्य पार्वती ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि पार्वति ! मैं अब श्रीविद्या के शिव (भैरव) रूप कामेश्वर तथा महेश्वरी के मन्त्रोद्धार को कहूँगा ।।१।।

आदौ शक्तिमयं विश्वं तथा शिवमयं जगत् ।
शिवशक्तिमयं रुप्यं सम्पूज्य साधकोत्तमैः ।।२।।

आदि (सृष्टि के आरम्भ) में यह सम्पूर्ण विश्व शिव तथा शक्तिमय था । इसलिए उत्तम साधकों को शिव शक्तिमय रूप में आराधना करनी चाहिये ।।२।।

यस्तु संम्पूज्ययेच्छक्तिं शिवन्नैव प्रपूजयेत् ।
स एव पातकी रोगी मान्त्रिको दुर्गतिःपदम् ।।३।।

जो शक्ति की उपासना तो करता है किन्तु शिव की नहीं करता, वह मांत्रिक पापी और रोगी होता है तथा दुर्गति को प्राप्त करता है ।।३।।

जन्मकोटिषु जप्त्वापि मन्त्रमेकं सशक्तिकम् ।
शैवं वा परमेशान न कदापि भवेच्छिवे ।।४।।

करोड़ों जन्मों तक भी अकेले ही शक्ति का या परमेश्वर शिव के मन्त्र का जप करने के पश्चात् भी साधक का कल्याण नहीं होता ।।४।।

तस्मान्मन्त्रं जपेद्देवि शिवशक्त्त्योर्विशेषतः ।
अन्यथा सिद्धिहानिःस्यान्नमामि परमेश्वरी ।।५।।

हे देवि ! इसलिए शिव शक्ति इन दोनों ही के मन्त्रों का जप करे नहीं तो सिद्धि की हानि होती है । मैं परमेश्वरी को नमस्कार करता हूँ ।।५।।

कालिकायाः महाकाल सुमुख्याश्च महेश्वरः ।
कामेश्वरस्त्रिकूटायाः शिव इत्येवमुच्यते ।।६।।

कालिका देवी के महाकाल तथा सुमुखी के महेश्वर एवं त्रिकूटा के कामेश्वर ही शिव (भैरव) बताये गये हैं ।।६।।

तस्मात्कामेश्वरस्याहं मन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते ।
यं जप्त्वा मान्त्रिकः शीघ्रं सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।।७।।

इसलिए मैं तुमसे कामेश्वर का मन्त्रोद्धार कहता हूँ, जिसका जप करके मान्त्रिक शीघ्र ही सब प्रकार की सिद्धियों से युक्त हो जाता है ॥७॥

वाग्भवं मदन शक्ति तारका मा परा सकल विद्ययान्विता।
तारयुक्त विपरीतबीजका षोडशाक्षरविधिः शुभः स्मृताः ।।८।।

प्रकाशः ।। ऐं क्लीं सौः ॐ श्रीं ह्रीं ह स क्ष म ल य ऊं स ह क्ष म ल व र य ऊं य र ल व क्ष म य ऊं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं ।।

वाग्भव (ऐं), मदन (क्लीं), शक्ति (सौः) तारका (ॐ) मा (श्रीं), परा (ह्रीं), सकल विद्या ह स क्ष म ल य ऊँ, स ह क्ष म ल व र ऊँ, य र ल व क्ष म य ऊँ सहित तार (ॐ) से युक्त करके प्रारम्भ के छः बीजों का विपरीत क्रम से (ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं) बीजों के योग से 'ऐं क्लीं, सौः ॐ, श्रीं, ह्रीं, ह्स्क्ष्म्ल्यूँ, स्हक्ष्म्ल्व्र्यूँ यर्ल्वक्ष्म्यूँ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं, सोलह अक्षरों के प्रयोग की यह विधि शुभप्रद बतायी गयी है ॥८॥

।। श्रीदेव्युवाच ।।

भगवन् श्रोतुमिछामि त्रिकूटोद्धारनिर्णयम्।
वक्तुमर्हसि देवेश यद्यस्ति मयि ते कृपा ।।९।।

श्रीदेवी बोलीं–हे भगवन्! मैं इसके त्रिकूटोद्धार का निर्णय सुनना चाहती हूँ। हे देवेश! यदि आपकी मुझ पर कृपा हो तो उसे बताइये ॥९॥

।। श्रीभैरव उवाच ।।

त्रिकूटोद्धारमीशस्य नित्यस्य शृणु भामिनी।
कामेश्वरस्य काम्यं च गोपनीयं प्रयत्नतः ।।१०।।

श्रीभैरव बोले–हे भामिनी! कामेश्वर ईश (शिव/भैरव) के त्रिकूटों को सुनो जो नित्य (शाश्वत) चाहने योग्य तथा प्रयत्नपूर्वक गोपनीय है ॥१०॥

प्रथम कूट

कांतिशरन्निर्जरोर्णं डुलि मोहार्णवैश्यकौ।
मन्त्रान्ते केशबीजं स्यादादिकूटोऽयमीरितः ।।११।।

कांति (ह), शरत् (स), निर्जर अर्ण (क्ष), डुलि (म), मोह अर्ण (ल) तथा वैश्यक (य) एवं मन्त्र के अन्त में केशबीज (ऊँ) के प्रयोग से कामेश्वर का आदि (प्रथम) कूट (ह्स्क्ष्म्ल्यूँ) कहा जाता है ॥११॥

केशारूढोअनिलस्तदनुगिरिसुते वैश्यकारूढमोहं
मोहारूढा च भेकि सुरगणनमितेर्दर्दुरारूढ़ देवः।
देवारूढो शरद्वै शशिरविनयने शक्तिकारूढ़कांतिः
कूटोऽयं हादियुक्तो हरिहरविवुधेशान जप्त शिवस्य ।।१२।।

हे गिरिसुते! हे श्रेष्ठ देवताओं द्वारा नमस्कार की जाने वाली, हे सूर्य और चन्द्रमा

रूपी नेत्रों वाली पार्वती ! केश (ऊँ) पर आरूढ़ अनिल (य), वैश्यक (य) पर आरू
मोह (ल), मोह पर आरूढ़ भेकि (म), दर्दुर भेकि (म) पर आरूढ़ देव (क्ष), देवारू
शरत् (स), इस शक्ति (स) पर आरूढ़ कान्ति (ह) से विष्णु-शिव तथा इन्द्र द्वारा ज
गया शिव (कामेश्वर भैरव) का आदि प्रथम कूट ह् स् क्ष् म् ल् य् ऊँ बनता है ॥१२॥

द्वितीय कूट

शक्तिः कान्तिः सुरो भेकी ध्वांतजीमूतवह्नयः ।
वायुकेशो द्वितीयोऽयं कूटराजो नवाक्षरः ।।१३।।

शक्ति (स), कांति (ह), सुर (क्ष), भेकी (म), ध्वांत (ल), जीमूत (व), वह्नि (र
वायु (य) तथा केश (ऊँ) के योग से नौ अक्षरों वाला कूटों में श्रेष्ठ द्वितीय कूट स् ह्
म् ल् व् र् य् ऊँ बनता है ॥१३॥

केशारूढोऽत्र वायुस्तदधिगतमहो वह्निरेतन्निविष्टो
जीमूतस्तङ्गतंस्यात्तिमिरमुपरितस्तस्य मंडूकबीजम् ।
भेक्यारूढोऽत्र देवस्तदुपरि सुषमा चैवकांत्यधिरूढा शक्तिः
कूटोयमन्यसकलसुरैरसुरकुलैर्जप्यमान शिवस्य ।।१४ ।।

केश (ऊँ) पर आरूढ़ वायु (य), उसके अधिगत पीछे वह्नि (र), उसमें निवि
समाहित जीमूत (व), उसके अधीन तिमिर (ल), उसके पीछे मण्डूक बीज (म), भे
(म), पर आरूढ़ देव (क्ष), उसके पीछे सुषमा (ह) तथा इस कान्ति (ह) के पहले श
(स) के योग से यह सभी देवता एवं असुरों द्वारा जपा जाने वाला, स् ह् क्ष् म् ल् व्
य ऊँ नव अक्षरों वाला शिव का दूसरा कूट बनता है ॥१४॥

तृतीय कूट

वायुवह्निस्तमःअर्ण देवभेकमीवायवः ।
सकचानित्यदेवस्य कूटोऽयं स्यात्तृतीयकः ।।१५।।

वायु (य) वह्नि (र) तमोवर्ण (ल), अर्ण (व), देव (क्ष), भेक (म), वायु (य
कच (ऊँ) से युक्त देव का नित्य शाश्वत् तृतीय कूट (य् र् ल् व् क्ष् म् य् ऊँ) बन
है ॥१५॥

केशारूढोस्ति वायुस्तदनुद्रिरिसुते वीस्फारूढभेकी,
भेक्यारूढोपि देवस्य तदुपरिघनकं तस्थितं ध्वांतबीजम् ।
मोहारुढोऽथ वह्निस्तदुपरि गिरिजे वायुराद्येश्वरस्य,
कूटोऽयं स्यात्तृतीयस्त्रिभुवनजननस्थैत्य संहारकारः ।।१६।।

हे गिरिसुते ! हे गिरिजे ! हे आद्या ! केश (ऊँ) पर आरूढ़ वायु (य), उस वीस्
(य) पर आरूढ़ भेकी (म), भेकी के पीछे देव (क्ष), घनक (व) तथा उसके पीछे ध्वा
बीज (ल), मोह (ल) के पीछे वह्नि (र), उसके ऊपर वायु (य) यह (य् र् ल् व् क्ष्

यू ऊँ) तीनों लोकों की जनन (उत्पत्ति) स्थैत्य (पालन) तथा संहारकारक तीसरा कूट है ॥१६॥

प्रकाशः ह स क्ष म ल य ऊँ स ह क्ष म ल व र य ऊँ य र ल व क्ष म य ऊँ ।।१८।।

चतुर्विंशाक्षरीविद्या त्रिकूटा कामदा परा ।
कामेश्वरस्य देवेशि गोपनीया प्रयत्नतः ।।१७।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये कामेश्वरमन्त्रोद्धारविधिनाम पंचमपटलः ॥ ५ ॥

हे देवेशि ! कामेश्वर की यह चौबीस अक्षरों वाली (ह स क्ष म ल य ऊँ स ह क्ष म ल व र य ऊँ य र ल व क्ष म य ऊँ) श्रेष्ठ त्रिकूटा विद्या सभी कामनाओं को पूरा करने वाली तथा यत्नपूर्वक गोपनीय है ॥१७॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का कामेश्वरमन्त्रोद्धारविधिनामक
पाँचवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥५॥



षष्ठपटलः

पूजाविधि वर्णन

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि वक्ष्यामि पूजापटलमीश्वरी ।
श्रीदेव्या षोडशाक्षर्या पूजां मानसीकीं चरेत् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवी ! हे ईश्वरी ! अब मैं तुमसे श्रीदेवी षोडशाक्षरी की मानसी पूजा के आचरण हेतु पूजा पटल कहूँगा ।।१।।

सूतके मृतके वापि, पथि, कान्तारमण्डले ।
म्लेच्छभूमौ च कारायां सङ्कटे रणमण्डले ।।२।।
मनसैव चरेत्पूजां त्रिकूटायाः महेश्वरी ।
शृणुत्वं भक्तिभावेन यथावद्वर्णयते मया ।।३।।

हे महेश्वरी ! सूतक (जन्म सम्बन्धी अशौच) में या मृतक (मृत्यु सम्बन्धी अशौच) यात्रा के समय रास्ते में, जङ्गल में, म्लेच्छ भूमि में, कारागार में, सङ्कट में, युद्ध-भूमि त्रिकूटा (षोडशी विद्या) की मानसी पूजा ही करनी चाहिये । इस विषय में जैसा मेरे द्वा वर्णन किया जा रहा है, उसे भक्तिभाव से सुनो ।।२-३।।

उत्थाय शयनाद्देवि ब्राह्मे दिव्ये मुहूर्तके ।
प्रक्षाल्य मुखहस्तांघ्री आचम्य त्रिर्महेश्वरी ।।४।।

हे महेश्वरी ! सर्वप्रथम दिव्य ब्रह्म मुहूर्त में शयन से उठकर हाथ, मुँह एवं पैरों क धोने के बाद तीन आचमन करे ।।४।।

प्राणायामत्रयं कृत्वा गुरुं ध्यात्वा सशक्तिकम् ।
देवीं कामेश्वरां कोपविष्टां कामेश्वरीं स्मरेत् ।।५।।

तब तीन बार प्राणायाम करके, शक्ति (पत्नी) के सहित गुरु का ध्यान करे तत्पश्चात् कामेश्वर की गोद में बैठी हुई देवी कामेश्वरी का स्मरण करे ।।५।।

ध्यात्वा पूर्वार्ण षट्दीर्घन्यासं कृत्वा यथाविधि ।
जपेन्मूलं च गायत्रीं गुरवे तं निवेदयेत् ।।६।।

इस प्रकार ध्यान करने के पश्चात् पहले के छः दीर्घ वर्णों (ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः) से न्यास कर के मूल मन्त्र का तथा गायत्री का यथाविधि जप करके उस जप को गुरु को निवेदित करे ।।६।।

आगत्य बहिरोंकारं जपेन्नारण्यभूमिषु ।
तत्र मूत्रादिसंत्यज्य वर्णोक्तं शौचमाचरेत् ।।७।।

तब शयनागार से बाहर आकर जंगली जमीन को छोड़ (समतल स्थान में जाकर) ॐ कार का जप करे फिर वहीं मूत्रादि (मल-मूत्र) का त्याग करके वर्णानुकूल शौचादि का आचरण करे ।।७।।

रमाबीजेन संशोध्य दन्तान्साधकसत्तमः ।
मायाबीजेन गंडूषत्रयं कुर्यान्महेश्वरी ।।८।।

हे महेश्वरी ! श्रेष्ठ साधक पहले रमा बीज (श्रीं) से दाँतों का शोधन (सफाई) करे तब माया बीज (ह्रीं) से तीन बार गण्डूष (कुल्ला) करे ।।८।।

मूलेन देवी तीर्थानि इत्यावाह्य स्वसिद्धये ।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि, जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ।।९।।
इत्यावाह्य महादेवि देवीमावाहयेत्ततः ।
मूलेन तु त्रिरुन्मज्य नद्यंभसि महेश्वरी ।।१०।।

हे देवी ! प्रारम्भ में साधक अपनी सिद्धि के लिए मूल मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे। तीर्थावाहन हेतु "**गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।**" इस मन्त्र का प्रयोग कर पहले तीर्थों का आवाहन करे। तदनन्तर हे महादेवी ! देवी का आह्वान करे, फिर हे महेश्वरी ! मूल मन्त्र से नदी के जल में तीन बार स्नान करे ।।९-१० ।।

ततो मूलं जपेन्मंत्री गायत्रीं च विशेषतः ।
सूर्यार्घ्यत्रयं दद्याद्देवि देव्या तथैव च ।।११।।

देवि ! तब मन्त्री (मन्त्र साधक) मूल मन्त्र, विशेषतः सम्बद्ध देवता के गायत्री मन्त्र का जप करे एवं देवी को तथा सूर्य को तीन-तीन अर्घ्य प्रदान करे ।।११।।

त्रिपुरादेवि विद्महे आदिकूटसमन्वितम् ।।१२।।
कामेश्वरि च धीमहि द्वितीयकूटभूषिते ।
तृतीयकूटपूर्वं तु तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ।।१३।।

आदिकूट सहित त्रिपुरा देवि विद्महे द्वितीय कूट से भूषित कामेश्वरि धीमहि तृतीय कूट के साथ तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् से **कएईल ह्रीं त्रिपुरा देवि विद्महे हसकहलह्रीं कामेश्वरि धीमहि सकलह्रीं तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्** यह त्रिपुरा गायत्री बनती है ।।१२-१३।।

जलादागत्य वासांसि परिधायाऽय साधकः ।
सन्ध्या स्वमनसा कृत्वा चाघमर्षणपूर्विकाम् ।।१४।।

तब साधक जल से बाहर आकर, स्वच्छ वस्त्रों को धारण कर, अघमर्षण पूर्वक अपने मन से सन्ध्या करे ।।१४।।

सन्ध्या निवृत्य देवेशि यागगेहं ततो व्रजेत् ।
ततः द्वारार्चनं कृत्वा कुर्यादासनशोधनम् ।।१५।।

हे देवेशि ! तब सन्ध्या से निवृत्त हो वह याग-गृह (पूजा घर) या यज्ञ मण्डप में प्रवेश करे तथा पहले द्वार देश में अपेक्षित पूजन कर्म सम्पन्न कर आसन शुद्धि करे ।।१५।।

भूतशुद्धिं ततः कृत्वा प्राणार्पणविधिं ततः ।
षोडशन्यासभागेन देहं देवमयं चरेत् ।।१६।।
मनसा वर्णभागोक्तं श्रीचक्रं तत्र भावयेत् ।

तब भूत शुद्धि करके प्राणार्पण (प्राण प्रतिष्ठा) की विधि सम्पन्न करे तत्पश्चात् षोडशन्यास के माध्यम से अपने शरीर को देवतामय बनाये तब मानसिक वर्णभाग में वर्णित श्रीचक्र की वहाँ भावना करे ।।१६।।

बिन्दुत्रिकोण वसुकोण दशारयुग्म
मन्वस्रनागदलसंयुतषोडशारम् ।
वृतत्रयं च धरणीसदनत्रयं च
श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ।।१७।।

श्री यन्त्र रचना बिन्दु, त्रिकोण, अष्ट कोण समूह, दशार के क्रमशः दो समूह मन्त्रस्र चतुर्दशार नाग (अष्ट) दल कमल से युक्त १६ दलों वाला कमल, वृत्तत्रय तीन वृत्त, धरणीसदनत्रय (तीनपुर), यह परदेवता का श्रीचक्र कहा गया है ।।१७-१८।।

विभाव्य तत्र श्रीचक्रं हृदये साधकोत्तमः ।
योगपीठं ततोऽभ्यर्च्य हं यं रं लं वं इति ।
विन्दौ कामेश्वरांकोपविष्टां कामेश्वरीं स्मरेत् ।।१९।।

तब उत्तम साधक उस समय श्रीचक्र की हृदय में भावना करता हुआ योगपीठ में हं यं रं लं वं इन मन्त्रों से मानस पूजन करे तथा कामेश्वर के अंक में आविष्ट कामेश्वरी देवी का स्मरण करे ।।१९।।

पात्राणि स्थापयेत्तत्र त्रिकोणे जलनिर्मिते ।
चतुरस्रं च मंडलं कृत्वा गन्धपुष्पयुतैर्जलैः ।।२०।।

उस समय जल में निर्मित त्रिकोण में चतुरस्र (चौकोर) तथा मण्डल बनाकर उस पर पात्रों की स्थापना करे तथा गन्ध पुष्पादियुक्त जल से उनका पूजन करे ।।२०।।

सामान्यार्घ्यं त्रिकूटायाः मंडले पूजयेच्छिवे ।
चन्द्रः कामः शरद्बीजैस्त्रिकोणं पूजयेच्छिवे ।।२१।।

हे शिवे ! मण्डल एवं त्रिकोण में चन्द्र (ऐं) काम (क्लीं) शरत् (सौः) बीजों से त्रिकूटा के सामान्य अर्घ्य की स्थापना कर पूजन करे ।।२१।।

अस्त्राय फडितीत्येवं संस्थाप्यात्र त्रिपादिका ।
तत्रास्त्रक्षालितं शखं समभ्यर्च्य तथा सुधीः ।।२२।।

तब बुद्धिमान साधक अस्त्राय फट् इस मन्त्र से त्रिपादिका की स्थापना कर अस्त्राय फट् से शुद्ध किये शङ्ख की पूजा करे ।।२२।।

तत्रार्कमंडलं देवि सोमबह्नत्रोश्च मंडलम् ।
सम्पूज्य मूलमन्त्रेण कलांस्तेषां प्रपूज्यते ।।२३।।

हे देवि ! वहाँ अर्क (सूर्य), सोम (चन्द्र) तथा वह्नि (अग्नि) मण्डलों की मूलमन्त्र से पूजा करके उनकी कलाओं की भी पूजा करे ।।२३।।

मूलाष्टमन्त्रितं देवि धारया तीर्थवारि च ।
तेनापूर्य शिवे शंखं शंखमुद्रां निवेद्य च ।
तीर्थमावाह्य देवेशि शुद्धिस्तत्रैव भावयेत् ।।२४।।

हे देवि ! हे शिवे ! आठ मूल मन्त्रों से तीर्थ की धारा या जलधारा से उस शङ्ख को भरकर, शङ्खमुद्रा[१] से निवेदित करे । हे देवेशि ! हे शिवे ! उपर्युक्त रीति से तीर्थ का आवाहन कर वहीं शुद्धि की भावना भी करे ।।२४।।

सामान्यार्घ्यस्य वामे तु कलशं क्षोभितं शिवे ।।२५।।
त्र्यस्त्रं षडस्त्रकं चैव वृत्तं तुर्यास्त्रमंडलम् ।
पुष्पाक्षतैः समभ्यर्च्य तत्र कूटत्रयेण च ।।२६।।

हे शिवे ! सामान्यार्घ्य के वामभाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्त्र बनाकर उस पर कलश को स्थापित करे। तब पुष्प, अक्षत आदि से तीनों कूटों से पूजन करे ।।२५-२६।।

षडंगन्यासमार्गेण समभ्यर्च्य षडस्त्रकम् ।
चतुरस्त्रं तथाभ्यर्च्य संस्थाप्यात्र त्रिपादिका ।।२७।।

षडंगन्यास क्रम से षट्कोण का तथा चतुरस्त्र का पूजन करके उस पर त्रिपादिका की स्थापना करे ।।२७।।

कला सूर्येंदुवह्नीनां समभ्यर्च्य यथाविधिः ।
कलशेऽस्मिन्महादेवि देवि सम्पूजयेत्सुराम् ।
आनन्दभैरवं चैव देवीकूटत्रयेण तु ।।२८।।

हे देवि ! तब विधिपूर्वक सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि की कलाओं का पूजन कर उस कलश में सुरा देवी तथा आनन्द भैरव का देवी के तीनों कूटों से पूजन करे ।।२८।।

मायारमाकामबीजैः धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् ।।२९।।
मत्स्यमुद्रादिनाछाद्य सामान्यार्घ्यस्य दक्षिणे ।
कलशार्हं मंडलं च विधायान्यं महेश्वरि ।।३०।।

---

१ शंख मुद्रा—मुद्रा-विमर्श पृष्ठ ७२/१८८

हे महेश्वरी ! तब माया (ह्रीं), रमा (श्रीं), काम (क्लीं) बीजमन्त्रों से धेनुमुद्रा का प्रदर्शन करे। तत्पश्चात् मत्स्य मुद्रा से आच्छादित कर सामान्य अर्घ्य के दक्षिण भाग में कलश हेतु एक दूसरा मण्डल बनाये ॥२९-३०॥

शक्तिपात्रं समादाय मूलेनाष्टाभिमंत्रितम् ।
तत्रैव प्रोक्षणीपात्रं तथा बटुकपात्रकम् ।। ३१ ।।

तब आठ मूल मन्त्रों से शक्ति पात्र को अभिमन्त्रित करके स्थापित करे। वहीं प्रोक्षणीपात्र तथा बटुकपात्र की स्थापना करे ॥३१॥

गुरुपात्रादिसंस्थाप्य तीर्थशंखादयोप्यधः ।
पंक्त्याकारेण देवेशि पात्राणि स्थापयेत्ततः ।। ३२ ।।

हे देवेशि ! गुरुपात्रादि की स्थापना करके तीर्थ शङ्ख आदि पात्रों की पंक्ति के आकार में स्थापना करे ॥३२॥

पाद्यार्घ्यमधुपर्काचमनीय पात्रपूजनम् ।
विधाय तत्र श्रीदेव्याः षडंगन्यासपूर्वकम् ।। ३३ ।।
मणिपूरे ब्रह्मरन्ध्रे मूलाधारादिके शिवे ।
शिवशक्त्योः सामरस्यं विधाय साधकेश्वरः ।। ३४ ।।

हे शिवे ! साधकों का स्वामी (श्रेष्ठ साधक), पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्क, आचमनीय आदि से षडङ्गन्यास पूर्वक श्री देवी का पूजन करके मणिपूर, ब्रह्मरन्ध्र, मूलाधार आदि में शिव-शक्ति के सामरस्य की भावना करे ॥३३-३४॥

ततः कामकलारूपं त्रिपुराकृतविग्रहम् ।
शिवशक्त्योर्पादुकां च पूजयामि नमस्तदा ।। ३५ ।।

तब **"कामकला एवं त्रिपुराकृत विग्रहं शिवशक्तयोः पादुकां पूजयामि नमः"** से देवी को प्रणाम करे (कामकला रूप त्रिपुरा शरीरधारी शिव शक्ति की पादुका की पूजा करता हूँ। उसे नमस्कार है।) ॥३५॥

सप्तधा देवि संतर्प्य ततः कूटत्रयेण च ।
सर्वज्ञा हृत्स्थ शक्त्याद्याः पूजनीयाश्च तर्पणैः ।। ३६ ।।

तब सात बार देवी का तीनों कूटों से तर्पण करे; क्योंकि सब कुछ जानने वाली सबके हृदय में स्थित आद्याशक्ति की तर्पण से पूजा करनी चाहिये ॥३६॥

संतर्पयेत्तद्गुरुं तत्र दिव्यौघादीन् महेश्वरी ।
महाशक्तियुता पूज्यास्तीर्थस्नाता महेश्वरि ।
तत्त्वत्रयेण चाचम्य शिव एव भवत्स्वयम् ।। ३७ ।।

हे महेश्वरी ! तब दिव्यौघादि गुरुओं का वहीं तर्पण करे, महाशक्ति से युक्त तथा तीर्थ जल से नहलाई हुई महेश्वरी ही पूजनीया हैं। (आत्मत्व, विद्यातत्त्व, शिवतत्त्व) इन तीनों तत्त्वों से आचमन कर साधक स्वयं शिव स्वरूप हो जाता है ॥३७॥

श्रीचक्रे देवदेव्योश्च रूपं ध्यात्वा त्रिवर्णकम् ।।३८।।
स्थापनं संनिधानं च संमुखीकरणं शिवे ।
मुद्राभिः साधकः कृत्वा देवी स्पृष्ट्वा मुद्रया ।।३९।।

हे शिवे ! श्रीचक्र में वर्णित देवी देवताओं के त्रिवर्णात्मक रूप का ध्यान करके स्थापन, संनिधान तथा सम्मुखीकरण की मुद्राओं[१] से साधक देवी की स्थापना, संनिधान एवं सम्मुखीकरण का कार्य सम्पन्न करे तथा स्पर्श मुद्रा से उनका स्पर्श करे ॥३८-३९॥

देव्यै देवाय मूलेन प्राणं दत्वा महेश्वरी ।
शिवशक्त्योः पररूपं ध्यात्वा पूजां समाचरेत् ।।४०।।

हे महेश्वरी ! उन देवी देवताओं के मूलमन्त्र से प्राणदान (प्राण-प्रतिष्ठा) करे फिर शिवशक्ति के परमरूप का ध्यान करता हुआ पूजन सम्पन्न करे ॥४०॥

तत्रादौदेवदेव्योश्च पाद्यार्घ्यादि निवेदयेत् ।
मधुपर्कं निवेद्यापि निवेद्याचमनीयकम् ।।४१।।
नानालंकारवस्त्राणि निवेद्य साधकोत्तमः ।
नैवेद्याचमनीयाद्यैर्शिवशक्त्यैर्निवेदयेत् ।।४२।।

तब श्रेष्ठ साधक प्रारम्भ में देव-देवियों को पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्क और आचमनीय निवेदित करे तथा अनेक वस्त्राभूषणों को निवेदित कर नैवेद्य एवं आचमनीय आदि शिव शक्ति को अर्पित करे ॥४१-४२॥

धूपदीपादि संभाव्य परमान्नं निवेदयेत् ।
तांबूलं च मुखे दत्वा बटुच्छक्त्याद्याश्च तर्पयेत् ।
पुष्पांजलिं तु श्रीचक्रे दत्वा पूजां समाचरेत् ।।४३।।

हे महेश्वरि ! धूप-दीप की व्यवस्था कर परमान्न (संभवतः शुद्धि खण्ड) निवेदित कर मुख में ताम्बूल देकर बटुक, शक्ति आदि का तर्पण करे तथा श्रीचक्र पर पुष्पाञ्जलि देकर पूजा सम्पन्न करे ।॥४३॥

नित्या-पूजन

आदौ कामेश्वरीं नित्यां पूजयेद्भगमालिनी ।।४४।।
नित्यक्लिन्नां च सम्पूज्य भेरुंडा च महेश्वरी ।
श्रीवह्निवासिनी नित्या महाविद्येश्वरी ततः ।।४५।।

हे महेश्वरि ! सर्वप्रथम कामेश्वरी, भगमालिनी, नित्याओं की क्रमशः पूजा करे। तब नित्यक्लिना, भेरुण्डा, वह्निवासिनी, महाविद्येश्वरी (वज्रेश्वरी) का पूजन करे ॥४४-४५॥

शिवदूतिं महेशानि त्वरितां पूजयेत्ततः ।
श्रीकुलसुन्दरीं नित्यां नित्यानित्यां ततः पराम् ।।४६।।

---

१ मुद्राविमर्श से-पृष्ठ १०।१८ का।

हे महेशानि ! तदनन्तर शिवदूती एवं त्वरिता नित्याओं की पूजा करे तत्पश्चात् कुलसुन्दरी एवं श्रेष्ठ नित्यानित्या की पूजा करे ॥४६॥

ततो नीलपताकां च विजयां च महेश्वरी ।
श्रीसर्वमंगलानित्या ज्वालामालिनितत्पराम् ।।४७।।

हे महेश्वरि ! तब नीलपताका और विजया तथा सर्वमङ्गला नित्या का पूजन कर ज्वालामालिनीनित्या का पूजन करे ॥४७॥

चित्रानित्या महेशानि त्रिकूटां पूजयेत्स्वयम् ।
पुनः पुष्पांजलिं दत्वा श्रीविद्या पृष्ठभागके ।।४८।।

हे महेशानि ! तत्पश्चात् चित्रा एवं त्रिकूटा (महानित्या महात्रिपुरसुन्दरी) नित्या का पूजन करे और श्रीविद्या के पृष्ठभाग में पुष्पाञ्जलि प्रदान करे ॥४८॥

त्रिपुरा-पूजन

गुरुपंक्तित्रयं पूज्य तर्पणीया पृथक् पृथक् ।
गुरु पूजा विधायाथ त्रिपुरां पूजयेत्तत· ।।४९।।

तीनों गुरु पंक्तियों (सिद्ध, दिव्य, मानवौघ पंक्तियों का अलग-अलग तर्पण करके गुरुपूजा सम्पन्न कर त्रिपुरा देवी का पूजन करे ॥४९॥

त्रिपुरां पूजयाम्यद्य तर्पयामि नमस्त्विति ।
तत्रादौ पूजयेन्मंत्री ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरी ।।५०।।
त्रिपुरसुन्दरी चेति ततस्त्रिपुरवासिनी ।
त्रिपुराश्रीं पूजयेन्मंत्री ऐं क्लीं सौः त्रिपुरमालिनीं ।।५१।।

"अद्य त्रिपुरां पूजयामि तर्पयामि नमः" बोलकर प्रारम्भ में मंत्री त्रिपुरेश्वरी, त्रिपुरसुन्दरी त्रिपुरवासिनी, त्रिपुराश्री तथा त्रिपुरमालिनी का पूजन करे । (इन सबके पूर्व में ऐं क्लीं सौः इन बीजाक्षरों का प्रयोग करे ।) ॥५०-५१॥

ह्रीं श्री सौस्त्रिपुरसिद्धां पूजयेत् त्रिपुराम्बिका ।
पूजयेन्मात्रिकामंत्रैर्महात्रिपुरभैरवीम् ।।५२।।

तब ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरसिद्धा का पूजन करे फिर त्रिपुराम्बिका का पूजन कर मातृका मन्त्रों से महात्रिपुरभैरवी का पूजन करे ॥५२॥

इति श्रीचतुरस्रादिव्ये विद्वान्तेषु पूजयेत् ।
नव चक्रेषुदेवेशि नवचक्रेश्वरीं पुनः ।।५३।।

हे देवेशि ! इस प्रकार चतुरस्र में पूजन कर फिर विद्वान् (श्रीविद्या को जानने वाला) नौ चक्रों में नौ चक्रेश्वरियों का पूजन करे ॥५३॥

पूजनीयाश्च योगिन्यो वामावर्तेन पार्वती ।
अणिमाद्यास्तथा शक्तिः पूजयेत्साधकोत्तमः ।।५४।।

हे पार्वती ! उत्तम साधक को चाहिये कि वह वामावर्त से योगिनियों तथा अणिमादि शक्तियों का पूजन करे ॥५४॥

ब्राह्माद्यामातरः पूज्या रेखासु परमेश्वरी।
सर्वस्तंभिणिमुद्रा नवमुद्राः प्रपूजयेत्।।५५।।

हे परमेश्वरी ! तब ब्राह्मी आदि मातृकाओं की रेखाओं पर एवं सर्वस्तम्भिणी आदि नौ मुद्राओं का पूजन करे ।।५५।।

ततो मूलेन श्रीविद्या संतर्प्य परमेश्वरी।
पुष्पांजलिं च श्रीचक्रे दत्वाष्टाष्टदलेऽर्चयेत्।।५६।।

तब मूल मन्त्र से श्रीविद्या का तर्पण कर श्रीचक्र पर पुष्पाञ्जलि दे, अष्टाष्टक दलों में पूजन करे ।।५६।।

सर्वाशापूरकायाथ श्रीचक्राय महेश्वरी।
दद्यात् पुष्पाञ्जलिं दिव्यां ततः संपूज्ययेच्छिवम्।।५७।।

हे शिवे ! सर्वाशापरिपूरकचक्र पर दिव्य पुष्पाजलि दे तब शिव का पूजन करे ।।५७।।

ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिणी नित्या कला पदां चिताम्।
आं बुध्याकर्षिणी चैव इमहंकाराकर्षिणीम्।।५८।।
ईं शब्दाकर्षिणीं नित्यां उं स्पर्शाकर्षिणीं तथा।
ऊं रूपाकर्षिणीनित्यां ऋं रसाकर्षिणी तथा।।५९।।
ॠं गन्धाकर्षिणीनित्यां ऌं चित्ताकर्षिणीं तथा।
ॡं धैर्याकिर्षिणीं नित्यां एं स्मृत्याकर्षिणीं तथा।।६०।।
ऐं नामाकर्षिणीं नित्यामोंबीजाकर्षिणीं तथा।
औमात्माकर्षिणीं नित्याममृताकर्षिणीं ततः।।६१।।
अःशरीराकर्षिणी षोडशारे प्रपूजयेत्।
मूलदेविं महादेवि तदर्थं मूलेन साधकः।।६२।।

हे महादेवी ! तब साधक ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिणीं नित्यां कला, आं बुध्याकर्षिणी, इं अहंकाराकर्षिणीं, ईं शब्दाकर्षिणीं, उं स्पर्शाकर्षिणी, ऊं रूपाकर्षिणीं, ऋं रसाकर्षिणीं, ॠं गन्धाकर्षिणीं, ऌं चित्ताकर्षिणीं, ॡं धैर्याकर्षिणीं, एं स्मृत्याकर्षिणीं, ऐं नामाकर्षिणीं, ओं बीजाकर्षिणीं, औं आत्माकर्षिणी, अं अमृताकर्षिणीं, अः शरीराकर्षिणीं नित्याकला शल्दों का प्रयोग करके षोडशदलों में कलाओं का पूजन करे तथा इनके अर्थ के मूल में महादेवी का ही पूजन मानकर पूजन करे ।।५८-६२।।

सर्वसंक्षोभणे चक्रे दत्वा पुष्पांजलिं पुनः।
अनङ्गकुसुमां देवेशि ततो अनङ्गमेखला।।६३।।
अनङ्गमदनांदेवीम् अनङ्गमदनातुराम्।
सम्पूज्यानङ्गरेखा च सम्पूज्यानङ्गवेगिनीम्।।६४।।
पूज्यानङ्गांकुशां देवि सम्पूज्यानङ्गमालिनीम्।
सम्पूज्याष्टदले देवि मूलदेवीं च तर्पयेत्।।६५।।

तब पुनः सर्वसंक्षोभण चक्र पर पुष्पाञ्जलि देकर (१) अनंगकुसुमा, (२) अनंग-मेखला, (३) अनङ्गमदना, (४) अनङ्गमदनातुरा, (५) अनङ्गरेखा, (६) अनङ्गवेगिनी, (७) अनङ्गांकुशा, (८) अनङ्गमालिनी—इनका अष्टदलों में पूजन करके मूलदेवी का तर्पण करे ।।६३-६५।।

शिवशक्ति साधकेशः प्रणमेद्योनिमुद्रया ।
इत्येतच्चक्रत्रितये ध्यायेच्चन्द्रस्वरूपकम् ।।६६।।

साधकों में स्वामीवत् साधक शिवशक्ति को योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करके तृतीय चक्र में चन्द्रस्वरूप में ध्यान करे ।।६६।।

सर्वसौभाग्यदायात्र श्रीचक्राय महेश्वरी ।
दत्वा पुष्पांजलिं मंत्री पूजयेत्साधकोत्तमः ।।६७।।

तब वहाँ सर्वसौभाग्य दायक श्रीचक्र के निमित्त उत्तम मन्त्री (मन्त्र साधक) महेश्वरी को पुष्पाञ्जलि अर्पित करे ।।६७।।

सर्वसंक्षोभिणीशक्तिः सर्वविद्राविणीं ततः ।
श्रीसर्वाकर्षिणीशक्तिः सर्वाह्लादनकारिणी ।।६८।।
सर्वसंमोहिनीशक्तिः सर्वस्तम्भनकारिणी ।
श्रीसर्वजृंभणिशक्तिस्ततः सर्ववशंकरी ।।६९ ।।
श्रीसर्वरंजिनीशक्तिः सर्वोन्मादनकारिणी ।
सर्वार्थसाधिनीशक्तिः सर्वसंपत्प्रपूरिणी ।।७० ।।
सर्वमंत्रमयिशक्तिः सर्वद्वंद्वक्षयंकरी ।
सम्पूज्या साधकैरेता वामावर्तेन पार्वती ।।७१।।

हे पार्वती ! साधक द्वारा ये सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वाह्लादनकारिणी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भनकारिणी, सर्वजृंभणि, सर्ववशंकरी, सर्वरंजिनी, सर्वोन्मादनकारिणी, सर्वार्यसाधिनी, सर्वसम्पत् प्रपूरिणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वंद्वक्षयंकरी नामों वाली शक्तियाँ वामावर्त क्रम में पूजी जानी चाहिये ।।६८-७१।।

कामेश्वरीं च संतर्प्य प्रणमेद्योनिमुद्रया ।
सर्वार्थसाधकायाथ चक्राय साधकोत्तमः ।।७२।।

तब श्रेष्ठ साधक सर्वार्थ साधक चक्र के लिये कामेश्वरी देवी का तर्पण कर उन्हें योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे ।।७२।।

पुष्पांजलिं ततो दद्यात्पूजयेत्सिद्धिदेवताः ।
सर्वसिद्धिप्रदादेवी सर्वसम्पत्प्रदा ततः ।।७३।।
सर्वप्रियंकरीदेवी सर्वमंगलकारिणी ।
सर्वकामप्रदादेवी सर्वदुःखविमोचिनी ।।७४।।

सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्ननिवारिणी ।
सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी सर्वसौभाग्यदायिनी ।।७५।।
गन्धाक्षतैः समभ्यर्च्य तर्पयेन्मूलदेवतां ।
कामेश्वराम्देवेशि प्रणमेद्योनिमुद्रया ।।७६।।

हे देवेशि ! तब पुष्पाञ्जलि देकर सिद्धि देवता-सर्वसिद्धप्रदा देवी का उसके बाद सर्वसम्पत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमङ्गलकारिणी, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःखविमोचिनी, सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्वविघ्ननिवारिणी, सर्वाङ्गसुन्दरी, सर्वसौभाग्यदायिनी देवियों की गन्धाक्षतों से पूजाकर, मूल देवता का पूजन कर उन्हें योनि मुद्रा से प्रणाम करे ।।७३-७७।।

सर्वरक्षाकरायापि चक्राय सुरवन्दिते ।
दत्वा पुष्पांजलि देवि पूजयेत्साधकोत्तमः ।।७७।।

हे देवताओं द्वारा वन्दिता देवि ! तब उत्तम साधक सर्वरक्षाकर चक्र पर पुष्पाञ्जलि दे देवी की पूजा करे ।।७७।।

ह्रीं श्रीं श्रीसर्वज्ञादेवि सर्वशक्तिस्ततः परम् ।
सर्वैश्वर्य्यप्रदा देवि सर्वज्ञानमयी ततः ।।७८।।
तत्र संपूजनीया च सर्वव्याधिविनाशिनी ।
सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा ततः ।।७९।।
सर्वानन्दमयी नित्या सर्वरक्षास्वरूपिणी ।
महादेवि महादेवि सर्वेष्सितत्फलप्रदा ।।८०।।

हे देवि ! तब सर्वज्ञा, सर्वशक्ति, सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिविनाशिनी, सर्वाधारस्वरूपा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयी नित्या, सर्वरक्षास्वरूपिणी, सर्वेप्सित फलप्रदा नामवाली महादेवी का नाम से पहले ह्रीं श्रीं लगाकर पूजन करे ।।७८-८०।।

इति गन्धाक्षतैः पूज्य मूलदेवीं च तर्पयेत् ।
संतर्प्य सशिवां देवि प्रणमेद्योनि मुद्राया ।।८१।।

हे देवी ! इनकी तथा मूल देवी त्रिकूटा का गन्धाक्षत से पूजन कर उनका तर्पण करे तथा तर्पण करके शिव के सहित देवी को योनि मुद्रा द्वारा प्रणाम करे ।।८१।।

एवं द्वितीय चक्रं तु सूर्य्य रूपं स्मरेत्सुधि ।
सर्वरोगहरायात्र चक्रायन स्वरूपपिणी ।।८२।।

इस प्रकार सर्वरोगहरचक्र के द्वितीय चक्र पर सूर्यरूप में स्मरण करे ।।८२।।

दत्वा पुष्पांजलि देवीं पूजयेद्देवताष्टकम् ।
वशिनी वाग्देवतामादौ ततः कामेश्वरी शिवे ।।८३।।
वाग्देवतां मोदिनीं च विमलामरुणा तथा ।
वाग्देवतां च जयिनीं पूज्य सर्वेश्वरीं ततः ।।८४।।

हे शिवे ! देवी को पुष्पाञ्जलि प्रदान कर अष्ट देवताओं पूजन करे। इस क्रम में सर्वप्रथम वाग्देवता वशिनी, तत्पश्चात् कामेश्वरी, वाग्देवता मोदिनी तथा विमला और अरुणा, वाग्देवताजयिनी फिर सर्वेश्वरी की पूजा करे ॥८३-८४॥

कौलिनीं वाग्देवतां च पूज्यैतांस्तर्प्यसाम्भवी।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्मूलदेवीं च तर्पयेत् ।।८५।।

हे ! साम्भवी ! तदनन्तर कौलिनी वाग्देवता का गन्धाक्षत पुष्पादि से पूजन कर मूलदेवी का तर्पण करे ॥८५॥

समाप्तिक्रम वामे वा प्रणमेद्योनि मुद्रया।
वाग्देवताष्टकं पूज्य रक्तपुष्पैर्विशेषतः ।।८६।।

वाग्देवताष्टक की पूजा विशेषत: लाल पुष्पों से वामक्रम में करे तथा योनिमुद्रा से प्रणाम करे ॥८६॥

ओमंतरालचक्राय दत्वा पुष्पाजलिं ततः।
दक्षाधो हस्तकमले देव्याः पश्चिमभागके ।।८७।।

ॐ अन्तराल चक्र के निमित्त देवी के पश्चिम भाग में स्थित उनके दाहिने निचले हाथ में पुष्पाञ्जलि दे ॥८७॥

जृम्भिणी कामबाणादौ वामाधो हस्तभागके।
मोहनाख्यं कामधनु दक्षिणे वश्य पाशकम् ।।८८।।
कामांकुशंस्तभनाद्वंद्व करपद्मचर्तुष्वपि।
पूजयेदायुधान्येवं सर्वसिद्धिकराणि च ।।८९।।

तब उनके वाम निचले हाथ में जृम्भिणीशक्तिसम्पन्न कामवाणादि, मोहननामक धनुष, वशीकरण नामक पाश, कामरूपी अंकुश स्तम्भन से चारो हाथों में सर्वसिद्धिकर आयुधों की पूजा करे ॥८८-८९ ॥

सर्वसिद्धिप्रदायात्र श्रीचक्राय महेश्वरी।
दत्वा पुष्पाजलिं पूजामारभेत्साधकोत्तमः ।।९० ।।

तब उत्तम साधक सर्वसिद्धिप्रद **श्रीचक्राय महेश्वरी** कहकर पुष्पाञ्जलि दे, सर्वसिद्धिप्रद चक्र के निमित्त देवी का पूजन प्रारम्भ करे ॥९०॥

कामेश्वरीं वज्रेश्वरीं पूजयेद्भगमालिनीम्।
कूटत्रयेण देवेशि त्रिकोणे साधकोत्तमः ।।९१।।

तथा वह उत्तम साधक कामेश्वरी, वज्रेश्वरी, भगमालिनी की तीनों कोणों में तीनों कूटों के द्वारा क्रमशः पूजा करे ॥९१॥

इति सम्पूज्य संतर्प्य मूलेन मूलदेवताम्।
सर्वानन्दमयायात्र श्रीचक्राय सुवंदिते ।।९२।।

दत्वा पुष्पांजलिं देवि साधकः सर्वसिद्धये ।
मूलविद्यां समुच्चार्य सप्तवारं महेश्वरि ।।९३।।

हे सुन्दर ढंग से वन्दना की हुई देवि ! हे महेश्वरि ! इस प्रकार से मूल मन्त्र द्वारा मूल देवता का पूजन एवं तर्पण करने के पश्चात् साधक **''सर्वानन्दमयाय श्रीचक्राय''** कहकर सब प्रकार की सिद्धियों के लिए मूलविद्या का सात बार उच्चारण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे ॥९२-९३॥

पूजयेत्साधकोभक्त्याम् महात्रिपुरसुन्दरीम् ।
इति सम्पूज्य संतर्प्य गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।।९४।।
धूपदीपादिभिश्चैव नैवेद्यैश्च महत्तरैः ।
तथा श्रीबटुकायापि दद्याद्बलिमनुत्तमम् ।।९५।।

साधक भक्तिपूर्वक महात्रिपुरसुन्दरी का पूजन करे। इस प्रकार गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा महानैवेद्य आदि से पूजन कर श्री बटुकभैरव को भी श्रेष्ठ बलि प्रदान करे ॥९४-९५॥

योगिनीभ्यो बलिं दद्यात्क्षेत्रपालाय वै ततः ।
विघ्नकृद्भ्यश्च भूतेभ्यो दत्वा बलिमनुत्तमम् ।।९६।।

योगिनियों को बलि प्रदान करके क्षेत्रपाल तथा विघ्नकर्ता प्राणियों को भी श्रेष्ठ बलि प्रदान करे ॥९६॥

दत्वा देव्यै पुनर्देवि नैवेद्याचमनीयकम् ।
ताम्बूलछत्रारार्तिकादीन्निवेदयेत् ? ।।९७।।

उपर्युक्त बलि प्रदान कर पुनः महादेवी को नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, छत्र, आरती आदि निवेदित करे ॥९७॥

संक्षोभणद्रावणकर्म वश्योन्मादमहांकुशाः ।
खेचरी बीजयोन्याख्याः त्रिखण्डासंदर्शयेत् ।।९८।।

संक्षोभण, द्रावण, आकर्षण, वश्य, उन्माद, महांकुश तथा खेचरी, बीज, योनि और त्रिखण्डा आदि मुद्राओं को प्रदर्शित करे ॥९८॥

सौभाग्यबीजन्यासेन स्वदेहं व्यापयेच्छिवे ।
देव्यग्रे जपं कृत्वा पाठं कुर्यात्ततः परम् ।।९९।।

हे शिवे ! तदनन्तर सौभाग्यबीज के न्यास से उसे अपने देह में व्याप्त करे और देवी के आगे जप करके स्तोत्र कवचादि का पाठ करे ॥९९॥

वर्मसहस्रनाम्नास्तोत्रराजस्य पार्वती ।
शिवशक्त्यो महादेवि जपं तत्र समर्पयेत्।।१००।।

हे पार्वती ! उस समय कवच, सहस्रनाम एवं स्तोत्रराज का पाठ करे। हे महादेवि ! अन्त में इस जप और पाठादि को शिव-शक्ति को निवेदित करे ॥१००॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतम् जम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वतप्रसादान्महेश्वरी ।।१०१।।

इस हेतु—"गुह्याति गुह्य गोप्त्रीत्वं गृह्णाणास्मत् कृतं जपं। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादन्महेश्वरी ॥" मन्त्र का प्रयोग करे, जिसका अर्थ होता है—हे महेश्वरि ! हे देवि ! आप गुप्त से गुप्त रहस्य को जानने वाली हैं। अत: आप हमारे द्वारा किये जप को स्वीकार करें तथा आपकी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ॥१०१॥

गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठिका: ।
ध्यात्वा न्यासं चरेद्देवि देवदेव्यै विसर्जयेत् ।।१०२।।

हे देवि ! तब गणेश, ग्रह, नक्षत्र, योगिनी, राशि पीठ आदि के न्यास एवं ध्यानपूर्वक देवी एवं देवता का विसर्जन करे ॥१०२॥

प्रात:प्रभृति सायांतं सायांदिप्रातरं तत: ।
यत्करोमि जगद्योनितदस्तु तव पूजनम् ।
संहारमुद्र्यादेवि देवदेव्यो विजर्सयेत् ।।१०३।।

हे जगद्योनि ! प्रात: से सायं तक तथा सायं से प्रात: तक मैं जो भी कर्म करता हूँ वह तुम्हारा ही पूजन होवे। अर्थ सूचक "प्रात:....................पूजनं।" मंत्र पढ़ते हुए संहार मुद्रा से देवि (त्रिकूटा) एवं देव (कामेश्वर) का विसर्जन करे ॥१०३॥

स्वयं सदा शिवं भूत्वा शिवशक्तिस्वरूपकम् ।
त्रैलोक्यसाधकोदेवि सुखं च विचरेदिति ।।१०४।।

तत्पश्चात् हे शिवे ! हे देवी ! स्वयं शिवशक्ति रूप शिव स्वरूप होकर वह साधक तीनों लोको में विचरण करे ॥१०४॥

पूजापटलमेतद्धि गुह्यं मम रहस्यकम् ।।१०५।।
रक्षस्व विधिवद्देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ।
रहस्यातिरहस्याख्यं रहस्यं चैव तदुत्तमम् ।।१०६।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये नित्यपूजाविधिनाम षष्ठपटल: ॥ ६ ॥

हे देवी ! यह देवी का अत्यन्त गुह्य और रहस्यमय पूजापटल है जो तुम्हें बताया है। इसकी विधिवत् रक्षा करो। यह तुम्हारे द्वारा अपनी योनि की भाँति गोपनीय है। यह रहस्यों से भी रहस्यमय, उत्तम रहस्य है ॥१०५-१०६॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का
नित्यपूजाविधिनामक छठापटल सम्पूर्ण हुआ ॥६॥



सप्तमपटलः

सूर्यग्रहण पूजाविधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुनां कथयाम्यद्य पूजां सामयिकीं शृणु ।
एतच्छ्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ।।१।।

श्री भैरव बोले–अब नित्य पूजा वर्णन के पश्चात् मैं सामयिकी (अवसर विशेष की) पूजा कहता हूँ, उसे सुनो। इसके सुनने मात्र से ही करोड़ों पूजा का फल प्राप्त होता है ।।१।।

श्रीदेव्या षोडशाक्षर्य्यास्त्रिकूटायाः समर्चनम् ।
समं यस्य प्रवक्ष्यामि भक्तिपूर्वं शृणु प्रिये ।।२।।

हे प्रिये ! श्री देवी, षोडशाक्षरी, त्रिकूटा इन तीनों का ही पूजन समान (एक ही) है, जिसे मैं कहूँगा, तुम उसे भक्तिपूर्वक सुनो ।।२।।

बिना समयदीक्षाद्यैर्मन्त्रदीक्षापि निष्फला ।
तस्मात्समयपूजां ते वक्ष्यामि पारलौकिकीम् ।।३।।

बिना समय दीक्षा आदि के मन्त्र दीक्षा भी निष्फल होती है। इसीलिए मैं तुमसे पारलौकिक समय पूजा को कहूँगा ।।३।।

न सिध्यन्ति महादेवी नित्यपूजा जपादयः ।
यज्ञहोमादयो देवि बिना समयपूजया ।।४।।

हे देवि ! हे महादेवि ! समय पूजा के बिना महादेवी की नित्य पूजा, तप, यज्ञ, होम आदि सिद्ध (सफल) नहीं होते ।।४।।

अष्टोत्तरशतप्रख्या समयास्तत्र पार्वति ।
तेषु यः पूजयेद्देवीं महात्रिपुरसुन्दरीम् ।।५।।

हे पार्वती ! एक सौ आठ की संख्या में समय (अवसर) बताये गये हैं। उनमें महात्रिपुरसुन्दरी देवी की भलीभाँति पूजा करनी चाहिये ।।५।।

तेषामपि महादेवि समया संति चोत्तमाः ।
सूर्यग्रहणकाले वा चन्द्रगहणवासरः ।।६।।
भूकंपसमयोदेवि नवरात्रिदिनानि च ।
कन्यासंक्रान्तिसमयो देवानामपि दुर्लभः ।।७।।

हे महादेवि ! उन (१०८) में भी सूर्यग्रहण का समय या चन्द्रग्रहण का अवसर, भूकम्प का समय या नवरात्रि के दिन या कन्या संक्रान्ति के अवसर देवताओं को भी दुर्लभ हैं ।।६-७।।

एतेषु समयेष्वेवं यः शिवां पूजयेच्छिवे ।
साक्षाद्भैरवो देवो यो वरदानक्षमशिवः ।।८।।

हे शिवे ! इन समयों में जो शिवा (देवी) की पूजा करता है, वह साक्षात् भैरव देव होकर वरदान देने में सक्षम शिव स्वरूप होता है ॥८॥

सूर्यग्रहण कालिक पूजा

तत्रादौ पूजनं वक्ष्ये सूर्यग्रहणपूर्वकम् ।
यस्मिन्काले भवेद्राहुसूर्ययोश्च समागमः ।।९।।
तदैव साधकः स्नात्वा पूजां सामयिकीं चरेत् ।
गन्धैर्विलिप्य धरणीं भूमौ यन्त्रं लिखेच्छिवे ।।१०।।

उनमें मैं पहले सूर्यग्रहणपूर्वक (सूर्यग्रहण कालिक) पूजा कहता हूँ ।

जिस समय राहु एवं सूर्य का समागम (मिलन) होता है । उसी समय साधक स्नान करके तत्कालीन सामयिकी पूजा को करे। हे शिवे ! उस समय वह गन्ध (चन्दन) से पूजा-भूमि का लेपन कर उस पृथिवी पर यन्त्र लिखे ॥९-१० ॥

सिन्दूरेण महादेवि सर्वाशापरिपूरकम् ।
त्रिकोणबिन्दुसंयुक्तमष्टकोणं महेश्वरि ।।११।।

हे महेश्वरि ! हे महादेवि ! वह पहले सिन्दूर से त्रिकोण-विन्दु से युक्त अष्टकोण के रूप में सर्वाशापरिपूरक चक्र बनावे ॥११॥

वृत्तमष्टदलंदेवि भूग्रहेणोपशोभितम् ।
विभाव्य यन्त्र देवेशि पूजामन्त्रं समाचरेत् ।।१२।।

तब भूपुर से सुशोभित अष्टदल एवं वृत्त बनाकर हे देवेशि ! पूजा मन्त्रों का आचरण करे ॥१२॥

आसनं देवि संशोध्य भूतशुद्धिं विधाय च ।
प्राणान्समर्प्य न्यासैश्च देहं चाऽपि च महेश्वरि ।।१३।।

हे महेश्वरि ! हे देवि ! आसन का संशोधन कर भूतशुद्धि करे। प्राण समर्पण (प्रतिष्ठा) करके यन्त्र एवं देह दोनों में ही न्यास करे ॥१३॥

ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः मन्त्रेण पूजा कुर्याद्विमन्त्रकः ।
सर्वाशापूरकायादौ श्रीचक्राय समष्टिकृत् ।
दत्वा पुष्पांजलिः देवि चतुरस्त्रं समर्चयेत् ।।१४।।

हे देवि ! तब ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः मन्त्र से या बिना मन्त्र के ही सर्वाशापरिपूरकादि चक्रों का सामूहिक रूप से पूजन करे। पुष्पाञ्जलि देकर चतुरस्त्र का पूजन करे ॥१४॥

सूर्यग्रहणपूजायाः ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः ।
पंक्तिछंदः समाख्यातं त्रिकूटा देवतेरिता ।।१५।।

ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।१६।।

सूर्यग्रहण पूजा के ऋषि सदाशिव कहे जाते हैं। पंक्ति छंद तथा त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौ: शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग बताया गया है। "**ॐ सूर्यग्रहणपूजायाः सदाशिवऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः**" कहकर विनियोग करे ॥१५-१६॥

पूर्वसङ्कल्प मूलेन गणेशं धर्मराजकम् ।।१७।।
वरुणं च कुबेरं च पूजयेच्चतुरस्त्रके ।
करालं विकरालं च संहारं रुद्रभैरवं ।।१८।।
महाकालं कालाग्निं सुप्तमुन्मत्तभैरवम् ।
अष्टपत्रेषु देवेशि पूजयेद्गन्धपुष्पकैः ।।१९।'

हे देवेशि ! सङ्कल्पपूर्वक मूलमन्त्र से गणेश, धर्मराज, वरुण एवं कुबेर का चतुरस्त्र में तथा कराल, विकराल, संहार, रुद्र, महाकाल, कालाग्नि, सुप्त और उन्मत नामक आठ भैरवों का अष्ट पत्रों में गन्ध पुष्पादि से पूजन करे ॥१७-१९॥

वशिनीवाग्देवतां च ततः कामेश्वरीं पराम् ।
मोदिनीं वाग्देवतां च विमलम् अरुणां ततः ।।२०।।
जयिनीवाग्देवतां च पूजा सर्वेश्वरीं ततः ।
कौलिनीवाग्देवतां च पूजनीयाष्टकोणके ।।२१।।

तदनन्तर अष्ट कोणों में क्रमशः वशिनी, कामेश्वरी, मोदिनी, विमला, अरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी तथा कौलिनी आदि वाग्देवताओं का पूजन करे ॥२०-२१॥

गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्वामावर्तेन पूजयेत् ।
पीतपुष्पैर्महादेवि पयसामधुनार्चयेत् ।।२२।।
नीलपुष्पैश्च दध्ना च घृतमत्स्यांडपद्मकैः ।
वैन्दवानन्द इति वाक्षेतु श्रीविद्यां परमेश्वरीम् ।।२३।।
त्रिकूटा परमेशानीं महात्रिपुरसुन्दरीम् ।
कामेश्वरं नन्दिरूढं भैरवं भैरवीश्वरम् ।
तत्रोपरि महाविद्यां मूलेन षोडशाक्षरीम् ।।२४।।

हे महादेवि ! गन्धाक्षत पुष्प आदि द्वारा वामावर्तक्रम से उपर्युक्त पूजन करे। तथा नील-पीले पुष्पों, कमल के पुष्पों, दूध, मधु (शहद), दधि, घृत, राब, से बैन्दवचक्र परमेश्वरी श्रीविद्या, त्रिकूटा, परमेश्वरी, परमेशानी महात्रिपुरसुन्दरी एवं नन्दि पर सवार भैरवी के स्वामी कामेश्वर भैरव का पूजन करे। उसके बाद षोडशाक्षरी महाविद्या का मूल मन्त्र से पूजन करे ॥२२-२४॥

ॐ ह्रीं श्रीं रां राहवे फट् स्वाहो मन्त्रेण साधकः ।
बिदौ सम्पूजययेद्राहुं त्रिवारं च सशक्तिकम् ।।२५।।

"**ॐ ह्रीं श्रीं रां राहवे फट् स्वाहा**" मन्त्र से साधक शक्ति के सहित राहु का तीन बार बिन्दु पर पूजन करे ॥२५॥

तत्रैव पूजयेद्देवि श्रीसूर्यं ग्रहनायकम् ।
ह्रीं हंसः श्रीसूर्याय नमः इति त्रिवारतः ।।२६।।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्धूपदीपादितर्पणैः ।
नैवेद्याचमनीयाद्यैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।।२७।।

तब वह ग्रहों के नायक श्री सूर्य देव का "**ह्रीं हंसः श्री सूर्याय नमः**" इस मन्त्र से तीन बार गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, तर्पण, नैवेद्य, आचमनीय और सुगन्धियुक्त पान से पूजन करे ॥२६-२७॥

तत्रोपरि महेशानि दद्यान्मूलेन साधकः ।।२८।।
रौप्यस्य च सुवर्णस्य रक्तिका दशपार्वती ।
पीतवस्त्रं महादेवि ताम्रस्य च तुला दश ।।२९।।
दत्वा यंत्रस्य पुरतो जपं कुर्यान्महेश्वरि ।
अयुतं च तदर्धं वा सहस्रैकं च वा जपेत् ।।३०।।

हे महेशानि तब साधक मूलमन्त्र से चाँदी या सोने के दश रत्ती और ताँबे के दश तुला (मात्रा विशेष) तथा पीतवस्त्र समर्पित करे । तत्पश्चात् हे महेश्वरि ! यन्त्र के सम्मुख जप करे । दश हजार या उसका आधा पाँच हजार या एक हजार जप करे ॥२८-३०॥

जपाद्दशांशतो होमः कार्यः सर्पितिलैर्यवैः ।
तदग्रे कवचं स्तोत्रं नाम्नां सहस्रकस्य च ।।३१।।

जप संख्या के दशांश (मन्त्रों) से घी, तिल एवं यव से होम करके वहीं कवच, स्तोत्र, सहस्रनामादि का पाठ करे ॥३१॥

जपः समर्प्य विधिवत् नत्वा साष्टाङ्गमीश्वरम् ।
विसर्जयेन्महाविद्यां मंन्त्रि संहारमुद्रया ।।३२।।

किये गये जप को विधिवत समर्पित करके, ईश्वर (कामेश्वर) को साष्टाङ्ग नमस्कार कर मन्त्री संहारमुद्रा द्वारा महाविद्या का विसर्जन करे ॥३२॥

पाठं कुर्यात्ततोदैव्यै स शिवायै समर्पयेत् ।
राहवे कुलसूर्याय गुरवे साधकोत्तमः ।।३३।।

इसी प्रकार उत्तम साधक पाठ को भी देवी, शिव, राहु, कुल सूर्य तथा गुरु को समर्पित करे ॥३३॥

यंत्रार्चनं विधायाऽथ ब्राह्मणाय महेश्वरी ।
दक्षिणां परमां दत्वा स्वयंभूयात् सदाशिवः ।।३४।।

हे महेश्वरि ! उपर्युक्त रीति से यन्त्रार्चन कर ब्राह्मण को श्रेष्ठ दक्षिणा प्रदान कर साधक स्वयं सदाशिव हो जाता है ॥३४॥

य एवं पूजयेद्देवि त्रिकूटां षोडशाक्षरीम् ।
ग्रहणे ग्रहराजस्य सूर्यस्यामिततेजसः ।
कोटिवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमश्नुयात् ।।३५।।

हे देवि ! जो इस प्रकार से ग्रहण के समय षोडशाक्षरी त्रिकूटा तथा अमित तेजस्वी सूर्य का पूजन करता हैं वह हजार करोड़ वर्ष पूजा का फल प्राप्त करता है ॥३५॥

इन्द्रोर्विष्णुर्हरोर्वायुगणेशो वरुणो यमः ।
अनया पूजया देवि जाता सर्वे दिगीश्वराम् ।।३६।।

हे देवि ! इसी पूजा से इन्द्र, विष्णु, शिव, वायु, गणेश, वरुण, यम आदि दिगीश्वरत्व किंवा श्रेष्ठत्व को प्राप्त किये हैं ॥३६॥

नित्यपूजासहस्रं तु तथा कोटिजपस्य च ।
अनया पूजया सार्धः फलं प्राप्नोति साधकः ।।३७।।

साधक इस पूजा से एक हजार नित्यार्चन तथा एक करोड़ मन्त्र जप का फल प्राप्त कर लेता है ॥३७॥

सूर्यग्रहणपूजाया श्रीविद्यापटलः स्मृतः ।।३८।।
गोपनीयः प्रयत्नेन साधकेन स्वसिद्धये ।।३९।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये सूर्यग्रहणपूजाविधिनाम सप्तमपटलः ॥ ७ ॥

यह श्रीविद्या का सूर्यग्रहण पूजा रूपी जो पटल बताया गया है, साधक को अपनी सिद्धि हेतु इसे प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखना चाहिये ॥३८-३९॥

श्री रुद्रयामल तन्त्र के त्रिकूटारहस्य का
सूर्यग्रहणपूजाविधिनामक सातवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥७॥



अष्टमपटलः

चन्द्रग्रहण पूजाविधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

शृणुष्वावहिता भूत्वा कथयामि महेश्वरी ।
त्रिकूटायाः परं तत्त्वं पूजा परमनुत्तमम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे महेश्वरि ! सावधान होकर सुनो । मैं तुमसे त्रिकूटा के श्रेष्ठ तत्त्व एवं उत्तम पूजा का वर्णन करता हूँ ।।१।।

चन्द्रोपरागसमये स्नात्वा साधकसत्तमः ।
विलिप्य धरणीं धीमान् लिखेध्वं तं महेश्वरी ।।२।।
त्रिकोणं बिन्दुभूषाढ्यं दशारं पंचकोणकम् ।
वृत्तमष्टदले देवि भूगृहेणोपशोभितम् ।।३।।

हे महेश्वरि ! चन्द्रग्रहण के समय श्रेष्ठ साधक सर्वप्रथम स्नान करे, तदनन्तर धरती को लीप कर वहाँ पर बिन्दु से युक्त त्रिकोण, अष्टदल, वृत्त में बने हुये भूपुर से सुशोभित पञ्चकोण और दशार से युक्त यन्त्र लिखे ।।२-३।।

सिन्दूरेण महादेवि लिखित्वाष्टहरिद्रया ।
कुर्यादासनशुद्ध्यादि भूतशुद्धिः ततः परम् ।
प्राणान्समर्प्य देवेशि न्यासं कुर्यात् यथाविधिः ।।४।।

हे महादेवि ! हे देवेशि ! सिन्दूर या आठ प्रकार की हल्दी से लिखकर विधिपूर्वक आसन शुद्धि आदि करे, तब भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा तथा न्यासादि करना चाहिये ।।४।।

चन्द्रग्रहणपूजायाः ऋषिर्भैरव ईरितः ।
पंक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिताम् ।।५।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मकामार्थमोक्षार्थे विनियोगः समीरितः ।।६।।

चन्द्रग्रहण पूजा के भैरव ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक कहे गये हैं तथा धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष के लिए विनियोग बताया गया है । (**ॐ अस्य चन्द्रग्रहणपूजायाः भैरव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मकामार्थमोक्षार्थे विनियोगः ।**) ।।५-६।।

भैरवर्ष्यादिन्यासेन देहं व्याप्य महेश्वरी ।
मातृकान्यासभेदेन श्रीकंठन्यासकेन च ।।७।।

ध्यात्वा सोमस्थितां देवि सोमकोटिसमप्रभाम् ।
चन्द्रगहणमात्रेण पूजा तत्र समाचरेत् ।।८।।

हे महेश्वरि ! भैरव ऋषि आदि न्यास, मातृका न्यास, श्रीकंठन्यास अपने शरीर में व्याप्त करे फिर सोम (चन्द्रमा) में स्थित करोड़ों चन्द्रमा के समान आभा वाली देवी का ध्यान कर चन्द्रग्रहण अवधि में ही पूजा सम्पन्न करे ।।७-८ ।।

आदौ पात्रस्थापनाऽद्या कृत्वावाह्य महेश्वरीम् ।।९।।
स शिवां मनसा ध्यात्वा राहुं ध्यात्वा सशक्तिकम् ।
आवाह्य सोमं देवेशि स्वागतं चेत्युदीरितम् ।।१०।।
स्थापने सन्मुखे ध्याने कुर्यान्मुद्राः पृथक् पृथक् ।
पाद्यार्घादि निषेद्यादौ पश्चात् पूजां समाचरेत् ।।११।।

हे देवेशि ! प्रारम्भ में पात्र स्थापन आदि करके शिव के सहित महेश्वरी तथा सपत्नीक राहु का एवं चन्द्रमा का आवाहन, आपका स्वागत है ऐसा कहकर करे। इस क्रिया को स्वागत कहा गया है। तत्पश्चात् स्थापन, सन्मुखीकरण, ध्यानादि की अलग-अलग मुद्राओं का प्रदर्शन कर पाद्य, अर्घ, नैवेद्य आदि निवेदन पूर्वक पूजा करे ।।९-११।।

गणेशं नन्दिरुद्रं च पुष्पदंतं किरीटिनम् ।
दाक्षावर्तेन गन्धाद्यैः पूजास्ते चतुरस्त्रके ।।१२।।

चारो कोनों में गणेश, नन्दि, रुद्र एवं मुकुटधारी पुष्पदन्त दक्षिणावर्त क्रम से गन्धादि से पूजे जाने चाहिये ।।१२।।

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा ।
उल्का सिद्धा सङ्कटा पूजनीयाष्टपत्रके ।
वाम।वर्तेन देवेशि, पीतपुष्पैः महेश्वरी ।।१३।।

हे महेश्वरि ! अष्टदल कमल की आठ पंखुड़ियों में बायें क्रम से क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा नामवाली आठ योगिनियों का पीले पुष्पों से पूजन करे ।।१३।।

श्रीमहात्रिपुरादीक्षा दीक्षा त्रिपुरमालिनी ।।१४।।
त्रिपुराविजयादीक्षा दीक्षा त्रिपुरवासिनी ।
पंचकोणे च दीक्षा च पूज्या त्रिपुरसुन्दरी ।।१५।।
पंचारे साधकैः पूज्या इति दीक्षा महेश्वरी ।
वामावर्तेन गन्धाद्यैः धूपदीपप्रसूनकैः ।।१६।।

हे महेश्वरि ! श्री महात्रिपुरा, त्रिपुरमालिनी, त्रिपुरविजया, त्रिपुरवासिनी और त्रिपुरसुन्दरी दीक्षाओं का साधक पञ्चकोण के कोणों में वामावर्त क्रम से गन्ध, धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन करे ।।१४-१६।।

इन्द्रं च धर्मराजं च वरुणं च कुबेरकम्।
ईशमग्निं चपलाशांक्षं वायुं विष्णुं कर्बुरकम्।
दशारेषु सितैः पुष्पैः दक्षावर्तेन पूजयेत्॥१७॥

इन्द्र, धर्मराज, वरुण, कुबेर, ईश (ईशान), अग्नि, वायु, विष्णु, कर्बुरक (निऋति) तथा ब्रह्मा का दशकोण के कोणों में दक्षिणावर्त क्रम से क्रमशः सफेद पुष्पों द्वारा पूजन करे॥१७॥

कामेश्वरीं व्रजेश्वरीं च पूजयेद्भगमालिनीम्।
त्रिकोणे पूजयेन्मन्त्री पीतपुष्पैर्विशेषतः॥१८॥

मन्त्री (मन्त्र साधक) कामेश्वरी, व्रजेश्वरी तथा भगमालिनी देवियों का विशेष कर पीले पुष्पों से त्रिकोण के तीनों कोणों में वामावर्त से पूजन करे॥१८॥

सर्वानंदमये चक्रे वैंदवे पूजयेत्ततः।
स शिवां च त्रिकोणेशीं महात्रिपुरसुन्दरीम्॥१९॥
कामेश्वरीं महारुद्रं कालाग्निं भैरवेश्वरम्।
तत्र पाशांकुशौ चैव, चापबाणैः समर्चयेत्॥२०॥

तब सर्वानन्दमय विन्दु चक्र पर शिवा के सहित त्रिकोणेश्वरी, महात्रिपुरसुन्दरी, कामेश्वरी एवं महारुद्र, कालाग्नि, भैरवेश्वर (कामेश्वर) एवं पाश, अंकुश, धनुष-बाण आदि आयुधों का पूजन करे॥१९-२०॥

तत्रैव राहुं सम्पूज्य मूलेनैव सशक्तिकम्॥२१॥
चन्द्रं सशक्तिकं चैव कलाषोडश वै तथा।
पूजयेद्भगमालां च रात्रिं चैव समर्चयेत्॥२२॥

वहीं मूल मन्त्र से अपनी-अपनी शक्ति (पत्नी) के सहित राहु, चन्द्रमा एवं चन्द्रमा की १६ कलाओं तथा भगमाला एवं रात्रिदेवी का भी पूजन करे॥२१-२२॥

देव्यैनिवेदितां गन्धाक्षतपुष्पसमन्वितम्।
धूपदीपादिनैवेद्यताम्बूलं दक्षिणां ततः॥२३॥
निवेद्य परमेशानि सिद्धैसङ्कल्प पूर्ववत्।
न्यासं कृत्वा जपेन्मूलमयुतार्द्धं महेश्वरी॥२४॥

हे महेश्वरि! हे परमेशानि! देवी को गन्धाक्षतपुष्प युक्त धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल एवं दक्षिणादि प्रदान कर पूजा सिद्धि हेतु सङ्कल्प एवं पहले की भाँति न्यास आदि करके पाँच हजार मूल मन्त्र का जप करे॥२३-२४॥

तदर्धं वा सहस्रं वा कृत्वा होमं दशांशतः।
वर्मनामसहस्रादि स्तवपाठं चरेत्पुनः॥२५॥

सम्भव न हो तो उसका आधा ढाई हजार या एक हजार मन्त्र जप करके, जप के दशांश (मन्त्र) से होम करे तत्पश्चात् कवच, सहस्रनाम, स्तोत्रादि का पाठ करे॥२५॥

दद्याद्यंत्राय देवेशि रौप्यस्वर्णतुलां शिवे।
गुरवे देवदेवीभ्यां जपं मन्त्री समर्पयेत् ।।२६।।

हे शिवे ! हे देवेशि ! तब मन्त्री (मन्त्र साधक) यन्त्र के लिए चाँदी, सोना की तुला (मात्रा) गुरु को प्रदान कर देवता और देवियों को समर्पित करे ॥२६॥

अनया पूजया देवि महात्रिपुरसुन्दरी।
पूजां यजेत्त्रिकूटायाः स साक्षाद्भैरवेश्वरः ।।२७।।

हे देवि ! इस पूजाविधि से महात्रिपुरसुन्दरी त्रिकूटा देवी की पूजा करके वह साधक साक्षात् भैरवेश्वर हो जाता है ॥२७॥

नित्यपूजा विधायात्र कोटिसंख्या महेश्वरी।
यत्फलं तत्फलं सद्यः स लभेत्परमेश्वरी ।।२८।।

हे महेश्वरि ! करोड़ों नित्यपूजा का जो फल होता है उसे हे परमेश्वरि, वह साधक शीघ्र प्राप्त कर लेता है ॥२८॥

पुरश्चर्य्या सहस्रस्य त्वश्वमेधायुतस्य च।
फलं भवतु देवेशि चन्द्रग्रहणपूजया ।।२९।।

हे देवेशि ! इस चन्द्रग्रहण पूजा से हजार पुरश्चर्या तथा दश हजार अश्वमेध यज्ञ का फल होवेगा ॥२९॥

चन्द्रगहणपूजायाः पटलो देवि दुर्लभः।
गोपनीयो विशेषेण नान्यथा सिद्धिहानिदः ।।३०।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये चन्द्रग्रहणपूजाविधिनाम अष्टमपटलः ॥ ८ ॥

हे देवि ! यह चन्द्रग्रहण पूजा सम्बन्धी पटल दुर्लभ तथा विशेष रूप से गोपनीय है अन्यथा सिद्धिहानिकारक है ॥३०॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का
चन्द्रग्रहणपूजाविधिनामक आठवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥



नवमपटलः

भूकम्पार्चन विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना कथयाम्यद्य रहस्यं देवि दुर्लभम् ।
त्रिकूटायाः परं तत्त्वं भूकम्पार्चनमुत्तमम् ।।१।।

श्री भैरव बोले–हे देवि ! अब मैं त्रिकूटा का परम तत्त्व, दुर्लभ रहस्य, भूकम्प कालिक पूजा विधि को कहता हूँ ॥१॥

यत्क्षणं कंपते भूमिर्देवासुर भयंकरी ।
सराव दुर्लभः कालं पूजां मनसी पार्वती ।।२।।

हे पार्वती ! जिस क्षण देवता और असुर को भी भयभीत करने वाले भयङ्कर ध्वनि सहित पृथिवी काँपती है, वह ही इस मानसी पूजा हेतु दुर्लभ काल है ॥२॥

उत्थाय शाकशौचं कृत्वा विष्टरशोधनम् ।
विभाव्य तत्र श्रीचक्रं यथा वर्णयते मया ।।३।।

उठने के साथ ही शौचादि सम्पन्न कर, विष्टर (आसन) शोधन आदि करके मेरे द्वारा बताये अनुसार श्रीचक्र की भावना करे ॥३॥

बिन्दुत्रिकोणं रसकोणं वृत्तं तथाष्टपत्रं पुनरेव वृतम् ।
भूमंदिरं सुन्दरमिन्दुवक्त्रे भूकंपचक्रं परदेवतायाः ।।४।।

हे चन्द्रमुखी ! बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल, पुनः वृत्त तथा सुन्दर भूपुर युक्त परदेवता के भूकम्प चक्र की भावना करे ॥४॥

भूकम्पपूजामन्त्रस्य ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः ।
पंक्तिश्छंद समाख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।५।।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।६।।

भूकम्प पूजा मन्त्र के सदाशिव ऋषि बताये गये हैं। पंक्ति छंद, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष में विनियोग कहा गया है। (**ॐ अस्य भूकम्पपूजामन्त्रस्य सदाशिवऋषिः, पंक्तिछन्दः त्रिकूटा देवता, ऐं बीजः सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः ।**) ॥५-६॥

सदा शिवर्षिन्यासेन देहं व्याप्य च साधकः ।
भूतशुद्धिं विधायाथ प्राणार्पणविधिं ततः ।।७।।

षोडसन्यासेन भागेन देहं देवमयं स्मरेत्।
ध्यात्वा देवीं भूमिरूपां शेषरूपां महेश्वरी ।।८।।

हे महेश्वरि ! सदाशिव ऋषि आदि न्यासों को देह में व्याप्त कर भूतशुद्धि करे, तब प्राणार्पण विधि सम्पन्न करे। तत्पश्चात् षोडश (१६) न्यासों के द्वारा अपने शरीर को देवमय स्मरण कर देवी का पृथिवी रूप और शेष रूप में ध्यान करे ॥७-८॥

मनसावाह्य मूलेन सशिवां परमेश्वरीम्।
भूमिशेषं समावाह्य तत्र पूजां समाचरेत् ।।९।।

मानसिक रूप से शिव के सहित परमेश्वरी (त्रिकूटा), भूमिशेष का आवाहन कर उस संमय पूजाविधि का आचरण करे ॥९॥

संकल्प्यसाधकः कुर्यात्प्राणयामं त्रिकं शिवे।
पात्राणि स्थापयेत्तत्र देवीं संतर्प्य नित्यवत् ।।१०।।
योगपीठार्चनं कृत्वा पूजयेत् चतुरस्रके।
गणेशं धर्मराजं च कुबेरवरुणौ ततः ।।११।।
दक्षावर्त्तेन सम्पूज्य चतुर्द्वारिषु सर्वदा।
करालाय फडित्येवं तत्र दिग्बन्धनं चरेत् ।।१२।।

हे शिवे ! साधक पहले सङ्कल्प करे फिर तीन प्राणायाम करके पात्र स्थापन कर नित्य की भाँति देवी का तर्पण करे। तत्पश्चात् योगपीठ का पूजा कर यन्त्र के चतुष्कोण में चारो द्वारों पर दक्षिणावर्त क्रम से गणेश, धर्मराज, कुबेर एवं वरुण का पूजन करे एवं **"करालाय फट्"** इस मन्त्र से दिग्बन्धन करे ॥१०-१२॥

आचम्य कुयद्दिवेशि षडंगं च त्रिकूटकः।
अणिमाद्यष्टसिद्धिं च पूजयेदष्टपत्रके ।।१३।।
वामावर्तेन गन्धाद्यैः सितपुष्पैर्यथाविधिः।
गंगायै नमः इत्येवं तद्बीजैस्त्रिकमाचरेत् ।।१४।।

हे देवेशि ! फिर वह आचमन करके त्रिकूट से षडंग न्यास करके, अणिमा आदि अष्ट सिद्धियों का अष्टदल कमल में पूजन, वामावर्त क्रम में गन्धादि तथा श्वेत पुष्पों से यथाविधि करे तथा गंगायै नमः कहकर उसके तीन बीजों से पूजन करे! ॥१३-१४॥

सर्वरक्षाकरे चक्रे गुरु संतर्प्य साधकः।
त्रिपुरां सशिवां ध्यात्वा भूमिदेव समर्पयेत् ।।१५।।

साधक, सर्वरक्षाकर चक्र पर गुरु का संतर्पण कर शिव के सहित त्रिपुरा का ध्यान करके भूमिदेव को समर्पित करे ॥१५॥

शेषं कूर्मं मत्स्यराजं समुद्रं च हिमाचलम्।
दिग्बीजं परमेशानि पूजयेद्वै षडस्रके ।।१६।।

गङ्गा तथैव जमुना तृतीया च सरस्वती ।
त्रिकोणे पूजयेद्देवि क्षौमवस्त्रैस्तथांबुभिः ।।१७।।

हे परमेशानि ! शेष, कूर्म, मत्स्यराज, समुद्र, हिमालय तथा दिग्बीजों से षट्कोण में एवं गंगा, जमुना और सरस्वती के बीज मन्त्रों से त्रिकोण में रेशमी वस्त्र तथा जल से पूजन करे ॥१६-१७॥

सर्वानन्दमये चक्रे वैंदवे कुल कौलिके ।
श्रीविद्यां कामराजेशिं महात्रिपुरसुन्दरीम् ।।१८।।
तत्र कामेश्वरं देवि महाप्रेतपदं ततः ।
पाशांकुशधनुर्बाणान्पूजयेत् साधकोत्तमः ।
भूमिं सम्पूजयेत्तत्र पूजयेत् कुलपर्वतान् ।।१९।।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्धूपदीपादितर्पणैः ।
नैवेद्याचमनीयाद्यैस्तांम्बूलैश्च सुवासितैः ।।२०।।

तब सर्वानन्दमय कुलकौलिक बैन्दवचक्र में श्रीविद्या, कामराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी तथा कामेश्वर महाप्रेत (भैरव) का पाश, अंकुश, धनुष, बाण आयुधों सहित तथा कुलपर्वतों एवं भूमि का गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य, आचमनीय तर्पण और सुगन्धित ताम्बूलों से पूजन करे ॥१८-२०॥

तद्बिन्दौ स्वर्णरतिका दश दद्यात्प्रसिद्धये ।
गोदानसाधकः कुर्याद्भूमिदानं तथैव हि ।।२१।।

ऐसा करने के बाद उस बिन्दुचक्र में साधक अपनी सिद्धि की सफलता हेतु १० रत्ती सोना दान, गौदान, एवं भूमिदान करे ॥२१॥

यन्त्राग्रे च जपेन्मूलमेकसाहस्त्रकावधिम् ।
जपाद्दशांशतो होमः कार्यं सर्पितिलैर्यवैः ।।२२।।

तब यन्त्र के सम्मुख एक हजार मूल मन्त्रों का जप तथा उसका दशांश एक सौ मन्त्रों से घी, तिल एवं जौ द्वारा हवन करे ॥२२॥

वर्मनामसहस्त्रादि स्तोत्रपाठं चरेततः ।
देवदेव्यो गुरोर्देवि समर्प्य जपमादरात् ।।२३।।

तब कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र आदि का पाठ कर देव, देवी एवं गुरुदेव को जपादि सादर समर्पित करे ॥२३॥

प्रणम्य योनिमुद्राभिर्नत्वा दंडवदीश्वरीम् ।
विसर्जयेद्देवदेव्यौ मन्त्री संहारमुद्रया ।।२४।।
धूपदीपादि तर्पणैर्नैवेद्याचमनीयकैः ।।२५।।

तत्पश्चात् योनि मुद्रा से नमस्कार करते हुए देवी को दण्डवत प्रणाम करे तथा

धूप, दीप, तर्पण, नैवेद्याचमनीय आदि द्वारा संहारमुद्रा से कामेश्वर सहित देवी का विसर्जन करे ॥२४-२५॥

इत्येतत्कथितो देव्याः भूकम्पार्चाप्रकाशकः ।
गोपनीयो महादेवि कोटिपूजा फलप्रदः ।।२६।।

हे महादेवी ! यह भूकम्प पटल पूजा प्रकाशक करोड़ों पूजा (नित्यार्चन) के समान फल देने वाला कहा गया, जो अत्यन्त गोपनीय है ॥२६॥

अश्वमेधसहस्रस्य गोमेधायुतकस्य च ।
सुवर्णचलदानस्य फलं यत् साधकेश्वरी ।।२७।।
तत्फलं त्वरितं मन्त्री भूकम्पार्चनतो लभेत् ।
गोपनीयः प्रयत्नेन पशुभ्यः कुलनायिके ।।२८।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये भूकम्पार्चनविधिनाम नवमपटलः ॥ ९ ॥

एक हजार अश्वमेध, दश हजार गोमेध यज्ञों के करने तथा सोने का पर्वत दान करने का जो फल होता है, उसे मन्त्री (मन्त्र साधक) उपर्युक्त भूकम्पार्चन से शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है। हे कुलनायिके ! इस रहस्य को पशुओं से प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखना चाहिये ॥२७-२८॥

श्री रुद्रयामल तन्त्र के त्रिकूटारहस्य का
भूकम्पार्चनविधिनामक नौवांपटल सम्पूर्ण हुआ ॥९॥



दशमपटलः

चैत्रनवरात्र अर्चन विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना कथयाम्यद्य त्रिकूटासारमुत्तमम् ।
नवरात्रार्चनं देवि गोपनीयं विशेषतः ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! अब आज मैं त्रिकूटा का सारभूत विशेष रूप से गोपनीय नवरात्र पूजन की विधि कहता हूँ ।।१।।

चैत्रे मासि सिते पक्षे दिनानि नव पार्वती ।
त्रिकूटां पूजयेद्देवि सिद्धिहानिस्त्वनन्यथा ।।२।।

हे पार्वती ! चैत्रमास के शुक्ल पक्ष में प्रारम्भ के नौ दिनों में त्रिकूटा का पूजन करना चाहिये अन्यथा सिद्धिहानि होती है ।।२।।

प्रतिपद्दिवसे शुक्ले शुद्धे ब्राह्मे मुहूर्तके ।
उत्थाय शयने मन्त्री स्नात्वा गत्वार्चनस्थलीम् ।
समर्प्य नित्यकर्मादौ लिखेद्यंत्रं महेश्वरी ।।३।।

हे महेश्वरि ! मन्त्री (मन्त्र साधक) शुक्ल पक्ष की प्रतिपद् तिथि को शुद्ध ब्राह्म मुहूर्त में शयन से उठकर स्नानादि करके पूजास्थल पर जावे तथा प्रारम्भ में नित्यकर्म आदि करके यन्त्र लिखे ।।३।।

त्रिकोणं बिन्दुसंयुक्तं षडस्त्रं वस्वस्त्रमंडलम् ।
वसुपत्रं धरागेहं श्रीचक्रं नवरात्रकम् ।।४।।

बिन्दु से युक्त त्रिकोण, षट्कोण, अष्टकोण, अष्टदल कमल तथा भूपुर से युक्त नवरात्र उपासना सम्बन्धी श्रीचक्र बनावे ।।४।।

नवरात्रे त्रिकूटायाः दक्षिणामूर्तिरीरिताः ।
ऋषिः पंक्तिस्तथाछन्दस्त्रिकूटादेवतेरितां ।।५।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतं ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।६।।

नवरात्र (उपासना) में त्रिकूटा के दक्षिणामूर्ति ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक तथा धर्मार्थकाममोक्ष में विनियोग बताया गया है। (**ॐ अस्य नवरात्रत्रिकूटायाः दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, त्रिकूटा देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः ।**) ।।५-६।।

पूर्वं सङ्कल्प देवेशि न्यासं ऋष्यादिकं चरेत् ।।७।।

बृहच्छोढ़ाभिधं न्यासं शृङ्खलान्यासमीश्वरी।
विधाय भूतशुद्ध्यादि यन्त्रपूजां चरेच्छिवे ।।८।।

हे देवेशि ! हे शिवे ! हे ईश्वरि ! पहले सङ्कल्प करके ऋष्यादि न्यास, बृहत्षोढान्यास, शृङ्खलान्यास आदि एवं भूतशुद्धि करने के बाद साधक यन्त्र पूजन आरम्भ करे ।।७-८।।

गणेशं नन्दिनं देवि कुमारं वीरभद्रकम्।
चतुरस्त्रे पीतपुष्पैर्गन्धधूपैः समर्चयेत् ।।९।।

हे देवि ! गणेश, नन्दी, कुमार एवं वीरभद्र की पीले पुष्पों, गन्ध, धूप आदि से चतुरस्त्र (चतुष्कोण) में पूजन करे ।।९।।

ब्रह्माणी वैष्णवी चैव कौमारी च पराजिता।
वाराही नारसिंही च तथैन्द्री भैरवी तथा।
अष्टपत्रेषु सम्पूज्या वामावर्तेन पार्वति ।।१०।।

हे पार्वती ! तत्पश्चात् अष्टदल कमल की आठ पंखुड़ियों पर वामावर्त क्रम से ब्रह्माणी, वैष्णवी, कौमारी, अपराजिता, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री एवं भैरवी आदि आठ देवियों (मातृकाओं) का पूजन करे ।।१०।।

सर्वैश्वर्यप्रदादेवी सर्वज्ञानमयी तथा।
वशिनीवागदेवतां च सर्वविघ्ननिवारिणी ।।११।।
सर्वसिद्धिप्रदादेवी तथैव भगमालिनी।
वामावर्तेन संपूज्य षट्कोणे साधकोत्तमः ।।१२।।

हे देवि ! उत्तम साधक सर्वैश्यर्यप्रदा देवी, सर्वज्ञानमयी, वशिनी वाग्देवता, सर्वविघ्न निवारिणी, सर्वसिद्धिप्रदा तथा भगमालिनी देवियों का वामावर्त क्रम से षष्टकोण के छहों कोणों में पूजन करे ।।११-१२।।

त्रिपुरां त्रिपुरेशानीं तथा त्रिपुरमालिनीं।
त्रिकोणे पूजयेद्देवि ईशानादि कम्रेण तु ।।१३।।

हे देवि ! तदुपरान्त साधक ईशानादि क्रम से त्रिकोण के तीनों कोणों में (१) त्रिपुरा, (२) त्रिपुरेशानी एवं (३) त्रिपुरमालिनी देवियों का पूजन करे ।।१३।।

सर्वानन्दमये चक्रे बैंदवे षोडशाक्षरीं।
श्रीविद्यां च त्रिकूटेशीं महात्रिपुरसुन्दरीं ।।१४।।
कामेश्वरीं कामराजं सम्पूज्य साधकोत्तमः।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्धूपदीपादितर्पणैः ।।१५।।

तब उत्तम साधक सर्वानन्दमय बैन्दवचक्र में षोडशाक्षरी श्रीविद्या, त्रिकूटेशी, महात्रिपुरसुन्दरी, कामेश्वरी तथा कामराज (कामेश्वर भैरव) का गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप एवं तर्पण आदि से पूजन करे ।।१४-१५।।

तत्रैव घटमानीय नूतनं घटमुत्तमं ।।१६।।

सौवर्णं राजतं ताम्रं मृण्मयं वा महेश्वरी ।
मूलेन पयसापूर्य गङ्गे च यमुनेन च ।।१७।।
तीर्थानीति समावाह्य यन्त्रैः कुम्भे महेश्वरी ।
बैंन्दवे तत्र संस्थाप्य घटे प्राणान्समर्चयेत् ।।१८।।

हे महेश्वरि ! उसी स्थान पर सोना, चाँदी, ताँबा या मिट्टी का नया उत्तम घट लाकर उसे जल से भरकर, उसमें **"गंगे च यमुने चैव"** मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे, तब उसे यन्त्र के बिन्दु पर स्थापित कर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करे ॥१६-१८॥

आवाह्य सशिवं देवीं घटप्राणान्समर्चयेत् ।
इन्द्रादिलोकपालाश्च पूर्वपश्चिमयोः शिवे ।।१९।।
दक्षिणोत्तरयोश्चैवमीशानादिक्रमेण तु ।
उर्ध्वमधोर्चयित्वादौ मध्ये दुर्गा नवार्चयेत् ।।२०।।

हे शिवे ! शिव के सहित देवी का आवाहन और उनकी प्राण-प्रतिष्ठा करके इन्द्रादि लोकपालों की क्रमशः पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ईशानादि, उर्ध्व एवं अधः आदि दशों दिशाओं में पूजा कर, मध्य में नव दुर्गाओं का पूजन करे ॥१९-२०॥

शैलपुत्री शिवे चैव घटान्ते ब्रह्मचारिणी ।
चंडघंटा च कूष्माण्ड स्कन्दमाता महेश्वरी ।।२१।।
कात्यायनी कालरात्रिर्महागौरी च साधकैः ।
देवदूती च नवमी नवदुर्गा समर्चयेत् ।।२२।।

उस समय (१) शैलपुत्री, (२) ब्रह्मचारिणी, (३) चंड घंटा, (४) कूष्माण्डा, (५) स्कन्द माता, (६) कात्यायनी, (७) कालरात्रि, (८) महागौरी, (९) देवदूती[१] इन नव दुर्गाओं का पूजन करे ॥२१-२२॥

घटत्रयेण सम्पूज्य मूलविद्यां समाचरेत् ।
त्रिकूटं कामराजं च श्रीविद्यां षोडशाक्षरीं ।।२३।।
घटे सम्पूज्य गन्धादि धूपदीपप्रसूनकैः ।
नैवेद्याचमनीयाद्यैः ताम्बूलछत्रचामरैः ।।२४।।

तब घटत्रय से मूलविद्या, त्रिकूट, कामराज और श्रीविद्या षोडशाक्षरी का उन घटों पर गन्धादि, धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल (पान), छत्र, चामर से पूजन करे ॥२३-२४॥

मूलविद्यां त्रिरुच्चार्य्य वेदिकायां च दापयेत् ।
घटमूलेन देवेशि मूलमन्त्रेण मन्त्रितः ।।२५।।

हे देवि ! मूल विद्या का तीन बार उच्चारण कर मूलमन्त्र षोडशाक्षरी मन्त्र से घट के मूल में वेदी पर उपर्युक्त वस्तुएँ समर्पित करे ॥२५॥

---

१. चन्द्रघण्टा एवं सिद्धिदात्रि के स्थान पर चंडघंटा और देवदूती का प्रयोग हुआ है ।

तदग्रे पंच वा तिस्त्रः कुमारीं पूजयेत्ततः ।
पाद्यार्घमधुपर्काद्यैः गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।। २६ ।।
माल्यैराभरणैर्दिव्यैः तथा पूज्यैश्च पायसैः
संतर्प्य विधिवद्देवी घटाग्रे जपमाचरेत् ।। २७ ।।

हे देवि ! तब उस घट के सम्मुख पाँच या तीन कुमारी कन्याओं का पाद्य, अर्घ, मधुपर्क, गन्ध, अक्षत, पुष्प, माला, दिव्य आभूषण तथा श्रेष्ठ पायस (खीर) से उनका एवं देवी का विधिवत् पूजन कर जप करे ।।२६-२७।।

जपाद्दशांशतो होमः कुर्यात्साधकसत्तमः ।
त्रिकोणकुंडमापर्वहस्तकेनापि विस्तृतम् ।। २८ ।।
त्रिकोणं तत्र संस्थाप्य चन्दनेन विभावयेत् ।
मध्ये बिन्दुं लिखेद्देवि श्रीविद्यां पूजयेच्छिवे ।। २९ ।।

हे शिवे ! तब श्रेष्ठ साधक को जप का दशांश होम करना चाहिये । इसके लिए एक हाथ लम्बा चौड़ा एवं गहरा त्रिकोण कुण्ड बनाये । उसमें चन्दन से त्रिकोण और बिन्दु लिखकर श्रीविद्या की पूजा करे ।।२८-२९।।

रं रां रुमग्नये स्वाहा समावाह्य विभावसुं ह्रां ह्रीं ह्रूः ।
जटाभार भासुराग्नेहि प्रज्वलेति हुं फट् स्वाहा ।। ३० ।।
वह्निमध्य पर्वहोमं कुर्याद्दत्तक्षीरतिलपुष्पैर्मनोहरैः ।
संतर्प्य देवता देवि मधुक्षीरसितांबुभिः ।
ब्राह्मणान्भोजयित्वादौ दक्षिणाभिश्च तोषयेत् ।। ३१ ।।

रं रां रुं अग्नये स्वाहा, ह्रां ह्रीं हूः जटाभार भासुर **अग्नएहि**, प्रज्ज्वल हुं, फट् स्वाहा मन्त्रों से अग्नि देवता का आवाहन कर अग्नि मध्य में दूध, सुन्दर तिल, पुष्पादि से होम करे तथा दूध, मधु व मिश्री मिश्रित जल से पहले आवाहित देवी और देवताओं का तर्पण कर, ब्राह्मण भोजन करावे तथा उन्हें दक्षिणा से सन्तुष्ट करे ।।३१।।

घटाग्रे कवचस्तोत्रं पाठं कुर्याद्विशेषतः ।
जप गुरुश्च श्रीदेव्या स शिवायै समर्पयेत् ।। ३२ ।।

तत्पश्चात् उस घट के सम्मुख ही विशेष कवच स्तोत्रादि का पाठ कर जप को शिवा के सहित गुरु एवं श्रीदेवी को समर्पित करे ।।३२।।

य एवं पूजयेद्देवि महात्रिपुरसुन्दरी ।
नवम्यंतं महेशानि स तु साक्षान्महेश्वर ।। ३३ ।।

हे महेशानि ! जो इस प्रकार महादेवी की नवमी पर्यन्त नित्य पूजा करता है, वह साक्षात् महेश्वर रूप हो जाता है ।।३३।।

नवम्यां रोप्य पुष्पाणि नवरात्र प्रसूनकाः ।
देवदेव्यै घटस्थाने नवमुद्राभिरीश्वरी ।
प्रणम्य दंडवद्देवीं साष्टाङ्गयोनिमुद्रया ।। ३४ ।।

नवमी नवरात्र में उपलब्ध पुष्पों को देवता और देवी के लिए नव मुद्राओं से घट स्थान में निवेदित कर देवी को साष्टाङ्ग दण्डवत कर योनिमुद्रा से प्रणाम करे ॥३४॥

यन्मात्राक्षर...विन्दु द्वितीयपदद्वंद्ववर्णानुरु भक्त्यां-
भक्त्यानुपूर्वः रहितमरहितं व्यक्तमव्यक्तं वा ।
ज्ञानादज्ञानतो वा पठितमपठितं साम्प्रतं ते मखेस्मिन्
तत्सर्वंसाङ्गमस्तुप्रतिदिनमसुरैः पूज्यमानं प्रसिद्धः ।।३५।।

जो मात्रा, अक्षर, बिन्दु, शब्द समूह या वर्णन हार्दिक भक्ति या पूर्व परम्परा प्राप्त भक्ति से रहित या युक्त, व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप से ज्ञान से या अज्ञान से तुम्हारे इस पूजा (यज्ञ) में पढ़ा गया या न पढ़ा गया अंश हैं वह सब पूर्णता को प्राप्त हो । असुर गणों में प्रतिदिन इसी विधि से उपासना की जाती है, ऐसी प्रसिद्धि है ॥३५-३६॥

इत्येवं पटलं गुह्यसर्वं तन्त्रेषु च गोपितः ।
नवरात्रदिनार्चाद्यो लक्षकोटि फलप्रदा ।।३७।।

इस प्रकार नवरात्र के दिनों की पूजा विधि को ध्यान में रखकर वर्णित यह पटल अत्यन्त गोपनीय तथा सभी तंत्रों में सुरक्षित है । यह पूजा करोड़ों लाख नित्यार्चा का फल देने वाली है ॥३७॥

य एवं पूजयेद्देवि समये परमेश्वरीं ।
स एव भगवान्लोके विचरेत् भैरवो यथा ।।३८।।

हे देवि ! जो इस प्रकार के समय में उपर्युक्त रीति से परमेश्वरी भगवती का पूजन करता है वह ऐश्वर्ययुक्त हो संसार में भैरव के समान विचरण करता है ॥३८॥

नित्यपूजा प्रपादानं गङ्गास्नानं महेश्वरी ।
गजाश्वरथदानं च भूदानं भास्करग्रहे ।
नवरात्रार्चनस्याद्यकलां नार्हति षोडशीं ।।३९।।

हे महेश्वरि ! नित्यार्चन, प्रपा (प्याऊ) का दान, गंगा स्नान, हाथी, घोड़े, रथ तथा भूमि आदि के सूर्यग्रहण के समय किये गये दान आदि नवरात्र पूजन की १६वीं कला (१६वें भाग) के तुल्य भी नहीं हैं ॥३९॥

इदं पूजारहस्यं ते भाषितं भक्तिभावतः ।
अप्रकाश्यमदातव्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ।।४०।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये चैत्रमास नवरात्रार्चनविधिनाम दशमपटलः ॥ १० ॥

यह पूजा रहस्य जो अपात्र हेतु प्रकाशित न करने योग्य, है जिस किसी को न देने योग्य तथा सर्वथा गोपनीय है तुम्हारे भक्तिभाव के कारण तुमसे कहा गया है ॥४०॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का चैत्रनवरात्रअर्चनविधिनामक दसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥१०॥



एकादशपटलः

आश्विननवरात्र अर्चन विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अथाहं कथयाम्यद्य पूजासारं महेश्वरी ।
श्रीविद्याषोडशाक्षर्याः न कस्य कथितं मया ।।१।।

श्रीभैरव बोले—आज मैं श्रीविद्या षोडशाक्षरी पूजा का वह सार तत्त्व कहता हूँ, जो अब तक मेरे द्वारा किसी से भी नहीं कहा गया है ॥१॥

अश्वीयुक्मासी शुक्ले तु प्रतिपाद्दिवसे शुभे ।
उत्थाय साधकः स्नत्वा नित्यकर्म समापयेत् ।।२।।

आश्विन महीने के शुक्ल पक्ष की शुभ प्रतिपद् तिथि को साधक उठकर, भलीभाँति स्नान करके नित्य कर्म सम्पन्न करे ॥२॥

जपं निवर्त्य देवेशि देवीमाश्रित्य साधकः ।
चतुष्कोणं चतुर्मुष्टिं प्रमेयां पूर्वदिक् स्थितम् ।
विलिख्य वेदिकां देवि श्रीचक्रं च विभावयेत् ।।३।।

हे देवि ! हे दवेशि ! जप सम्पन्न कर देवी का आश्रय ले साधक पूर्व दिशा में चार मुट्ठी नाप की चौकोर वेदिका निर्मित कर उस पर श्रीचक्र की रचना करे ॥३।

त्र्यस्रं सबिन्दुशरकोणयुक्तं वृत्ताष्टपत्रांकितषोडशारम् ।
भूमन्दिरं सुन्दरमप्रमेयं श्रीचक्रमेतन्नवरात्रमुख्यम् ।।४।।
विभाव्य तत्र श्रीचक्रं साधको मन्त्र साधकः ।।५।।

बिन्दुयुक्त त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टपत्रों से अंकित वृत्त, फिर षोडश दलयुक्त, अद्वितीय रूप से सुन्दर भूपुर से युक्त यह श्रीचक्र (शारदीय) नवरात्र में विशेष महत्त्व रखता है। उपर्युक्त श्रीचक्र की वहाँ रचना करके मन्त्र साधक सच्चा साधक हो जाता है ॥४-५॥

नवरात्रार्चनस्य दक्षिणामूर्तिरीरितः ।
ऋषिः पंक्तिस्तथ छन्दस्त्रिकूटादेवतेरिता ।।६।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।७।।

इस नवरात्र अर्चन के दक्षिणामूर्ति ऋषि, पंक्ति छंद, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में विनियोग बताया गया है। (**ॐ अस्य नवरात्रार्चनस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिश्छन्दः, त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः ।**) ।।६-७।।

तत्र न्यासं शिवे कुर्यादृषिषोडशपूर्वकम् ।
भूतशुद्धिं प्राणयुक्तिं विधायाचम्यत्रिः शिवे ।।८।।
प्राणायामत्रयं कृत्वा कृत्वा दिग्बन्धनं ततः ।
श्रीचक्रे पूजयेद्देवीं त्रिकूटोषोडशाक्षरीम् ।।९।।

हे शिवे ! तब विनियोग करके ऋषि आदि षोडश न्यास करना चाहिये । भूतशुद्धि, प्राणयुक्ति (प्राण-प्रतिष्ठा), तीन आचमन, तीन प्राणायाम तथा दिग्बन्धन करने के पश्चात् श्रीचक्र पर देवी त्रिकूटा, षोडशाक्षरी का पूजन करे ॥८-९॥

गणेशं वरुणं धर्मं कुबेरं पूजयेत्सदा ।
गन्धपुष्पार्घधूपैश्च दक्षावर्तेन पूजयेत् ।।१०।।

गणेश, वरुण, धर्म, कुबेर का सदा दक्षिणावर्त क्रम से गन्ध, पुष्प, अर्घ, धूप आदि द्वारा पूजन करे ॥१०॥

देवीं अं कामाकर्षिणी च नित्या कुलपदाञ्चिता ।
आं बुध्याकर्षिणीं चैव इं अहङ्काराकर्षिणी ।।११।।
ईं शब्दाकर्षिणी नित्या उं स्पर्शाकर्षिणी तथा ।
ऊँ रूपाकर्षिणीनित्या ऋं रसाकर्षिणी ततः ।।१२।।
ॠं गन्धाकर्षिणीनित्या लृं चित्ताकर्षिणी ततः ।
लॄं धैर्य्याकर्षिणी नित्या एं स्मृत्याकर्षिणी ततः ।।१३।।
ऐं नामाकर्षिणी नित्या ओं बीजाकर्षिणी तथा ।
औं आत्माकर्षिणी च अं अमृताकर्षिणी ततः ।
अः शरीराकर्षिणीं च षोडशारे प्रपूजयेत् ।।१४।।

हे देवी ! क्रमशः कुल नित्या पद से युक्त अं कामाकर्षिणी, आं बुध्याकर्षिणी, इं अहंकाराकर्षिणी, ईं शब्दाकर्षिणी, उं स्पर्शाकर्षिणी, ऊं रूपाकर्षिणी, ऋं रसाकर्षिणी, ॠं गन्धाकर्षिणी, लृं चित्ताकर्षिणी, लॄं धैयाकर्षिणी, एं स्मृत्याकर्षिणी, ऐं नामाकर्षिणी, ओं बीजाकर्षिणी, औं आत्माकर्षिणी, अं अमृताकर्षिणी तथा अः शरीराकर्षिणी नाम वाली १६ नित्याओं का १६ कोणों (दलों) में पूजन करे ॥११-१४॥

सर्वसंक्षोभिणीशक्तिः सर्वज्ञाशक्तिरीश्वरी ।
भगेश्वरी भगबिम्बा चिच्छक्तिर्हृदयेश्वरी ।।१५।।
महालक्ष्मी महाविद्या पूजनीयाष्टपत्रके ।
वामावर्तेन गन्धादिपुष्पधूपादितर्पणैः ।।१६।।

हे ईश्वरी ! सर्वसंक्षोभिणी, सर्वज्ञा, भगेश्वरी, भगबिम्बा, चित्शक्ति, हृदयेश्वरी, महालक्ष्मी एवं महाविद्याशक्तियों का वामावर्त क्रम से अष्टपत्रों पर गंध, पुष्प, धूप, तर्पण आदि द्वारा पूजन करे ॥१५-१६॥

कालिकभद्रकाली च ज्वालामुख्या च कुब्जिका
सुमुखी पञ्चकोणेषु पूज्याः रक्तैः प्रसूनकैः ।
त्रिपुरां चंडिकां दुर्गां त्रिकोणे पूजयेत्पृथक् ।।१८।।

कालिका, भद्रकाली, ज्वालामुखी, कुब्जिका एवं सुमुखी इन पाँच देवियों का पंचकोणों में और त्रिपुरा, चण्डिका, दुर्गा नाम की तीन देवियों का त्रिकोण में अलग-अलग लाल पुष्पों से पूजन करे ॥१७-१८॥

सर्वानन्दमये चक्रे बैंदवे षोडशाक्षरीम् ।
त्रिकूटां देवीं श्रीविद्या महात्रिपुरसुन्दरीम् ।।१९।।
एवं कामेश्वरं चैव कालाग्निभैरवेश्वरम्।
सम्पूज्योपरि गंधार्घ्य धूपदीपादितर्पणैः ।।२०।।

सर्वानन्दमय बैन्दव चक्र में षोडशाक्षरी, त्रिकूटा देवी, श्रीविद्या-महात्रिपुर- सुन्दरी का एवं कामेश्वर, कालाग्निभैरवेश्वर का पूजन गन्ध, अर्घ, धूप-दीप तर्पण आदि से करे ॥१९-२०॥

घटं नूतनमानीय पयसा पूरयेत्ततः ।
मूलविद्यां समुच्चार्य्य बिन्दौ स्थापयेद् घटम् ।।२१।।

तब नया घट लाकर उसे जल से भरकर मूलविद्या का उच्चारण करके बिन्दु पर घट को स्थापित करे ॥२१॥

फडित्येशानबंधा तु पूरयेत् घटमुत्तमम् ।
दशदिग्पतयः पूज्या गणेशो नंदिसमारं ।।२२।।
पर्वतादिग्गजाः पूज्या देवि कूटत्रयेण च ।
बहिर्घटस्य देवेशि गंधाक्षतप्रसूनकैः ।।२३।।

हे देवि ! हे देवेशि ! फट् इस ईशान बन्ध से उस उत्तम घट को पूर्णकर, मार के सहित दश दिग्पालों, गणेश, नंदि, पर्वत और दिग्गजों का घड़े के बाहर गंधाक्षत पुष्प से पूजन करे ॥२२-२३॥

मध्ये घटस्य सम्पूज्य नवदुर्गा विशेषतः ।
घटेदेवीं च सशिवं समावाह्य तु पार्वती ।।२४।।
पूजयेन्मूलमन्त्रेण नवमुद्राः प्रदर्शयेत् ।
कुमारीपूजनं कृत्वा पूर्वोक्तविधिना शिवे ।।२५।।

हे पार्वती ! हे शिवे ! घट के मध्य नवदुर्गाओं का तथा शिव के सहित देवी का आह्वान कर, मूलमन्त्र एवं नव मुद्राओं से पूजन करे तब पहले बतायी गयी विधि के अनुसार कुमारी पूजन करे ॥२४-२५॥

घटाग्रे साधकः कुर्यात् जपं मन्त्रस्य सर्वदा ।
जपाद्दशांशतोहोमः कार्यं साधकसत्तमैः ।
वटं पायस खंडास्तु शर्करादियवैस्तिलैः ।।२६।।

तब श्रेष्ठ साधकों द्वारा घट के सम्मुख सर्वदा (प्रतिदिन) मन्त्र जप करना, फिर जप का दशांश होम, बड़ा, खीर, चीनी, जौ, तिल से किया जाना चाहिये ॥२६॥

ततः समर्प्य देव्यै च सिद्धौघान् गुरुन्पृथक् ।
ततस्त्रिकूटां संतर्प्य त्रिपुरां षोडशाक्षरीम् ।।२७।।
संमार्ज्य च दंशाशेन विप्रान्सम्पूजयेत्ततः ।
दक्षिणाभिः अनुग्राह्य प्रणमेद्योनिमुद्रया ।।२८।।

तब देवी और सिद्धौघ गुरुओं को अलग-अलग जप समर्पण कर त्रिकूटा, त्रिपुरा, षोडशाक्षरी का तर्पण करे तथा दशांश से मार्जन फिर ब्राह्मणों को दक्षिणा से पूजा एवं अनुग्रहयुक्त कर योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे ॥२७-२८॥

य एवं पूजयेन्नित्यं नवाहनि महेश्वरि ।।२९।।
त्रिकूटां त्रिपुरां तारां जपपाठार्चनेन वा ।
स एव भैरवो ज्ञेयो साधकश्चन्द्रशेखरः ।।३०।।

हे महेश्वरि ! जो इस प्रकार से नित्य नौ दिनों तक त्रिकूटा, त्रिपुरा, तारा का जप, पाठ, अर्चा आदि से पूजा करता है, उस साधक को ही भैरव एवं चन्द्रशेखर समझना चाहिये ॥२९-३०॥

नवाहनिसंचे पूज्यघटं चैव कुमारिकम् ।
मूलेनैव बलिं दद्यात् साधकः सर्वसिद्धये ।।३१।।

हे महेश्वरि ! उपर्युक्त रीति से नौ दिनों तक घट और कुमारी पूजन करके साधक सब सिद्धियों की प्राप्ति हेतु मूलमन्त्र से बलि प्रदान करे ॥३१॥

संतर्प्य साधको विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः विशेषतः ।
दद्याद्यन्त्राणि रौप्यस्य स्वर्णस्य च महेश्वरी ।।३२।।
मासत्रयं रौप्यताम्रं सुवर्णस्य तथैव च ।
पुष्पाणि विविधान्येव प्रणमेत् योनिमुद्रया ।।३३।।

तब साधक, ब्राह्मण को भक्ष्य और भोज्य पदार्थों द्वारा तृप्त कर विशेष रूप से सोने चाँदी के यन्त्र दान करे, जो तीन मासा के चाँदी या सोना एवं ताँबे के होवें। तब विविध प्रकार के पुष्पों से पूजन कर योनि मुद्रा से प्रणाम करे ॥३२-३३॥

बटुं सम्पूज्य देवेशि दिव्यमालाविभूषितम् ।
मणिमुक्तापीतवस्त्रैरलङ्कारैरलंकृतम् ।।३४।।

तब हे देवेशि ! बटुक भैरव का दिव्य माला, मणि, मुक्ता, पीतवस्त्रों, रत्नों और आभूषणों से पूजन करे ॥३४॥

साधक साधकायैव घटं संहारमुद्रया ।
संतर्पये महेशानि प्रणमेद्योनिमुद्रया ।।३५।।

हे महेशानि ! साधक (यजमान) साधक (आचार्य) को संहार मुद्रा से विसर्जित किये घट को समर्पण कर उसे योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे ॥३५॥

एवं सम्पूजयेद्देवीं महात्रिपुरसुन्दरीम् ।
नित्या नित्यापरिक्लिन्ना नित्या नित्यमहेश्वरी ॥३६॥
नवरात्रिदिने देवि फलं वक्तुं महेश्वरी ।
जन्मकोटिसहस्रे तु पूजयेद्यो महेश्वरी ॥३७॥
स्तोत्रैर्नानाविधैर्मन्त्रैः रत्नालंकारकैस्तथा ।
जपेन तपसाध्यानैस्तत्फलं साधकोत्तमः ।
नवरात्रार्चनवशाद्विचरेद्भैरवो यथा ॥३८॥

इस प्रकारा से महात्रिपुरसुन्दरी का नित्य तथा अनित्य से युक्त, नित्य और अनित्य दोनों ही रूपों में व्याप्त महेश्वरी का नौ दिनों तक पूजन का फल कहें तो, स्तोत्रों, अनेक प्रकार के मन्त्रों, रत्नाभूषणों, जप, तपस्या, ध्यान से करोड़ों हजार वर्षों तक पूजन का जो फल प्राप्त होता है, वह फल श्रेष्ठ साधक उपर्युक्त पूजन से प्राप्त कर लेता है। नवरात्र पूजन के फलस्वरूप वह भैरव के समान विचरण करता है ॥३६-३८॥

इत्येवं पटलो गुह्य सर्वतन्त्रेषु गोपितः ॥३९॥
गोपनीयो न दृष्टव्यो गुह्यं यत्परमेश्वरी ।
इदं रहस्यं परमं सर्वतंत्रेषु गोपितम् ॥४०॥
न दातव्यं अभक्ताय गोपनीयं विशेषतः ॥४१॥

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये आश्विननवरात्रार्चनविधिनामैकादशपटलः ॥ ११ ॥

इस प्रकार का यह पटल सभी तंत्रों में गुह्य तथा सुरक्षित है। हे परमेश्वरि ! यह जो गुप्त और न दिखने योग्य श्रेष्ठ सभी तन्त्रों में निहित रहस्य है उसे अभक्त को नहीं प्रदान करना चाहिये। विशेष रूप से इसकी रक्षा की जानी चाहिये ॥३९-४१॥

श्री रुद्रयामल तन्त्र के त्रिकूटारहस्य का आश्विननवरात्रअर्चनविधि नामक ग्यारहवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥११॥



द्वादशपटलः

कन्यासंक्रान्ति पूजा विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना शृणु देवेशि पूजां संक्रातिकिं शिवे ।
त्रिकूटायाः महापूजा पूजाकोटि फलप्रदाम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवेशि ! हे शिवे ! संक्रान्ति पर्व की त्रिकूटा की जो महापूजा है, वह करोड़ों पूजा के समान फल देने वाली है ॥१॥

यस्मिनह्नि रवे देवि संक्रमे इशवर्धिनी ।
कन्या तस्मिन्दिने स्नात्वा साधको मन्त्रसाधकः ।
नित्यपूजां समाप्यादौ चरेत्संक्रान्तिपूजनम् ।।२।।

हे देवि ! जिस दिन सूर्य इश (शक्ति सम्पन्नता) बढ़ाने वाली कन्या राशि पर संक्रमण करे उस दिन मन्त्र की साधना करने वाला साधक स्नान करे तथा प्रारम्भ में नित्य पूजन सम्पन्न कर संक्रान्ति पूजन करे ॥२॥

कन्यासंक्रान्तिपूजायाः ऋषिप्रोक्तः सदाशिवः ।
पंक्तिः छंदो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिता ।।३।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।४।।

कन्यासंक्रान्ति पूजा के ऋषि सदाशिव, पंक्तिछंद, महादेवी त्रिकूटा देवता ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्षो में विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य कन्यासंक्रान्तिपूजायाः सदाशिवऋषिः पंक्तिश्छंदः, महादेवी त्रिकूटा देवता ऐं बीजं, सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः।)** ॥३-४॥

पूर्वं संकल्प्य विधिवन्न्यासं ऋष्यादिकं चरेत् ।
षोढान्यासं ततः कृत्वा मातृकाशृखलां चरेत् ।।५।।
भूतशुद्ध्यादिकं कृत्वा प्राणार्पणविधिंवंततः ।
ध्यायेत्त्रिकूटां सशिवं येन देवीमयो भवेत् ।।६।।

पहले सङ्कल्प करके विधिपूर्वक ऋष्यादि न्यास करे तब षोडान्यास करके मातृका न्यास की शृङ्खला का आचरण कर भूतशुद्धि सम्पन्न करने के पश्चात् प्राणार्पण की विधि सम्पन्न करे। शिव के सहित त्रिकूटा का ध्यान करे, जिससे वह साधक स्वयं देवीमय हो जाता है ॥५-६॥

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां
धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्चदधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ।।७।।

मैं मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करने वाली शिव-शक्ति स्वरूपा भगवती कामेश्वरी का हृदय में चिन्तन करता हूँ, जो तपाये हुए स्वर्ण के समान सुन्दर तथा सूर्य, चन्द्रमा एवं अग्नि रूपी तीन नेत्रों से युक्त और अपने मनोहर हाथों में बाणयुक्त धनुष, अङ्कुश, पाश एवं शूल धारण किये हुए हैं ।।७।।

इति ध्यात्वा महेशानि श्रीचक्रं धरणौ लिखेत् ।।८।।
बिन्दु त्रिकोणे रसकोणयुग्मं संवृत्तरेखाभिमनोहरं च ।
तथाष्टपत्रं सधरा गृहेशं श्रीचक्रमेतत्परदेवतायाः ।।९।।

हे महेशानि ! ऐसा ध्यान करके पृथिवी पर श्री चक्र की रचना करे। बिन्दु, त्रिकोण, दो षट्कोण वृत्ताकार रेखा से सुशोभित तथा अष्टदल कमल और भू-पुर के सहित बना यह परदेवता का श्रीचक्र है ।।८-९।।

सिन्दूरेण विभाव्यादौ पात्राणि स्थापयेत्ततः ।
योगपीठार्चनं कुर्याद्यंत्रं देवे शिषांकितम् ।।१०।।

पहले सिन्दूर से श्रीचक्र बना कर पात्रों की स्थापना करे और देव कामेश्वर एवं शिवा (कामेश्वरी) अंकित यन्त्र का योगपीठ के रूप में पूजन करे ।।१०।।

समावाह्य महादेवीं नवमुद्राः प्रदर्श्य च ।
पूजयेच्चक्रमात्मस्थं फडित्याशां निबध्य च ।।११।।

तब महादेवी का भलीभाँति आवाहन एवं नव मुद्राओं का प्रदर्शन कर, 'फट्' इस मन्त्र से दिग्बन्ध करे तथा अपने में ही स्थित चक्र का पूजन करे ।।११।।

गणेशं धर्मवरुणौ कुबेरसहिता शिवे ।
चतुरस्रे च सम्पूज्य पीतपुष्पैर्महेश्वरी ।।१२।।
ब्राह्मी च वैष्णवी चैव कौमारी चापराजिता ।
वाराही नारसिंही च तथैन्द्री शांभवी तथा ।
पूजनीयाष्टपत्रेषु रक्तपुष्पैश्च धूपदीपकैः ।।१३।।

तब हे महेश्वरी ! हे शिवे ! कुबेर के सहित गणेश, धर्म एवं वरुण का चतुरस्र पर पीले पुष्पों से पूजन करे एवं ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, अपराजिता, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री तथा शाम्भवी नाम की देवियों का अष्टदल पर लाल पुष्प और धूपदीप आदि से पूजन करे ।।१२-१३।।

मंदा मंदाकिनी ध्वांक्षा घोरा चैव महोदरी ।
मिश्रिका पूजनीया च वाह्यषट्कोणके शिवे ।।१४।।

राक्षसी डाकिनी चैव शाकिनी योगिनी तथा ।
हाकिनी लाकिनी पूजामध्ये षट्कोणके ततः ।।१५।।

हे शिवे ! तदनन्तर मन्दा, मंदाकिनी, ध्वांक्षा, घोरा, महोदरी, मिश्रिका का बाहरी षट्कोण पर तथा राक्षसी, डाकिनी, शाकिनी, योगिनी, हाकिनी, लाकिनी आदि की पूजा मध्य षट्कोण पर करे ॥१४-१५॥

गङ्गा च यमुना चैव तृतीया च सरस्वती ।
त्रिकोणे पूजयेद्देवि साधको मन्त्रसाधकः ।।१६।।

हे देवि ! मन्त्र साधना करने वाला साधक त्रिकोण के तीन कोणों में क्रमशः गङ्गा, यमुना एवं सरस्वती का पूजन करे ॥१६॥

सर्वानंदमये चक्रे वैंदवे परमेश्वरी ।।१७।।
त्रिकूटा पूजयेद्देवि महात्रिपुरसुन्दरी ।
देवं कामेश्वरं चैव कालाग्नीरुद्रभैरवम् ।।१८।।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्नैवेद्याचमनीयकैः ।
वस्त्रैश्च परमैरर्थैस्तांम्बूलच्छत्रचामरैः ।।१९।।

सर्वानन्दमय नामक बिन्दु चक्र पर परमेश्वरी स्वरूप त्रिकूटा महात्रिपुरसुन्दरी देवी एवं की कामेश्वर, कालाग्निरुद्रभैरव स्वरूप देवता का गन्धाक्षत, पुष्प, नैवेद्य, आचमनीय, वस्त्र, परम (श्रेष्ठ) दक्षिणा, ताम्बूल, छत्र, चामर आदि से पूजन करे ॥१७-१९॥

संपूज्य यंत्रराजं च बिन्दौ दद्यान्महेश्वरी ।
स्वर्णरौप्यजपुष्पाणि काँस्यपात्रैस्तथैव च ।।२०।।
निवेद्य मूलमन्त्रेण स्मरेत्रिकलशोत्ततः ।
बिन्दौ देवीं स्मरेन्मन्त्री सा शिवा हसिताननाम् ।।२१।।

उपर्युक्त रीति से यन्त्रराज की पूजा कर बिन्दु पर ही सोने-चाँदी के बने पुष्प एवं काँसे के पात्रों को मूल मन्त्र से निवेदित करे तत्पश्चात् मन्त्री तीनों कलशों एवं बिन्दु पर शिव के सहित प्रसन्नवदना देवी का स्मरण (ध्यान) करे ॥२०-२१॥

पूर्ववद्देवि संकल्प्य जपकुर्याद्यथाविधि ।
जपाद्दशांशतो होमः कार्यं सर्पियवांकुरैः ।।२२।।
कवचं स्तोत्रपाठं च कृत्वा देवीं समर्पयेत् ।
विप्रेभ्यो भोजनं दद्यात् साधकेभ्यो विशेषतः ।।२३।।

हे देवी ! तब पहले की भाँति सङ्कल्पपूर्वक विधि के अनुसार जप एवं जप का दशांश होम, घी और जव से करे तथा कवच स्तोत्र आदि का पाठ कर उसे देवी को समर्पित करे तथा ब्राह्मणों को विशेष कर साधकों को भोजन करावे ॥२२-२३॥

तथैव दक्षिणां दत्वा प्रणमेद्योनिमुद्रया ।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणस्म कृतं जपम् ।।२४।।

सिद्धिर्भवतुमेदेवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी ।
पूजा सपर्पयेद्देवि इति मन्त्रेण साधकः ।।२५।।

उसी प्रकार दक्षिणा आदि देकर योनि मुद्रा द्वारा प्रणाम करे तथा—

"गृह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी ।।"

इस मन्त्र से साधक अपने द्वारा की गयी पूजा एवं जप देवी को समर्पित करे ॥२४-२५॥

इत्येवं पूजयेद्देविं कन्यासंक्रान्तिवासरे ।
गोदानकोटिसदृशं फलं भवति पार्वती ।।२६।।

हे पार्वती ! कन्या संक्रान्ति के दिन इस प्रकार की गयी पूजा करोड़ों गोदान के समान फल देने वाली होती है ॥२६॥

सप्तजन्मनि यो देवि पूजये नित्यकर्मणा ।
यत्फलं तस्य तत्सद्यो भवेत्कन्यार्कपूजया ।।२७।।

हे देवि ! सात जन्मों तक नित्यकर्म के रूप में पूजा करने का जो फल होता है वह शीघ्र ही इस कन्या संक्रान्ति की पूजा से प्राप्त होता है ॥२७॥

इतीदं परमं गुह्यं रहस्यं सारमुत्तमम् ।
गोप्तं गोप्ततमं गुह्यमित्याज्ञा परमेश्वरी ।।२८।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये कन्यासंक्रान्तिपूजाविधिर्नाम द्वादशपटलः ॥ १२ ॥

यह अत्यन्त गुह्य, रहस्यमय एवं उत्तम सार तत्त्व है, जो गोपनीयों में भी गोपनीय तथा मेरी आज्ञानुसार विशेष रूप से रक्षणीय है ॥२८॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का कन्यासंक्रान्तिपूजाविधि नामक बारहवाँ पटल सम्पूर्ण हुआ ॥१२॥



त्रयोदशपटल:

दशप्रयोग विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

कथयाम्यद्य देवेशि स्तंभनादि विधिशुभम् ।
स्तभनं मोहनं चैव मारणाकर्षणौ ततः ।।१।।
वशीकरोच्चाटनकं शांतिकं पौष्टिकं ततः ।
शान्तानिकं मौक्तिकं च प्रयोगोदशकीर्तितः ।
यं विधाय महेशानि साधको योगवान् भवेत् ।।२।।

श्रीभैरव उवाच–हे दवेशि ! हे महेशानि ! अब मैं तुमसे स्तम्भन आदि शुभ विधियों के विषय में कहता हूँ—(१) स्तम्भन, (२) मोहन, (३) मारण, (४) आकर्षण, (५) वशीकरण, (६) उच्चाटन, (७) शान्तिकरण, (८) पुष्टिकरण, (९) शांतानिक एवं (१०) मौक्तिक ये दश प्रयोग बताये गये हैं, जिन्हें करके साधक योगयुक्त हो जाता है ॥१-२॥

(१) स्तम्भन

स्तंभनं ·रविवारेषु स्नात्वा जप्त्वा महेश्वरी ।
यमुच्चार्य भवेन्नृणां स्तम्भनं त्वरितं कलौ ।।३।।
तारं रमां परां तारं कूटत्रयमुदीरयेत् ।
तारं रमां परां तारं फट् स्तम्भनकरं पदम् ।।४।।

हे महेश्वरी ! स्तम्भन हेतु रविवार को स्नानपूर्वक जप करने से जिस मन्त्र के उच्चारण मात्र से कलियुग में शीघ्र स्तम्भ हो जाता है, वह इस प्रकार है—

तार (ॐ) रमा (श्रीं), परा (ह्रीं), तार (ॐ), कूटत्रय बोलने के पश्चात् पुनः तार, रमा, परा और तब फट् स्तम्भनकर शब्दों के प्रयोग से बनता है ॥३-४॥

तत्र सूर्यस्य चन्द्रस्य बलवतधिपाधसाम् ।
रिपुन्यासादि दस्यूनां स्तम्भनं जायते ध्रुवम् ।।५।।

सूर्य, चन्द्र तथा बलवान राजाओं, शत्रुओं तथा दस्युओं का निश्चय ही स्तम्भन हो. जाता है ॥५॥

(२) मोहन

रवौ स्नात्वा नदीतीरे जपेन्मूलं महेश्वरी ।
यस्योच्चारणमात्रेण मोहयिष्यति भैरवः ।।६।।

हे महेश्वरि ! रविवार को स्नान कर नदी के किनारे मूल मन्त्र का जप करे, जिस मन्त्र के उच्चारण मात्र से भैरव को भी साधक मोहित कर लेगा ॥६॥

तारं कामशरस्तारं कूटत्रयमतः परं ।
शरः कामः पुरस्तारं फट् मोहनमनुत्तमम् ।।७।।
देवानां च नरेशाणां स्त्रीणामसरसां तथा ।
सद्यो दर्शनमात्रेण मोहनं जायते ध्रुवं ।।८।।

तार (ॐ) काम (क्लीं), शर (फट्), तार, कूटत्रय, तार पूर्वक शर, काम तार और फट् यह उत्तम मोहन मंत्र है, जिसके प्रयोग से देवताओं, राजाओं, स्त्रियों तथा अरस (नीरस) व्यक्तियों का भी शीघ्र ही, देखने मात्र से ही निश्चित रूप से मोहन हो जाता है ।।७-८।।

(३) मारण

रवौ श्मशाने मन्त्रस्य जपं कृत्वा महेश्वरी ।।९।।
आनीय भस्म संमुष्टिं क्षिपेच्छत्रोर्गृहे पथि ।
सप्ताहान्मृयते शत्रुं साधकस्य न संशयः ।।१०।।

रविवार को श्मशान में मन्त्र का जप कर वहाँ से मुठ्ठी भर भस्म लाकर शत्रु पर, उसके घर में या मार्ग पर डाल देने से साधक का शत्रु एक सप्ताह में ही मृत्यु को प्राप्त करता है। इसमें कोई संशय नहीं है ।।९-१०।।

तारं कालं च कूर्चं च त्रिकूटापदमुच्चरेत् ।
कूर्चं कालं ततस्तारं फणमारणमनुस्मृतं ।।११।।

तार (ॐ), काल (हँ), कूर्च (हूँ) त्रिकूटा शब्द बोलकर कूर्च काल तार फट् मारण मन्त्र बताया गया है ।।११।।

नृपो वा नृपभृत्यो वा विप्रो वा क्षत्रोऽपि वा ।
शत्रुः कालमाप्नोपि मृत्युमेष्यति भैरवि ।।१२।।

हे भैरवि ! इसके प्रयोग से राजा, राजसेवक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, काल के समान दुर्दान्त शत्रु भी मृत्यु को प्राप्त होता है ।।१२।।

(४) आकर्षण

रवौ मन्त्रजपेत्प्रातः कामीसाधकसत्तमः ।
रंभाद्यप्सरसां देवि भवेदाकर्षणं ततः ।।१३।।

रविवार को प्रातःकाल यदि कामी (आकांक्षा युक्त) साधक श्रेष्ठ मन्त्र जप करे तो रम्भादि अप्सराओं तथा निष्ठुर से निष्ठुर का भी आकर्षण हो जाता है ।।१३।।

तारं मारं वाग्भवं च कूटत्रयमुदीरयेत् ।
चन्द्रं मारं तथा तारं फडाकृति मनुः स्मृतः ।।१४।।

तारं (ॐ) मारं (क्लीं) वाग्भव (ऐं), कूटत्रय, चन्द्र (ऐं), मार, तार, फट् यह आकर्षण का उत्तम मन्त्र कहा गया है ।।१४।।

अस्योच्चारणमात्रेण सकृदाकर्षणं भवेत् ।
रंभा स्वर्गस्थिता वापि प्रातः प्रादुर्भविष्यति ।।१५।।

इसके उच्चारण मात्र से ही शीघ्र आकर्षण होता है तथा स्वर्गस्थित रम्भा भी प्रात:काल प्रकट हो जावेगी ॥१५॥

(५) वशीकरण

रवौ मध्याह्नसमये स्नात्वा मूलं जपेच्छिवे ।
जप्त्वा शीघ्र वशं याति त्रैलोक्यं सचराचरम् ।।१६।।

हे शिवे ! रविवार को मध्याह्न के समय स्नान करके मूल मन्त्र का जप करने से चर और स्थिर तीनों लोक शीघ्रवश में आ जाता है ॥१६॥

तारं परा स्मरं तारं कूटत्रयमुदीरितम् ।
तारं स्मरः परा तारं फट् वशीकारको मनुः ।।१७।।
अस्योच्चारण मात्रेण देवा अपि महेश्वरी ।
सद्यः किंकरतां यान्ति किं पुनःक्षुद्रभूमिजा ।।१८।।

तार (ॐ), परा (ह्रीं), स्मार (क्लीं), तार (ॐ) कूटत्रय, तार, स्मर, परा, तार और अन्त में फट् यह वशीकारक मन्त्र है। हे महेश्वरि ! इसके उच्चारण मात्र से ही देवता भी शीघ्र किंकरता को प्राप्त करते हैं। फिर पृथिवी पर जन्मे प्राणियों की क्या बात है ? ॥१७-१८॥

(६) उच्चाटन

रवौ गत्वा स्मशाने तु जपेन्मूलं महेश्वरि ।
यज्जपेन भवेच्छत्रोरुच्चाटनमरिन्दमा ।।१९।।

हे महेश्वरि ! रविवार को श्मशान भूमि में जाकर उस मूल मन्त्र का जप करे, जिस के जप द्वारा बड़े-बड़े शत्रुओं का भी उच्चाटन हो जाता है ॥१९॥

तारहृज्जं शरत्कामः कूटत्रयमुदीरयेत् ।
कामशक्तिस्ततस्तारं फडुच्चाटनको मनुः ।।२०।।

तार (ॐ), हृज्ज (झ), शरत् (सौः), काम (क्लीं), कूटत्रय, काम (क्लीं), शक्तिः (सौः), तार (ॐ) फट् कहे। यह उच्चाटन का मन्त्र है ॥२०॥

दशवारं जपेनैव मन्त्रेण परमेश्वरी ।
रिपुमुच्चाटयेद्देवि सार्वभौममपि प्रिये ।।२१।।

हे प्रिये ! हे परमेश्वरि ! हे देवि ! सम्पूर्ण पृथ्वी मण्डल स्थित शत्रु का भी इस मन्त्र के दशवार ही जप करने मात्र से उच्चाटन हो जाता है ॥२१॥

(७) शान्तिकरण

रवौ जपेन्मनुं देवि दशवारं यथाविधि ।
त्रिवारं सर्वरोगाणां सद्यः शांतिर्भविष्यति ।।२२।।

हे देवि ! रविवार को निर्दिष्ट मन्त्र का विधिपूर्वक दशबार जप करे। इस प्रकार कुल तीन बार जप करने से सभी प्रकार के रोगों की शीघ्र ही शान्ति हो जावेगी ॥२२॥

तारं शरत्पराकामः कूटत्रयमतः परम् ।
कामः परा शरत्तारं फट्शांतिककरो मनुः ।।२३।।

तार (ॐ), शरत् (सौः), परा (ह्रीं), काम (क्लीं) फिर कूटत्रय, काम (क्लीं), परा (ह्रीं), शरत् (सौः), तार (ॐ) फट् यह शान्ति का मन्त्र है ॥२३॥

रोगायमतिवृष्टिनां ग्रहाणां सुरवंदिते ।
उपद्रवस्य सर्वस्य सद्यःशांतिर्भविष्यति ।।२४।।

हे सुरवंदिते (देवताओं द्वारा वन्दनीया) ! इस मन्त्र के प्रयोग से रोग, अतिवृष्टि, ग्रहादि के कारण उत्पन्न सभी प्रकार के उपद्रवों की शीघ्र शान्ति हो जावेगी ॥२४॥

(८) पुष्टिकरण

रवौ स्नात्वा जपेन्मूलं दशवारं महेश्वरि ।
पिपासार्त्तनराग्रे च महावृष्टिश्च जायते ।।२५।।

हे महेश्वरि ! रविवार के दिन स्नान कर प्यास से आतुर मनुष्य के आगे दश बार ही इस मूल मन्त्र का जप करने से महावृष्टि होती है ॥२५॥

तारं मारं स्मरं तारं देविकूटत्रयं ततः ।
तारं स्मरो मारतारौ फट् पौष्टिकरो मनुः ।।२६।।

तार (ॐ), मार (क्लीं), स्मर (क्लीं), तार (ॐ) फिर कूटत्रय तब तार, स्मर, मार, तार तथा अन्त में फट् यह पुष्टिकर मन्त्र है ॥२६॥

दुर्बलनराणां च पितॄणां च दिवौकसां ।
सकृदुच्चारमात्रेण महापुष्टि प्रजायते ।।२७।।

इसके एक बार उच्चारण मात्र से ही दुर्बल मनुष्यों, पितरों तथा देवताओं की महान पुष्टि होती है ॥२७॥

(९) शान्तानिक

रवौ जपेन्मनुर्देवि साधको देवतागृहे ।
येन जप्तेन बंध्यायाः भवेत्पुत्रो नृपेश्वरः ।।२८।।

हे देवि ! यदि देवमन्दिर में रविवार को मन्त्र जप करे, तो इस जप से बन्ध्या को भी राजा के समान पुत्र उत्पन्न होता है ॥२८॥

तारं शरच्छरत्तारं ततः कूटत्रयं स्मरेत् ।
तारं शरच्छरत्तारं फट् शांतानिकोमनुः ।।२९।।

तार (ॐ), शरत् (सौः), पुनः शरत् फिर तार शरत् तब कूटत्रय फिर तार शरत् और शरत् तथा तार के अन्त में फट् के योग से शांतानिक (सन्तान प्रद) मन्त्र बनता है ॥२९॥

बंध्यायाः काकबन्ध्यायाः मृतपुत्र्याः सुरेश्वरी।
पुत्रा भवंति भूमिशाः स्वकुलैकप्रदीपकः ।।३०।।

हे सुरेश्वरि ! इसके प्रयोग से बन्ध्या (जिसे सन्तान ही न हो), काक बन्ध्या (एक बार ही हुई हो), जिसके पुत्र होकर मर जाते हों ऐसी स्त्रियों को भी अपने कुल में दीपक के समान, राजा (समृद्धिशाली) पुत्र होते हैं ॥३०॥

(१०) मौक्तिक

रवौ प्रातर्जपेन्मन्त्रं तत्त्वरूपं महेश्वरि।
यस्योच्चारणमात्रेण मौक्तिकं जायते ध्रुवम् ।।३१।।

रविवार को इस तत्त्वरूप मन्त्र का जप करे, जिसके उच्चारण मात्र से निश्चित मौक्तिक (मुक्तिदायक) हो जाता है ॥३१॥

तारं रमा मारतारौ कूटत्रयमुदीरयेत्।
तारं रमा मारतारौ फण्मौक्तिककरोस्ययम् ।।३२।।

तार (ॐ), रमा (श्रीं), मार (क्लीं) और तार, कूटत्रय, तार रमा, मार और तार, फट् यह मौक्तिक (मुक्तिदायक) मन्त्र है ॥३१॥

इतीदं परमं गुह्यं रहस्यं त्रिदिवौकसाम्।
गोप्यं गुप्ततमं देवि न प्रकाश्यं कदाचन ।।३३।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये दशप्रयोगविधिर्नाम त्रयोदशपटलः ॥ १३ ॥

हे देवि ! यह देवताओं के लिए भी अत्यन्त गोपनीय, गुह्यों में भी सर्वाधिक गुप्त है। इसको कभी भी अपात्र के सम्मुख प्रकाशित न करे ॥३३॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का
दशप्रयोगविधिनामक तेरहवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥



चतुर्दशपटलः

पञ्चरत्नेश्वरी मन्त्रोद्धार

।। श्रीभैरव उवाच ।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पंचरत्नेश्वरीं मनुम्।
यं जप्त्वा साधकः शीघ्रं विचरेद्भैरवो यथा ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! पञ्चरत्नेश्वरी मन्त्रों को कहता हूँ, जिसका जप कर साधक शीघ्र ही भैरव की भाँति विचरण करता है ।।१।।

त्रिकूटा षोडशी चैव बाला च सुमुखी तथा।
तारा स्यात्पंचमी देवि पंचरत्नेश्वरी स्मृता ।।२।।

त्रिकूटा, षोडशी, बाला, सुमुखी तथा तारा ये पाँच देवियाँ पञ्चरत्नेश्वरी कही गयी हैं ।।२।।

एतासां मन्त्र जाप्येन कलौ सिद्ध्यति षोडशी।
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यान्नमामि परमेश्वरी ।।३।।

इनके मन्त्रों का जप करने से कलियुग में भी षोडशी देवी सिद्ध हो जाती हैं अन्यथा सिद्धि की हानि होती है। यह मैं परमेश्वरी को नमस्कार पूर्वक कह रहा हूँ ।।३।।

एतासां मूल मन्त्राश्च सर्वतंत्रेषु गोपितः।
प्रवक्ष्यामि तव प्रीत्या कदाचिन्न प्रकाशयेत् ।।४।।

इनके मूल मन्त्र सभी तंत्रों में निहित हैं। तथापि मैं तुम्हारी प्रसन्नता हेतु उन्हें तुमसे कहता हूँ, किन्तु उन्हें जिस किसी से प्रकंट नहीं करना चाहिये ।।४।।

त्रिकूटा मन्त्रोद्धार

वेधा वल्लिं जिष्णुं मोहार्ण माया शोभां शक्तिर्वारुणं।
कांतिमोहौ माया शक्तिर्वारुणं मोहमाया।
विद्येयं स्याद्देवि पंचत्रयोर्णा ।।५।।

हे देवि ! वेधा (क), वल्ली (ए), जिष्णु (इ), मोहार्ण (ल), माया (ह्रीं), शोभा (ह), शक्ति (स), वारुण (क), कांति (ह), मोह (ल), माया (ह्रीं), शक्ति (स), वारुण (क), मोह (ल), माया (ह्रीं) इन पन्द्रह बीजों से **क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं** यह पंचदशी (पन्द्रह वर्णों वाली) विद्या निष्पन्न होती हैं ।।५।।

षोडशी मन्त्रोद्धार

लक्ष्मी परा मदन वाग्भव शक्तियुक्ता
तारं च भूमि कमले कथितापि विद्या।

पञ्चदशपटलः

कार्तिक दीपदान विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अथाहं कथयाम्यद्य दीपदानविधिं परम् ।
श्रीविद्याषोडशाक्षर्य्याः सर्वाभिप्सितसिद्धिदा ।।१।।

श्रीभैरव बोले–आज मैं सब प्रकार की सिद्धि देने वाली श्रीविद्याषोडशाक्षरी की श्रेष्ठ दीपदान विधि का वर्णन करता हूँ ।।१।।

सुदिने कार्तिकस्यादिवासरे षोडशाक्षरीम् ।
त्रिकूटां दीपरूपां च पूजयेत्परमेश्वरी ।।२।।

हे परमेश्वरि ! कार्तिक मास के प्रथम दिन को षोडशाक्षरी दीपस्वरूपिणी त्रिकूटा देवी का पूजन करे ।।२।।

मुहूर्त्ते शुभदे ब्राह्मे उत्थाय शयनाच्छिवे ।
स्नात्वा कृत्वा नित्यकर्म दीपदानार्चनं भवेत् ।।३।।

हे शिवे ! शुभदायक ब्राह्म मूहुर्त में शयन से उठकर स्नान कर, नित्य कर्म सम्पन्न कर दीपदान की पूजा होती है ।।३।।

विधिवद्धरणौ यन्त्रे त्रिकोणं बिन्दुभूषितम् ।
विलिप्य देवतां ध्यात्वा पात्रमानीय साधकः ।।४।।
सौवर्णं राजतं ताम्रं यथाशक्त्या महेश्वरि ।
वर्तिं स्वर्णमयीं कृत्वा गोघृतेन च पूरयेत् ।।५।।

हे महेश्वरि ! इस हेतु साधक धरती पर त्रिकोण एवं बिन्दु से सुशोभित यन्त्र विधिवत् लिखकर देवता का ध्यान कर यथाशक्ति सोने, चाँदी या ताँबे का पात्र लेकर और स्वर्णमयी बत्ती बनाकर उसे घी से भर देवे ।।४-५।।

त्रिकूटादीपदानस्य पूजायाः ऋषिरीश्वरः ।
पंक्तिश्छंदो महादेवी त्रिकूटादेवतेरिता ।।६।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतं ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।७।।

त्रिकूटा दीपदान पूजन में ऋषि ईश्वर, पंक्ति छन्द, महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष में विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य त्रिकूटादीपदानपूजामन्त्रस्य ईश्वरऋषिः, पंक्तिश्छन्दः महादेवी त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः ।)** ।।६-७।।

सदाशिवर्षिन्यासेन शृंखलान्यासकेन च ।
षोढान्यासक्रमेणैव देहं व्याप्य महेश्वरी ।।८।।
आसनं चैव सम्पूज्य साधको मन्त्रसाधकः ।
ईश्वर्यादिन्यासेन मातृकान्यासकेन च ।।९।।
देहं व्याप्य महेशानि कुर्यादासनशोधनम् ।
भूतशुद्धिक्रमं कृत्वा प्राणार्पणविधिं ततः ।।१०।।
त्रिकोणे पूजयेद् गंङ्गंगां यमुना च सरस्वतीम् ।
कूटत्रयेण श्रीबिंदौ श्रीविद्यां मूलविद्यया ।।११।।

हे महेश्वरि ! मन्त्र की साधना करने वाला साधक पहले सदाशिव ऋषिन्यास, शृङ्खलान्यास, षोढ़ान्यास, ईश्वरादिन्यास, मातृकान्यास के द्वारा अपने देह में न्यासोक्त तत्त्वों को व्याप्त कर आसन पूजन करे। हे महेशानि ! देह न्यास करके वह आसन शुद्धि, भूत- शुद्धि, करके प्राणार्पण (प्राण प्रतिष्ठा) विधि को सम्पन्न करे। तब त्रिकोण के तीनों कोणों में वामावर्त क्रम से गङ्गा, यमुना एवं सरस्वती का पूजन करे। तत्पश्चात् कूटत्रय से या श्रीविद्या के मूलमन्त्र से श्रीविद्या का बिन्दु पर पूजन करे ॥८-११॥

मूल मन्त्र

लक्ष्मी माया परा लक्ष्मीः कामश्चन्द्रः शरत्ततः ।
दीपवर्यं गृहाणेति कूटत्रयमुदीरयेत् ।।१२।।
शरदादि रमार्णांतं कुर्याद्बीजविपर्ययम् ।
अनेन मन्त्रराजेन दीपपात्रं च पार्वती ।।१३।।
त्रिकोणे स्थापयेद्देवि पश्चिमाभिमुखं ततः ।
मूलमंत्रेण प्रज्वाल्य प्रदीपस्य महेश्वरी ।।१४।।

हे पार्वती ! लक्ष्मी (श्रीं), माया (ह्रीं), परा (ह्रीं), लक्ष्मी (श्रीं), काम (क्लीं) चन्द्र (ऐं), शरत् (सौः) दीपवर्यं गृहाण कहकर कूटत्रय कहे। फिर शरद, चन्द्र, काम, लक्ष्मी, परा, माया, रमा (श्रीं) आदि मन्त्रों का वाचन करे। इस प्रकार निष्पन्न **"श्री ह्रीं, ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः दीपवर्यं गृहाण कूटत्रय सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं** इस मन्त्रराज से हे देवि ! दीपपात्र को पश्चिमाभिमुख रखे। तब हे महेश्वरि ! उसे मूलमन्त्र से प्रज्ज्वलित करे ॥१२-१४॥

तत्र पूर्वोक्तमंत्रेण लयांगं पूजयेच्छिवे ।
गणेशवरुणौ धर्मकुबेरौ पूजयेत्ततः ।।१५।।

हे शिवे ! तब पूर्वोक्त मन्त्र से (लयांग) पूजन करके गणेश, वरुण, धर्म, कुबेर आदि का पूजन करे ॥१५॥

करालं विकरालं च संहारं रुरुभैरवम् ।
महाकालं च कालाग्नीं सुभोन्मति महेश्वरि ।।१६।।

सम्पूज्य त्रिपुरां तारां कालीं भैरव भैरवीम्।
बालां च त्रिपुरेशानीं कूटत्रयेण पूजयेत्।।१७।।

तब कराल, विकराल, संहार, रुरुभैरव, महाकाल, कालाग्नी, शुभ! और उन्मत्त नामक भैरवों का पूजन कर, त्रिपुरा, तारा, काली, भैरवी, बाला, त्रिपुरेशानी नामक देवियों का कूटत्रय से पूजन करे ॥१६-१७॥

कामेश्वरीः परशिवां देवीं कामेश्वरीं शिवं।
कालाग्नीं कामराजं च पूजयेन्मूलविद्यया।।१८।।

परम कल्याणकारिणी कामेश्वरी देवी, कालाग्नि, कामराज शिव का मूलमन्त्र से पूजन करे ॥१८॥

गन्धार्घ्यपुष्पधूपादि दीपनैवेद्यचामरैः।
सम्पूज्य दीपवर्याय दद्यात्स्वर्णतुलार्धकम्।
साधकस्य पुनर्देवि भवेत्सिद्धि यथेप्सितं।।१९।।

गन्ध, अर्घ्य, धूप तथा दीप, नैवेद्य, चामर आदि द्वारा दीपवर्य का पूजन कर आधा तोला (मान विशेष) स्वर्णदान करना चाहिये। ऐसा करने से साधक की इच्छानुकूल सिद्धि होती है ॥१९॥

दीपाग्रे च जपेन्मूलं ततः पाठं चरेत्ततः।।२०।।
होमं दशांशतः कार्यः पायसैः शर्करान्वितैः।
सम्पूज्यविधिवद्विप्रं प्रणमेद्योनिमुद्रया।।२१।।

पुनः (इसके बाद) दीपक के सम्मुख मूलमन्त्र का जप, तदनन्तर पाठ करे। तत्पश्चात् खीर और चीनी से दशांश होम करे और विधिपूर्वक ब्राह्मण का पूजन कर योनिमुद्रा द्वारा उसे प्रणाम करे॥२०-२१॥

देवीमयं विसृज्यार्घं दीपं संहारमुद्रया।
साधकाय ततो दीपं देवीरूपं समर्पयेत्।।२२।।

पहले देवी स्वरूप उस दीपक का संहारमुद्रा से विसर्जन कर देवी स्वरूप उस दीप को साधक (गुरु) को समर्पित करे ॥२२॥

इत्येवं पूजयेद्दीपं देवीरूपं यथाविधि।
किं किं न लभते कामं साधको मन्त्रसाधकः।।२३।।

इस प्रकार देवी स्वरूप दीपक का विधिपूर्वक पूजन कर मन्त्रसाधक कौन-कौन सी कामनायें नहीं प्राप्त कर लेता ? अर्थात् सब कुछ प्राप्त कर लेता है ॥२३॥

कुर्याद्दीपदानं हि त्रिकूटां महेश्वरि।
दत्तं तेनैव त्रैलोक्यं सुमेरुसहितं शिवे।।२४।।

हे शिवे ! हे महेश्वरि ! त्रिकूटा का जिसने उपर्युक्त रीति से दीपदान कर लिया, उसने मानो सुमेरु पर्वत के सहित तीनों लोकों का दान कर लिया है ॥२४॥

इत्येवं पटलं गुह्यं रहस्यातिरहस्यकं ।
अप्रकाश्यं परं देवि गोपनीयं विशेषतः ।।२५।।

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये कार्तिकदीपदानविधिनाम पञ्चदशपटलः ॥ १५ ॥

यह अत्यन्त गोपनीय रहस्य से भी अधिक रहस्यमय पटल अनाधिकारी से न प्रकाशित करने योग्य तथा विशेष रूप से गोपनीय है ।।२५।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का कार्तिकदीपदानविधि नामक पन्द्रहवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥१५॥



षोडशपटलः

शक्तिपूजा विधि

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अथ वक्ष्यामि देवेशि शक्तिपूजां यथाविधि।
त्रिकूटायाः परं गुह्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवेशि ! अब मैं त्रिकूटा की शक्ति पूजा का विधिवत् वर्णन करूँगा, जो परम गुह्य है तथा कभी भी जिस किसी से प्रकाशित करने योग्य नहीं है ।।१।।

दिने शुभे महादेवि ततो गत्वार्चनस्थलीम्।
समाप्य नित्यकर्मादौ निशादौ शक्तिमर्चयेत् ।।२।।

हे महादेवि ! शुभ दिन (मुहुर्त) में पूजा-स्थल पर जाकर प्रारम्भ में नित्यकर्म सम्पन्न करके रात्रि के प्रारम्भ में शक्ति की पूजा करे ।।२।।

श्रीशक्तिपूजासारस्य ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।३।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम्।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः स्मृतौ बुधैः ।।४।।

श्रीशक्तिपूजा सार के सदाशिव ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक धर्मार्थकाममोक्षार्थ में विनियोग विद्वानों द्वारा बताया गया है। **(अस्य श्रीशक्तिपूजासारस्य सदाशिव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः, त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धमार्थकाममोक्षेषु विनियोगः।)** ।।३-४।।

सदाशिवर्षिन्यासेन शृङ्खलान्यासकेन च।
षोढान्यासक्रमेणैव देहं व्याप्य महेश्वरि ।।५।।
आसनं चैव संशोध्य भूमिसंशोध्य साधकः।
भूतशुद्धिं विधायाथ प्राणार्पणविधिं ततः ।।६।।

हे महेश्वरि ! क्रमशः सदाशिव ऋषिन्यास, शृङ्खलान्यास, षोढान्यास से शरीर में न्यास करे। तब साधक भूमि का संशोधन कर, भूतशुद्धि करके, प्राण-प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न करे ।।५-६।।

भूमौ यन्त्रं लिखित्वा तु सिन्दूरेण महेश्वरि।
बिंदु त्रिकोणं षट्कोणं वृत्तं नागदलांकिताम् ।।७।।
भूगृहं षोडशी शक्त्याः पूजायंत्रमुदाहृतम्।
यन्त्रं विलिख्य दीर्घं च विश्रुतं परमेश्वरि ।।८।।

हे परमेश्वरि ! हे महेश्वरि ! भूमि पर सिन्दूर से यन्त्र लिखे—यह बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल तथा भुपूर से युक्त षोडशी शक्ति का पूजायन्त्र कहा गया है। इस प्रसिद्ध यन्त्र का विस्तृत रूप लिखे ॥७-८॥

स्वशक्तिं परशक्तिं वा नग्ना मुक्तकचां शिवे।
मालाभरणशोभाढ्यां स्वर्णकंकणराजितां।
स्नात्वा अमानीय देवेशि स्वयं नग्नोऽत्र साधकः ॥९॥

हे शिवे ! तब साधक अपनी शक्ति (पत्नी) या परकीया शक्ति (स्त्री) को जो नग्न हो तथा जिसके केश खुले हुए हों तथा जो माला और आभूषणों से सुशोभित, जिसके हाथ सोने के कंगन से शोभायमान हों, ले आवे तथा हे देवेशि ! उसे स्नान कराकर स्वयं भी नग्न हो जाय ॥९॥

गणेशं धर्मराजं च वरुणं च कुबेरकम्।
सम्पूज्य साधको गन्धाक्षतपुष्पैः सुभक्तितः ॥१०॥

तब साधक भक्तिपूर्वक गणेश, धर्मराज, वरुण, कुबेर का गन्ध अक्षत, पुष्प से पूजन करे ॥१०॥

करालं विकरालं च संहारं रुरुभैरवम् ॥११॥
कालाग्नीं च महाकालं सुपमुन्मत्तभैरवम्।
अष्टपत्रेषु सम्पूज्य गंधाक्षतप्रसूनकैः ॥१२॥

तत्पश्चात् कराल, विकराल, संहार, रुरुभैरव, कालाग्नि, महाकाल, शुप और उन्मत्त नामक भैरवों की अष्टदल कमल के आठ पत्रों में दक्षिणावर्तक्रम से क्रमशः गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे ॥११-१२॥

त्रिपुरां भैरवीं बालां तारां च सुमुखी प्रिये।
भगमालां च षट्कोणे पूजयेद्गंधपुष्पकैः ॥१३॥

हे प्रिये ! त्रिपुरा, भैरवी, बाला, तारा, सुमुखी, भगमाला इन छः देवियों का गन्ध पुष्पादि से यन्त्र के षट्कोण में पूजन करे ॥१३॥

षट्कोणं चैव सम्पूज्य त्रिकोणं पूजयेत्ततः।
गङ्गा च यमुना चैव द्वयोर्मध्ये सरस्वतीम्।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्धूपदीपादितर्पणैः ॥१४॥

षट्कोण की पूजा करने के पश्चात् त्रिकोण में गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, एवं तर्पण आदि से गङ्गा, यमुना और उन दोनों के मध्य सरस्वती का पूजन करे ॥१४॥

बिंदौ कामेश्वरीं देवि त्रिकूटां षोडशाक्षरीम् ॥१५॥
कामेश्वरं च कालाग्नीं कामराजं महेश्वरम्।
गंधाक्षतैश्च सम्पूज्य तत्र घंटारवं चरेत् ॥१६॥

तब हे देवि ! बिन्दु पर महेश्वरी त्रिकूटा षोडशाक्षरा कामेश्वरी का तथा कालाग्नी कामराज कामेश्वर का गन्धाक्षत से पूजन कर घंटा ध्वनि करे ॥१५-१६॥

यन्त्रशक्ति निवेद्यादौ तद्दक्षिणकरांतरे ।
उपविश्य स्वयं चैव पूजां कुर्याद्यथाविधि ।
कूटत्रयेण देवेशि गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।।१७।।

हे देवेशि ! पहले यन्त्र को शक्ति को निवेदित कर अर्थात् निकट शक्ति को उसके दक्षिण भाग में स्थापित कर स्वयं विधिपूर्वक तीन कूटों का प्रयोग कर गन्धाक्षत पुष्प से शक्ति का पूजन करे ॥१७॥

त्रिपुरां मस्तके पूज्य कुंतले त्रिपुरेश्वरी ।
ललाटे त्रिषुराध्यक्षां भ्रुवौ त्रिपुरवासिनीम् ।।१८।।

त्रिपुरा का उस (शक्ति) के मस्तक पर, त्रिपुरेश्वरी का केशों में, ललाट पर त्रिपुराध्यक्षा तथा भौहों में त्रिपुरवासिनी का पूजन करे ॥१८॥

नेत्रयोस्त्रिपुरेशानीं कर्णयोस्त्रिपुरार्चिताम् ।
नासिकायां त्र्यक्षरीति गंडयोस्त्रिपुरांबिकाम् ।।१९।।

दोनों नेत्रों में त्रिपुरेशानी, दोनों कानों में त्रिपुरार्चिता, नासिका में त्र्यक्षरी, गण्ड-स्थल में त्रिपुराम्बिका का पूजन करे ॥१९॥

मुखे त्रिपुरविंध्या च कंठे त्रिपुरमालिनीम् ।
स्कन्धयोस्त्रिपुरां ध्यायेद्धस्तयोस्त्रिपुरोत्तमाम् ।।२०।।

मुख में त्रिपुरविन्ध्या, कण्ठ में त्रिपुरमालिनी, कन्धों में त्रिपुरा तथा हाथों में त्रिपुरोत्तमा का ध्यान करते हुये पूजन करे ॥२०॥

त्रिपुराक्षीं वक्षसि च कुचयोस्त्रिपुरेकृताम् ।
कुक्षौ त्रिपुरमुक्तिं च पार्श्वयोस्त्रिपुराकलाम् ।।२१।।

वक्षस्थल में त्रिपुराक्षी, स्तनों में **त्रिपुरेकृता**, काँखों में त्रिपुरमुक्ति, तथा पार्श्वों में त्रिपुराकला का पूजन करे ॥२१॥

पृष्ठे त्रिपुरकेशीं च नाभौ त्रिपुरसुन्दरीम् ।
योनौ त्रिपुरयोनिं च गुह्ये त्रिपुरगोपिकाम् ।।२२।।

पीठ में त्रिपुरकेशी, नाभि में त्रिपुरसुन्दरी, योनि में त्रिपुरयोनि एवं गुह्य स्थल (गुदा) में त्रिपुरगोपिका का पूजन करे ॥२२॥

उर्वोस्त्रिपुरमन्त्रेशी जान्वोस्त्रिपुरजंघमाम् ।
जंघयोस्त्रिपुराज्येष्ठां पादयोस्त्रिपुरार्चिताम् ।।२३।।

जांघों में त्रिपुरमन्त्रेशी, घुटनों में त्रिपुरजंघमा, जघन (घुट्ठियों) में त्रिपुरा ज्येष्ठा तथा दोनों पैरों में त्रिपुरार्चिता का पूजन करे ॥२३॥

पादादिमूर्धपर्यंतं गात्रे त्रिपुरसुन्दरीम् ।
पूजयेच्च महादेवि गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।।२४।।

हे महादेवि ! पैर से मस्तक तक सम्पूर्ण शरीर में त्रिपुरसुन्दरी का गन्धाक्षत, पुष्प से पूजन करे ।।२४।।

विविधैर्कुसुमैर्देविर्भक्ष्यै भोज्यैर्विशेषतः ।।२५।।
माल्यैराभरणैर्दिव्यैः शक्तिं सम्पूज्य साधकः ।
मूलेनात्मानमभ्यर्च्य भोगं कुर्याद्विशेषतः ।।२६।।

हे देवि ! अनेक प्रकार के पुष्पों, भक्ष्य, भोज्य, माला, आभूषणों से साधक शक्ति का पूजन करके मूलमन्त्र से अपने आपका पूजन कर विशेष रूप (शिव-शक्ति रूप) से भोग करे ।।२५-२६।।

द्रव्येण विविधाहारैः शक्तिसंतर्प्य पार्वती ।
रेतस्त्रावे जपेन्मूलं यथा शक्त्या महेश्वरि ।।२७।।

हे पार्वती ! हे महेश्वरि ! अनेक द्रव्य तथा आहार आदि से शक्ति को संतृप्त (पूर्णतः सन्तुष्ट) कर रेतस्त्राव के समय मूलमन्त्र का यथाशक्ति जप करे ।।२७।।

रेतसा तर्पयेद्देवीं महात्रिपुरसुन्दरीम् ।
संतर्प्य विविधैः पुष्पैः प्रणमेद्योनिमुद्रया ।।२८।।

तब रेतस से देवी महात्रिपुरसुन्दरी का तर्पण करके उन्हें अनेक प्रकार के पुष्पों से संतृप्त कर योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे ।।२८।।

आत्मानं शिवरूपं च श्रीदेवीं शक्तिरूपिणीम् ।
विसर्जयेत्तु विद्यायां नत्वा संहारमुद्रया ।।२९।।

अपने को शिवरूप तथा श्रीदेवी को शक्तिस्वरूप मानकर मूलविद्या से नमस्कार कर संहार मुद्रा से विसर्जन करे ।।२९।।

इति श्रीशक्तिपूजायाः पटलं गुह्यमीश्वरी ।
अदातव्यमभक्ताय गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।३०।।

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये शक्तिपूजाकथनंनाम षोडशपटलः ।। १६ ।।

हे ईश्वरी ! शक्ति पूजा का यह पटल अत्यंत गोपनीय है।

भक्तिहीन पुरुष के लिए न देने योग्य तथा अपनी योनि की भाँति गुप्त रखने योग्य है ।।३०।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का शक्तिपूजाकथन नामक सोलहवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ।।१६।।



त्रिकूटारहस्यम्

स्तुति (कवच) खण्ड

सप्तदशपटलः

वज्र पञ्जर कवच

।। श्रीभैरव उवाच।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचानि च षोडश।
येषां पाठैकमात्रेण देवीदर्शनमाप्नुयात्।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! मैं उन १६ कवचों को कहता हूँ, जिनके एक पाठ मात्र से ही साधक देवी का दर्शन प्राप्त कर लेता है, उन्हें तुम सुनो ॥१॥

तत्रादौ कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम्।
गुह्यं वक्ष्यामि ते देवि न प्रकाश्यं कदाचन।।२।।

हे देवि ! उनमें सर्वप्रथम वज्रपञ्जर नामक दिव्य, गोपनीय, अपात्र के सम्मुख कभी भी न प्रकाशित करने योग्य, कवच तुमसे कहूँगा ॥२॥

वज्रपञ्जरकस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः।
पंक्तिश्छन्दो महादेवी त्रिकूटादेवतेरिता।।३।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतं।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः।।४।।

इस वज्र पञ्जरक नामक कवच के शिव ऋषि, पंक्ति छन्द, महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक तथा धर्मार्थकाममोक्षो में विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य वज्रपञ्जरक कवचस्य शिव ऋषिःपंक्तिश्च्छन्दः। महादेवी त्रिकूटा देवता ऐं बीजः सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः।)** ॥३-४॥

ॐ ह्रीं श्रीं बाला सदा पातु हस्तौ मे नखांतकौ।
ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरी पातु वक्ष्यो नाभ्यंतमीश्वरी।।५।।

हे ईश्वरी ! ॐ ह्रीं श्रीं बाला सदैव नख पर्यन्त मेरे दोनों हाथों की तथा ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरी नाभिपर्यन्त वक्षस्थलों की रक्षा करे ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं षोडशी पातु पृष्ठं पार्श्वांतकं शिवे।
ऐं सौः त्वरिता पातु कटिं मीढ्यांतकं तथा।।६।।

हे शिवे ! ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं षोडशी दोनों पार्श्वों तक फैले हुए पृष्ठ भाग की, ऐं सौः त्वरिता मेढ्रस्थान तक विस्तृत कटि की रक्षा करें ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीं लघिमा पातु उरुं जंघांतकं शिवे ।
शिरसः पादपर्यंतं पादादि मस्तकान्तकम् ।
त्रिकूटा षोडशी विद्या पायान्मे सकलं वपुः ।।७।।

हे शिवे ! ॐ ह्रीं श्रीं लघिमा देवी जाँघ से टखने तक पैरों की तथा शिर से पैर तक एवं पैर से शिर तक मेरे समस्त शरीर की त्रिकूटा षोडशी विद्या रक्षा करें ॥७॥

श्रीं श्रीं श्रीं ह ह हा ह हा हि श श शा श्री षोडशी हसौः ।
क्लीं पायात्सकलासु दिक्षु सततं ह्रीं ह्रीं महाषोडशी ।।८।।
सौः सौः सौः सः सः हसौ भगवती देवि त्रिकूटा देवता ।
अग्नेरम्बुनिधेप्लवाश्च सशिराश्चौराश्च मृत्यो भवेत् ।।९।।

श्रीं श्रीं श्रीं ह ह हा ह हा हि श श शा श्री षोडशी ह्सौ क्लीं सभी दिशाओं में तथा ह्रीं ह्रीं महाषोडशी सौः सौः सौः सः सः ह्सौः भगवती त्रिकूटादेवता सदैव मेरी रक्षा करें। इससे अग्नि, जलनिधि की बाढ़, शिर सहित चोरों की मृत्यु हो जाती है ॥८-९॥

इतीदं कवचं दिव्यं त्रिकूटाया रहस्यकम् ।
गोप्यं गुह्यतमं देवि कदाचिन्न प्रकाशयेत् ।।१०।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये वज्रपञ्जरकवचवर्णननाम सप्तदशपटलः ॥१७॥

यह त्रिकूटा के रहस्य पर प्रकाश डालने वाला कवच गोपनीय से भी गोपनीय है। हे देवि ! इसे कभी भी (अयोग्य) से प्रकाशित न करे ॥१०॥

श्री रुद्रयामल तंत्र के त्रिकूटारहस्य का वज्रपञ्जरकवच नामक सत्रहवाँ पटल सम्पूर्ण हुआ ॥१७॥



।। श्रीभैरव उवाच ।।

अद्य चिंतामणिं वक्ष्ये कवचं सारमुत्तमम्।
सर्वसिद्धिमयं देवि सर्वाशापरिपूरकम्।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! आज मैं चिन्तामणि नामक कवच कहता हूँ, जो कवचों में उत्तम सारतत्त्व है तथा सब सिद्धियों को देने वाला एवं सबकी आशाओं को परिपूर्ण करने वाला है ।।१।।

कवचस्यास्य देवेशि ऋषि भैरव उच्यते।
पंक्तिश्छन्दो मया ख्यातं त्रिकूटा देवतेरिता।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम्।
सवार्थसिद्धये देवि विनियोगः प्रकीर्तितः।।३।।

हे देवेशि ! इस कवच के भैरव ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक तथा सर्वार्थ सिद्धि के लिए विनियोग, मेरे द्वारा कहा गया है। (**ॐ अस्य चिन्तामणिकवचस्य भैरवऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वार्थसिद्धये विनियोगः।**) ।।२-३।।

ऐं मे पातु शिरो नित्यं सौं मे नेत्रं सदावतु।
क्लीं मे कर्णौ सदा पातु ॐ मे पातु सनाशिकं।।४।।

ऐं मेरे शिर की नित्य रक्षा करें तथा सौं मेरे नेत्र की सदैव रक्षा करें, क्लीं मेरे दोनों कानों की और ॐ नाशिका के सहित मेरी रक्षा करें ।।४।।

ह्रीं मे मुखं सदा पातु श्रीं मे ओष्ठौ सदावतु।
सौः मे जिह्वा सदा पातु क्लीं मे कंठं सदावतु।।५।।

ह्रीं मेरे मुख की तथा श्रीं मेरे दोनों ओठों की सदा रक्षा करें। सौः मेरी जिह्वा की और क्लीं मेरे कण्ठ की सदैव रक्षा करें ।।५।।

श्रीं मे स्कन्धौ सदा पातु ऐं मे हस्तौ सदावतु।
सौं मे वक्षः सदा पातु क्लीं मे कुक्षौ सदावतु।।६।।

श्रीं मेरे कन्धों, ऐं हाथों, सौं: वक्षस्थल तथा क्लीं मेरी काँखों की सदैव रक्षा करें ।।६।।

श्रीं मे पृष्ठं सदा पातु क्रीं मे पार्श्वौ सदावतु।
कं मे नाभौ सदा पातु एं मे कटिं सदावतु।।७।।

श्रीं मेरी पीठ, क्रीं मेरे पार्श्व भाग, कं नाभि, ऐं मेरे कमर की सदा रक्षा करें ॥७॥

ईं मे शिश्नं सदा पातु लं मे मेढ्रं सदावतु ।
ह्रीं मे उरुं सदा पातु ऐं मे जानु सदावतु ।।८।।

ईं मेरे शिश्न की लं मेढ्र (जननेन्द्रिय) की, ह्रीं जंघों की तथा ऐं घुटनों की सदैव रक्षा करें ॥८॥

हं मे जंघेः सदा पातु ह्रीं मे व्याप्तं सकलं वपुः ।
सं मे दिक्षुः सदा पातु कं मे सकलभीतिषु ।।९।।

हं मेरे जंघे की, ह्रीं मेरे समस्त विस्तृत शरीर की, सं मेरी सभी दिशाओं में एवं कं मेरी सब प्रकार के भयों में सदा रक्षा करें ॥९॥

लं मे पायाद्रणे नित्यं ह्रीं में मृत्युः सदावतु ।
इदं कवचराजेशं श्रीचिंतामणिनामकम् ।।१०।।

लं नित्य युद्ध में मेरी रक्षा करें। ह्रीं मेरी मृत्यु से रक्षा करें। यह श्रीचिन्तामणि नामक कवच, कवचों का राजा, स्वामी है ॥१०॥

गुह्यं मन्त्रमयं दिव्यं सर्वसिद्धिप्रदं शिवे ।
पठेद्रात्रौ महादेवि शुक्लश्रावे महेश्वरि ।।११।।

हे महेश्वरि ! हे शिवे ! यह अत्यन्त दिव्य गोपनीय मन्त्रमय तथा रात्रि में पढ़ने या शुद्ध शुद्ध सुनने पर सब प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाला है ॥११॥

सवार्थदं मंत्रोऽयं च देवीं पुत्रो भविष्यति ।
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम् ।।१२।।
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं साधकेन प्रकाशयेत् ।।१३।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये चिन्तामणिकवचवर्णननाम अष्टादशपटलः ॥१८॥

सर्वार्थ देने वाला यह मन्त्र, देवी पुत्र (देवी का पुत्रवत्) होगा। यह परम रहस्य तुम्हारी भक्ति के कारण मेरे द्वारा कहा गया है। सभी मन्त्रमय इस गुप्त रहस्य को असाधक से न प्रकाशित करे ॥१२-१३॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का चिन्तामणिकवच नामक
अठारहवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥१८॥



एकोनविंशपटलः

जग्न्मङ्गल कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना कथयिष्यामि जगन्मंगलकाभिधम् ।
कवचं परमो देवि निश्चितं परमाद्भुतम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! अब मैं जगन्मङ्गल नामक श्रेष्ठ सुनिश्चित (फलप्रद) परम अद्भुत कवच कहूँगा ॥१॥

जगन्मंगलकाख्यस्य कवचस्य ऋषिः शिवः ।
छंदोमयेरितापंक्तिस्त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथाशक्तिः कामराजश्च कीलकम् ।
सर्वमंगलसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

मेरे द्वारा जगन्मङ्गल कवच के शिव ऋषि, पक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौ: शक्ति, कामराज (क्लीं) कीलक, सभी मङ्गलों की सिद्धि हेतु विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य श्री जगन्मगलकवचस्य शिव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वमंगलसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।।)** ॥३-४॥

।। अथ कवच ।।

ॐ ह्रीं मे मस्तकं पातु जगन्मंगलकारिणी ।
ललाटं पातु मे ॐ श्रीं जगन्मोहनकारिणी ।।४।।

ॐ ह्रीं जगन्मङ्गलकारिणी मेरे मस्तक की तथा ॐ श्रीं जगन्मोहनकारिणी मेरे ललाट की रक्षा करें ॥४॥

ॐ क्लीं मे पातु नेत्रे द्वे जगत् संतोषकारिणी ।
ॐ स्वौः मे पातु कर्णौ च जगत्कल्याणकारिणी ।।५।।

ॐ क्लीं जगत्सन्तोषकारिणी मेरे दोनों नेत्रों की तथा ॐ स्वौ: जगत्कल्याणकारिणी मेरे दोनों कानों की रक्षा करें ॥५॥

ॐ श्रीं नासा सदा पातु जगदैश्वर्यदायिनी ।
ॐ ह्रीं ओष्ठौ सदा पातु जगद्द्रव्येश्वरी सदा ।।६।।

ॐ श्रीं जगदैश्वर्यदायिनी मेरी नासिका की तथा ॐ ह्रीं जगद्द्रव्येश्वरी मेरे ओठों की सदैव रक्षा करें ॥६॥

ॐ ह्रीं मुखं सदा पातु जगद्बीजकारिणी ।
ॐ श्रीं कंठं सदा पातु जगद्रक्षाकरी शिवा ।।७।।

ॐ ह्रीं जगद्बीजकारिणी मेरे मुख की ॐ श्रीं जगद्रक्षाकरीशिवा कण्ठ की सदैव रक्षा करें ॥७॥

ॐ श्रीं स्कन्धौ सदा पातु जगज्जयप्रदा शिवा ।
ॐ ह्रीं हस्तौ सदा पातु जगद्विजयकारिणी ।।८।।

ॐ श्रीं जगज्जयप्रदा शिवा मेरे कन्धों की एवं ॐ ह्रीं जगत्विजयकारिणी मेरे हाथों की सदा रक्षा करें ॥८॥

ॐ श्रीं वक्षः सदा पातु जगद्बलकरीतथा ।
ॐ ह्रीं कुक्षी सदा पातु जगत् वरदायिनी ।।९।।

ॐ श्रीं जगद्बलकरी वक्ष की और ॐ ह्रीं जगत् वरदायिनी कुक्षी की सदा रक्षा करें ॥९॥

ॐ ह्रीं पार्श्वे सदा पातु जगदीशित्वदायिनी ।
ॐ क्लीं पृष्ठं सदा पातु जगच्चिंता महेश्वरि ।।१०।।

हे महेश्वरि ! ॐ ह्रीं जगदीशित्वदायिनी पार्श्व भाग की, ॐ क्लीं जगच्चिंता देवी पृष्ठ भाग की सदा रक्षा करें ॥१०॥

ॐ क्लीं नाभौ सदा पातु जगज्जैत्रप्रदा शिवा ।
ॐ क्लीं शिश्नं सदा पातु जगत्त्रयप्रदा तथा ।।११।।

ॐ क्लीं जगज्जैत्रप्रदा शिवा नाभि की तथा ॐ क्लीं जगत्त्रयप्रदा शिश्न की सदा रक्षा करें ॥११॥

ॐ ह्रीं उरुं सदा पातु जगद्रोगहरा शिवा ।
ॐ ह्रीं जानुं सदा पातु जगदोज्ज्वलमस्तका ।।१२।।

ॐ ह्रीं जगद्रोगहरा शिवा जंघों की और ॐ ह्रीं जगदोज्ज्वलमस्तका जानु की सदा रक्षा करें ॥१२॥

ॐ सौः जंघे सदा पातु जगज्जाम्बुनदप्रदा ।
ॐ सौः सदा पातु जगद्वज्रेश्वरी शिवा ।।१३।।

ॐ सौ: जगज्जाम्बुनदप्रदा टखनों की, ॐ सौ: जगद्वज्रेश्वरी शिवा पैरों की सदा रक्षा करें ॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्वावताद् ब्राह्मी दक्षिणे चापराजिता ।
पश्चिमे पातु कौमारी वाराही चोत्तरेऽवतु ।।१४।।

ॐ ह्रीं ब्राह्मी देवी पूर्व में, अपराजिता देवी दक्षिण में, कौमारी पश्चिम में तथा वाराही देवी उत्तर में रक्षा करें ॥१४॥

आग्नेयां वैष्णवी पातु नैर्ऋत्यां नारसिंहिंका ।
वायव्यां शाम्भवीपायादैशान्यां पातु वैष्णवी ।।१५।।
उर्ध्वं पातु च चामुंडा पार्श्वाधो भुवनेश्वरी ।।१६।।

आग्नेय (अग्निकोण) दिशा में वैष्णवी, नैऋत्य में नारसिंहिका, वायव्य दिशा में शाम्भवी तथा ऐशान्य दिशा में वैष्णवी रक्षा करें। ऊपर की ओर से चामुण्डा तथा नीचे की ओर से भुवनेश्वरी देवी रक्षा करें ॥१५-१६॥

अग्निवाय्वंबुचौरेभ्यो गहनप्लवसंयुगे।
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मां नित्यं त्रिकूटाषोडशाक्षरी ॥१७॥

अग्नि, वायु, चोर, वन या बाढ़ आदि संकट में ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकूटा षोडशाक्षरी नित्य मेरी रक्षा करें ॥१७॥

इत्येदं कवचं गुह्यं जगन्मंगलकाभिधम्।
रहस्यं परमं दिव्यं सर्वमन्त्रमयं शिवे ॥१८॥

हे शिवे! यह जगन्मङ्गल नामक कवच गोपनीय, रहस्यपूर्ण, श्रेष्ठ, दिव्य एवं सभी मन्त्रों का स्वरूप है ॥१८॥

यः पठेदर्धरात्रेषु नग्नी वा मुक्तकुंतला।
तस्य श्रीषोडशीविद्या सिद्धत्याशु न संशयः ॥१९॥

जो आधी रात में नङ्गे होकर, बाल खोलकर इस कवच का पाठ करता है, उसकी श्रीषोडशीविद्या शीघ्र सिद्ध हो जाती हैं, इसमें कोई संशय नहीं है ॥१९॥

रणे राजकुले द्यूते पाठात्सिद्धिः भविष्यति।
किं किन्न साधयेद्देवि कवचस्य प्रसादतः ॥२०॥

युद्ध, राजदरबार (कचहरी), जुये आदि में इसके पाठ से सिद्धि होगी। इस प्रकार हे देवि! इसकी कृपा से क्या-क्या नहीं सिद्ध होता अर्थात् सब कुछ सिद्ध हो जाता है ॥२०॥

इदं ते कवचं देव्याः रहस्यं सर्व कामदम्।
अप्रकाश्यमदातव्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२१॥

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये जगन्मङ्गलकवचवर्णननाम एकोनविंशपटलः ॥१९॥

यह रहस्यमय, सभी कामनाओं को पूरा करने वाला कवच तुमसे कहा गया। यह अपात्रों से प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखने योग्य तथा उन्हें न प्रकाशित करने योग्य है ॥२१॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का जगन्मङ्गलकवच नामक
उन्नीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥१९॥



विंशपटलः

जगन्मोहन कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना कथयिष्यामि जगन्मोहनकाभिधम् ।
कवचं षोडशाक्षर्य्याः धारणात्सिद्धिदं शिवे ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे शिवे ! अब मैं षोडशाक्षरी का जगन्मोहन नामक वह कवच कहूँगा, जो धारण करने से सिद्धि प्रदान करता है ॥१॥

कवचस्यास्य देवेशि ऋषिर्भैरव उच्यते ।
पंक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे मोहने विनियोगकः ।।३।।

हे महादेवि ! जगन्मोहन कवच के भैरव ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष हेतु मोहन में विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य जगन्मोहनकवचस्य भैरव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐ बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे मोहने विनियोगः ।)** ॥२-३॥

ऐं क्लीं बालशिरः पातु मे वक्त्रं सदावतु ।
ॐ श्रीं कंठं च रुद्राणि ह्रीं श्रीं स्कन्धौ महेश्वरी ।।४।।

ऐं क्लीं बालशिर मेरे मुख की तथा ॐ श्रीं रुद्राणी कण्ठ की, ह्रीं श्रीं महेश्वरी स्कन्ध की सदा रक्षा करें ॥४॥

ऐं क्लीं सौः पातु मे हस्तौ महात्रिपुरभैरवी ।
श्रीं क्लीं मे पातु चामुण्डा कुक्षिं नाभ्यतकं तथा ।।५।।

ऐं क्लीं सौः महात्रिपुरभैरवी मेरे हाथों की तथा श्रीं क्लीं चामुण्डा नाभि पर्यन्त मेरी कुक्षि की रक्षा करें ॥५॥

ऐं सौः क्लीं पातु मे दुर्गा जानु गुल्फांगुलि तथा ।
ॐ श्रीं पातु मे ब्राह्मी पादौ च नखसंयुतौ ।।६।।

ऐं सौः क्लीं दुर्गा मेरे घुटनों, टखनों एवं अङ्गुलियों की तथा ॐ श्रीं ब्राह्मी नख सहित मेरे पैरों की रक्षा करें ॥६॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकूटावतु मे वपुः ।
पूर्वादिदिक्षु सततं कएईलह्रीं पातु माम् ।।७।।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकूटा मेरे शरीर की तथा क ए ई ल ह्रीं पूर्वादि दिशाओं में सदैव मेरी रक्षा करे ।।७।।

प्रातर्निशांतमवतात्थ स क ह ल ह्रीं द्यूतादि राजिकुलभीतिषु ।
स क ल ह्रीं पायान्महात्रिपुरसुन्दरि मन्त्रराजः ।।८।।

प्रातः से रात्रि की समाप्ति तक ह स क ह ल ह्रीं तथा द्यूत, राजकुल सम्बन्धी भयों में स क ल ह्रीं रूपी महात्रिपुरसुन्दरी का मन्त्रराज मेरी रक्षा करें ।।८।।

इत्येतत्कवचं देवि जगन्मोहनकाभिधम् ।
पठेद्वा धारयेद्देवि श्रीविद्याऽनेन सिद्ध्यति ।।९।।

हे देवि ! यह जगन्मोहन नामक कवच है, जिसे पढ़ना या धारण करना चाहिये। इससे श्रीविद्या सिद्ध होती हैं ।।९।।

इदं ते कवचं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
गुह्यं सर्वस्वमीशानी प्रशस्यन्न प्रकाशयेत् ।।१०।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये जगन्मोहनकवचवर्णननाम विंशपटलः ।।२०।।

हे देवि ! हे ईशानि ! यह मैं तुम्हारे लिए दिव्य, तीनों लोकों में दुर्लभ, गोपनीय, सर्वस्व, प्रशंसनीय कवच कहता हूँ, जिसे अपात्र को प्रकट नहीं करना चाहिये ।।१०।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का जगन्मोहनकवच नामक बीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ।।२०।।



एकविंशपटलः

जगदीश कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि वक्ष्यामि जगदीशाभिधं परम् ।
कवचं मंत्र गर्भं ते सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! अब मैं जगदीश नामक सब प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाला, मन्त्र को गर्भ में धारण करने वाला, श्रेष्ठ कवच तुमसे कहूँगा ॥१॥

कवचस्यास्य देवेशि ऋषिर्ज्वालाग्निरीरिता ।
पंक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथाशक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

हे देवेशि ! हे महादेवी ! इस कवच के ज्वालाग्नि ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष में विनियोग बताया गया है। **(ॐ अस्य जगदीशाख्य कवचस्य ज्वालाग्निऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकः धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः ।)** ॥२-३॥

ऐं सौः गौरी शिरः पातु नेत्रे श्रीं जगदम्बिका ।
नासां श्रीं नारसिंहीं च ॐ ह्रीं श्रीं तारावतान्मुखम् ।।४।।

ऐं सौः गौरी मेरे शिर, श्रीं जगदम्बिका नेत्र, श्रीं नारसिंही नाक की एवं ॐ ह्रीं श्रीं तारा मुख की रक्षा करें ॥४॥

हृदयं ह्रीं चंडिकायां नाभिं नारायणी ह्यौः ।
ॐ श्रीं शिश्नं भवानी च गुह्यं में गुह्यकेशरी ।।५।।

ह्रीं चण्डिका हृदय की तथा ह्यौः नारायणी देवी नाभि की एवं ॐ श्रीं भवानी शिश्न की और गुह्यकेश्वरी मेरे गुह्य अङ्गों की रक्षा करें ॥५॥

ॐ श्रीं जानुद्वयं ज्योतिः ॐ जंघे जगत्प्रिया ।
पादौ श्रीं ह्रीं परादेवि वपु ह्रीं जगदीश्वरी ।।६।।

ॐ श्रीं ज्योति दोनों घुटनों की और ॐ जगत्प्रिया टखनों की, श्रीं ह्रीं परादेवी पैरों की तथा ह्रीं जगदीश्वरी समस्त शरीर की रक्षा करें ॥६॥

दिक्षु पातु निशायां च द्यूतजिन्नृपभीतिषु ।
चौर सिंहादि पोतेषु पायाद् ह्रीं षोडशाक्षरी ।।७।।

दिशाओं में, रात्रि में, जुए में, राजभय, चोर, सिंहादि तथा जलयान सम्बन्धी सङ्कटों में ह्रीं षोडशाक्षरी रक्षा करें ॥७॥

इतीदं कवचं दिव्यं मन्त्रगर्भं महेश्वरि ।
पठनाद्धारणान्मन्त्रं जगदीशत्वमाप्नुयात् ॥८॥

हे महेश्वरि ! मन्त्र को छिपाये हुए इस दिव्य कवच के पढ़ने या धारण करने से साधक जगदीशत्व को प्राप्त हो जाता है ॥८॥

इदं कवचमीशानि गुह्यं सर्वमनुत्तमम् ।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥९॥

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये जगदीशकवचवर्णननाम एकविंशपटलः ॥२१॥

हे ईशानि ! यह गोपनीय सर्वश्रेष्ठ कवच है। इसे अभक्तों को नहीं देना चाहिये तथा अपनी योनि के समान इसकी रक्षा करनी चाहिये ॥९॥

श्री रुद्रयामलतंत्र के त्रिकूटारहस्य का जगदीशकवच नामक
इक्कीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥२१॥



द्वाविंशपटल:

कामिका कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना शृणु देवेशि कवचं कामिकाभिधम् ।
यः पठित्वा भवेत्सद्यो विद्याधरजनेश्वरः ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवेशि ! अब तुम कामिका नामक कवच सुनो, जिसे पढ़कर साधक शीघ्र ही विद्याधरों का राजा हो जाता है ।।१।।

कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः ।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः कामराजस्तु कीलकम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

हे देवेशि ! इस कवच के सदाशिव ऋषि, पंक्ति छंद, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, कामराज क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष हेतु विनियोग कहा गया है । (**ॐ अस्य कामिकानामककवचस्य सदाशिवऋषिः पंक्तिश्छन्दः ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थेषु विनियोगः ।**) ।।२-३।।

ॐ ह्रीं क्लीं कालिका पातु मस्तकं कचभूषितम् ।
ॐ ह्रीं क्लीं हूँ लोचने पातु महात्रिपुरभैरवी ।।४।।

ॐ ह्रीं क्लीं कालिका केश से सुशोभित मस्तक की तथा ॐ ह्रीं क्लीं हूँ महात्रिपुरभैरवी नेत्र की रक्षा करें ।।४।।

ॐ सौः मे गलं पातु महापञ्चदशाक्षरी ।
ॐ श्रीं ह्रीं मे भुजौ पातु क्लींकारत्रयरूपिणी ।।५।।

ॐ सौः महा पञ्चदशाक्षरी मेरे गले की और ॐ श्रीं ह्रीं क्लींकारत्रयरूपिणी मेरी भुजाओं की रक्षा करें ।।५।।

ऐं सौः मे वदनं पातु हुंकारद्वयरूपिणी ।
ॐ श्रीं नाभिं सदा पातु देवेशि दिव्यकुंतला ।।६।।

हे देवेशि ! ऐं सौः हुंकार द्वयरूपिणी मेरे वदन की तथा ॐ श्रीं दिव्यकुन्तला मेरी नाभि की सदा रक्षा करें ।।६।।

ऐं सौः पातु मे शिश्नं महात्रैलोक्यभूषणा ।
ॐ ऊं श्रीं पातु मे जानुं महाविजयदायिनी ।।७।।

ऐं सौः महात्रैलोक्यभूषणा मेरे शिश्न की तथा ॐ ऊं श्रीं महाविजयदायिनी मेरे जानु की रक्षा करें ।।७।।

ॐ ऊं श्रीं पातु मे जंघे जगदानंददायिनी ।
ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे पादौ महाकामेश्वरी सदा ।।८।।
ऐं सौः क्लीं मे वपुः पातु महात्रिपुरसुन्दरी ।।९।।

ॐ ऊं श्री जगदानन्ददायिनी मेरे टखनों की एवं ॐ श्रीं ह्रीं महाकामेश्वरी मेरे पैरों की और ऐं सौ: क्लीं महात्रिपुरसुन्दरी मेरे शरीर की सदा रक्षा करें ॥८-९॥

प्रातः प्रभृत्य सायांतं सायांदिप्रातरंततः ।
दशदिक्षुः सदा पातु ऊँ श्रीं ह्रीं बगलामुखी ।।१०।।
रणे राजकुले द्यूते विषमे चौरपातके ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं सौः ह्यौः पातु महाकोटेश्वरी सदा ।।११।।

प्रात: से सायं तक तथा सायं से प्रात: तक दशो दिशाओं में ॐ श्रीं ह्रीं बगलामुखी एवं युद्ध में, राजकुल में, जुए में, विषम परिस्थितियों में, चौरादि के भय के समय या पातक फल उपस्थित हो जाने पर ॐ श्रीं ह्रीं ऐं सौ: ह्यौ: महाकोटेश्वरी सदा रक्षा करें ॥१०-९॥

इदं कवचराजाख्यं कामाख्यां कवचं परम् ।
पठेद्यो मैथुने रात्रौ स याति परमं पदम् ।।११।।

यह कामाख्या (कामिका) नामक कवच, कवचों का राजा कहा गया है तथा श्रेष्ठ कवच है, जो रात्रि में मैथुन के समय अथवा सपत्नीक इसका पाठ करता है, वह साधक परम पद को प्राप्त करता है ॥११॥

कवचस्यास्य पठनात्धारणाद्वा महेश्वरी ।
विद्याधरेश्वर पदं याति साधकसत्तमः ।।१२।।
ब्राह्मं वैष्णवी चैव दैविक धाम याति सः ।
किं पुनर्गणगन्धर्वसिद्धानामत्र का कथा ।।१३।।

हे महेश्वरि ! इस कवच के पढ़ने या धारण करने से साधक सत्तम विद्याधरेश्वर पद को प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा, विष्णु और देवताओं के धामों को जाता है तो सिद्ध गन्धर्वगण आदि स्थानों की क्या बात की जाय अर्थात् वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है ॥१२-१३॥

इदं गुह्यतमं वर्म मन्त्रगर्भ सुदुर्लम्।
अप्रकाश्यं महादेवि गोपनीयं प्रयत्नतः ।।१४।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये कामिकाकवचवर्णननाम द्वाविंशपटल: ॥२२॥

हे देवि ! यह अत्यन्त गुह्य कवच है, जो मन्त्र को छिपाये हुये दुर्लभ है। इसे प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखना चाहिये तथा जिस किसी से प्रकाशित नहीं करना चाहिये ॥१४॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का कामिकाकवच नामक बाइसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥२२॥



त्रयोविंशपटलः

त्र्यक्षरा विधि कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि वक्ष्यामि कवचं त्र्यक्षराभिधम् विधिम् ?
यत्धृत्वा साधको भूमौ विचरेद्भैरवो यथा ।।१।।

श्री भैरव बोले–हे देवि ! अब मैं त्र्यक्षराविधि नामक कवच कहूँगा, जिसे धारण करके साधक पृथिवी पर भैरव के समान विचरण करता है ॥१॥

कवचस्यास्य देवेशि ऋषिर्वटुकभैरवः ।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

हे देवेशि ! इस कवच के ऋषि वटुक भैरव, पंक्ति छन्द, ऐं बीज, सौः शक्तिः, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष के लिए विनियोग कहे गये हैं। (**ॐ अस्य त्र्यक्षराविधि कवचस्य बटुक भैरव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थेषु विनियोगः ।**) ॥२-३॥

श्रीं श्रीं श्रीं मे शिरः पातु षोडशी देववंदिता ।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं मे वतान्नेत्रे देवी ज्वालामुखी सदा ।।४।।

श्रीं श्रीं श्रीं षोडशी देवी जो देवताओं द्वारा वंदिता हैं, मेरे शिर की तथा ह्रीं ह्रीं ह्रीं ज्वालामुखी देवी मेरे नेत्रों की सदैव रक्षा करें ॥४॥

क्लीं क्लीं क्लीं मे वदाद्वत्क्त्रं देवि मातङ्गिनी परा ।
सौः सौः सौः मे भुजौ पातु देवि महापिशाचिनी ।।५।।

हे देवि ! क्लीं क्लीं क्लीं श्रेष्ठ मातङ्गिनी मेरे मुख की तथा सौः सौः सौः महा पिशाचिनी देवी मेरी भुजाओं की रक्षा करें ॥५॥

ॐ ॐ ॐ मे वताद्वक्षो देवि घण्टालिनी सदा ।
क्रीं क्रीं क्रीं मे पातु नाभिं देवि द्वाविंशदक्षरी ।।६।।

ॐ ॐ ॐ घंटालिनी देवी मेरे वक्षस्थल की तथा क्रीं क्रीं क्रीं द्वाविंशदाक्षरी देवी सदा मेरी नाभि की रक्षा करें ॥६॥

हूं हूं हूं मेवताज्जानू देवी श्री उग्रतारिणी ।
स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं पातु मे जङ्घे देवि नीलपताकिनी ।।७।।

हूँ हूँ हूँ श्री उग्रतारिणी देवी मेरे जानुओं की तथा स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं नीलपताकिनी देवी मेरे टखनों की रक्षा करें ॥७॥

श्रीं ह्रीं क्लीं पातु मे पादौ महात्रिपुरसुन्दरि ।
ऐं सौः पातु मे शेषं वपुः श्रीं ह्रीं ॐ त्र्यक्षरी ।।८।।

श्रीं ह्रीं क्लीं महात्रिपुरसुन्दरी देवी मेरे पैरों की एवं ऐं सौः श्रीं ह्रीं ॐ त्र्यक्षरी मेरे शेष शरीर की रक्षा करें ॥८॥

इतीदं कवचं गुह्यं धारणात्कामनाप्रदम् ।
सिद्धसाध्यं सिद्धिदं च गोपनीयं विशेषतः ।।९।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये त्र्यक्षराविधिकवचवर्णननाम त्रयोविंशपटलः ॥२३॥

यह कवच धारण मात्र से कामना पूर्ण करने वाला, सिद्धों द्वारा साधित, सिद्धिदायक तथा अत्यन्त गोपनीय कवच है। इसे विशेष गोपनीय रखना चाहिये ॥९॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का त्र्यक्षराविधिकवच नामक तेइसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥२३॥



चतुर्विंशपटलः
त्रिविक्रम कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना कथयिष्यामि रहस्यं समं पार्वती ।
त्रिविक्रमाख्यं कवचं मन्त्रगर्भं महेश्वरि ।।१।।

श्री भैरव बोले–हे महेश्वरि ! हे पार्वती ! अब मैं रहस्य के सहित त्रिविक्रम नामक कवच कहूँगा जो मन्त्रगर्भ है ।।१।।

कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः ।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

हे देवेशि ! इस कवच के सदाशिव ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष के लिए विनियोग कहे गये हैं। **(ॐ अस्य त्रिविक्रमकवचस्य सदाशिव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः ।)** ।।२-३।।

श्रीं ह्रीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं शिरो मेऽव्याद्धृदंतक ।
परिवारयुतामीशा महात्रिपुरभैरवी ।।४।।

श्रीं ह्रीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं महात्रिपुर भैरवी ईश्वरी देवी अपने परिवार के सहित मेरे शिर से हृदय तक के अङ्गों की रक्षा करें ।।४।।

क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं हृदादि पातु मे सदा ।
जानुभ्यां सततं देवि महात्रिपुरसुन्दरी ।।५।।

हे देवि ! क ए इ ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरी निरन्तर एवं सदैव मेरे हृदय से जानु पर्यन्त अङ्गों की रक्षा करें ।।५।।

रणे राजकुले द्यूते वन्यप्राणिमहाभये ।
क्रीं हं ह्रीं मेऽवतात्सर्वं वपुः श्रीषोडशाक्षरी ।।६।।

युद्ध में, राजकुल में, जुये में, वन्य प्राणियों के मध्य या महाभय उपस्थित हो जाने पर क्रीं हं ह्रीं श्रीषोडशाक्षरी मेरे सम्पूर्ण शरीर की रक्षा करें ।।६।।

इदं कवचराजेशं पठेद्वाधारयेद्बुधैः ख्यं ।
त्रिविक्रमाख्यम् मन्त्रोऽयं किं किं न लभते फलम् ।।७।।

इस त्रिविक्रम नामक कवचराज मन्त्र के पढ़ने या धारण करने से विद्वान क्या-क्या फल नहीं प्राप्त करता ? अर्थात् समस्त फल प्राप्त कर लेता है ।।७।।

साधकः विचरेद्भूमौ सर्वैश्वर्यसमन्वितः ।
सर्ववाय्वादि जलदस्त्रिविक्रम इवापरः ।।८।।

इसके फलस्वरूप साधक समस्त वायु जल आदि का प्रदाता तथा सभी ऐश्वर्यो से युक्त हो द्वितीय त्रिविक्रम के समान पृथिवी पर विचरण करता है ।।८।।

इदं रहस्यं परमं गुह्यं कवचमुत्तमम् ।
अभक्तेभ्योपि पुत्रेभ्यो गोपयेत् नगनंदिनी ।।९।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये त्रिविक्रमकवचनवर्णननाम चतुर्विंशपटलः ।।२४।।

हे नग (पर्वत) नन्दिनी (पार्वती) ! यह रहस्यमय परमगोपनीय तथा उत्तम कवच है। इसे यदि पुत्र भी हो किन्तु अभक्त हो तो उससे गुप्त रखना चाहिये ।।२४।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का त्रिविक्रमकवच नामक चौबीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ।।२४।।



पञ्चविंशपटलः
त्रैलोक्यभूषण कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि वक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम्।
त्रैलोक्यभूषणं नाम गोपनीयं प्रयत्नतः।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! अब मैं त्रैलोक्य भूषण नाम का कवच जो प्रयत्नपूर्वक गोपनीय एवं परम अद्भुत है, कहूँगा ।।१।।

कवचस्यास्य विख्यात ऋषिः कालाग्निरीश्वरम्।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम्।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

इस कवच के प्रसिद्ध कालाग्नि ईश्वर ऋषि, पंक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक धर्मार्थकाममोक्ष हेतु विनियोग कहे गये हैं। **(ॐ अस्य त्रैलोक्य भूषण कवचस्य कालाग्निरीश्वर ऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थेषु विनियोगः।)** ।।२-३।।

ॐ शिरः पातु मे नित्यं ह्रीं ललाटं सदावतु।
श्रीं नेत्रे पातु हूं कर्णौ ऐं मुखं सौः भुजौ तथा ।।४।।
ॐ श्रीं सौः पातु हृदयं कुक्षीं क्रीं क्रों सदावतु।
नाभिं श्रीं ह्रीं गुदं रक्षेत् शिश्नं श्रीं क्रीं कटिं तथा ।।५।।

ॐ मेरे शिर, ह्रीं ललाट, श्रीं दोनों नेत्रों, हूँ दोनों कानों, ऐं मुख, सौः दोनों भुजाओं, ॐ श्रीं सौः हृदय, क्रीं क्रों कुक्षी, श्रीं नाभि, ह्रीं गुदा, श्रीं शिश्न तथा क्रीं कटि की नित्य सदा रक्षा करें ।।४-५।।

ॐ श्रीं जानुः ह्यौः जंघे ह्रीं गुल्फौ मे सदावतु।
पादादौ सकलं गात्रं पातु ह्रीं षोडशाक्षरी ।।६।।

ॐ श्रीं जानु, ह्यौ जंघा, ह्रीं मेरे गुल्फों की सदा रक्षा करें। पैर आदि समस्त शरीर की षोडशाक्षरी रक्षा करें ।।६।।

प्रातः प्रभृति सायांतं सायांदि प्रातरं ततः।
दशदिक्षुश्च मां पातु ऐं सौः त्रिपुरसुन्दरी ।।७।।

प्रातः से सायं तक सायं से प्रातः तक दशो दिश्चओं में ऐं सौः त्रिपुरसुन्दरी देवी मेरी रक्षा करें ।।७।।

इति श्रीकवचं दिव्यं त्रिकूटाया रहस्यकम्।
पठित्वा धारयेन्मन्त्रं पूजाफलमवाप्नुयात्॥८॥

यह कवच दिव्य है तथा यह त्रिकूटा के रहस्य से युक्त है। इस मन्त्र को पढ़कर धारण करने से पूजा का फल प्राप्त होता है॥८॥

रणेद्यूतेराजभये सत्वं भीतौ च दुर्गतौ।
संकटे कवचं स्मृत्वा सर्वत्र विजयी भवेत्॥९॥

युद्ध में, जुये में, राजभय में, प्राणियों के भय में, दुर्गति में, संकट में इस कवच का स्मरण कर सब जगह साधक विजयी हो जाता है॥९॥

इतीदं कवचं देवि महामन्त्रमयं परम्।
त्रैलोक्यभूषणं नाम गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१०॥

इति श्री रुद्रयामलतंत्रे त्रिकूटारहस्ये त्रैलोक्यभूषणकवचवर्णननाम पञ्चविंशपटल: ॥२५॥

हे देवि ! यह त्रैलोक्यभूषण नाम का कवच सर्वश्रेष्ठ, महामन्त्रमय है, जो अपनी योनि की भाँति गुप्त रखने योग्य है॥९॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का त्रैलोक्यभूषणकवच नामक पच्चीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ॥२५॥



षड्विंशपटलः

विरूपाक्ष कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्रविग्रहम् ।
विरुपाक्षाभिधं नित्यं गोपनीयो प्रयत्नतः ।।१।।

श्रीभैरव बोले– हे देवि ! मैं मन्त्र स्वरूप विरुपाक्ष नामक कवच कहता हूँ, जो नित्य है तथा प्रयत्नपूर्वक संरक्षणीय है ॥१॥

ऋषिः स्यात्कवचस्यास्य वटुको भैरवीश्वरी ।
पंक्तिश्छन्द इति ख्यातं त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम्।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

हे ईश्वरी ! इस कवच के बटुक भैरव ऋषि, पंक्तिछंद, त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष के लिए विनियोग कहे गये हैं। **(ॐ अस्य विरुपाक्षकवचस्य बटुकभैरव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः ।)** ॥२-३॥

ॐ ह्रीं शिरो व्याद्वटुको ॐ ह्रीं पंक्तिः मुखं सदा ।
ॐ ह्रीं वक्षः सद्रिकूटाख्याव्यादौ क्लीं हस्तौ च ऐं तथा ।।४।।

ॐ ह्रीं बटुक भैरव शिर, ॐ ह्रीं पंक्ति छन्द मुख ॐ ह्रीं त्रिकूटा (देवता) वक्षस्थल क्लीं और ऐं हाथों की रक्षा करें ॥४॥

ॐ सौं नाभिं पातु मे सौः शिश्नं क्लीं कीलकं मम ।
ॐ ह्रीं धर्म कटिं पातु ॐ ऐं अर्थश्च पृष्ठकः ।।५।।

ॐ सौं मेरी नाभि और सौः शिश्न की तथा क्रीं मेरे कीलक (कुहनियों) की रक्षा करें। ॐ ह्रीं धर्म मेरे कमर, ॐ ऐं अर्थ मेरे पृष्ठ भाग की रक्षा करें ॥५॥

ॐ सौः जानू पातु कामे अं क्लीं मोक्षेपि गुल्फकौ ।
ॐ ह्रीमंघ्रियुगं पातु ॐ ऐं सौः क्लीं विनियोगकः ।।६।।

ॐ सौः काम मेरे घुटनों की रक्षा करें तथा ॐ क्लीं मोक्ष भी मेरे गुल्फों, ॐ ह्रीं ॐ ऐं सौः क्लीं विनियोग मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें ॥६॥

पूर्वादि दिक्षु प्रातश्च सायं चैवार्धरात्रके ।
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे नित्यं त्रिकूटा षोडशाक्षरी ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकूटा षोडशाक्षरी पूर्वादि दिशाओं में तथा प्रात: सायं अर्धरात्रि के समय नित्य मेरी रक्षा करें ।।७।।

इतीदं कवचं पुण्यं परापररहस्यकम् ।
त्रिकूटायाः परं तत्त्वं पठनीयं च साधकैः ।।८।।

यह कवच पवित्र परा त्रिपुरा के परमरहस्य का बोधक तथा त्रिकूटा का परं तत्त्व एवं साधकों द्वारा पढ़ने योग्य है ।।८।।

धृत्वा कवचमीशानि दिव्यं मंत्रैकसाधकम् ।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विचरेद्भैरवो यथा ।।९।।

हे ईशानि ! इस मन्त्र का एक मात्र साधक इस दिव्य कवच को धारण कर, सभी, सिद्धियों से युक्त हो, भैरव के समान विचरण करता है ।।९।।

इतीदं कवचं गुह्यं सर्वतंत्रेषु गोपितम् ।
सर्वस्वं मे रहस्यं मे न देयं परमेश्वरी ।।१२।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये विरूपाक्षकवचवर्णननाम षड्विंशपटल: ।।२६।।

हे परमेश्वरि ! यह गुप्त कवच सभी तन्त्रों में गोपित है । यह मेरा स्र्वस्व तथा रहस्य है और अपात्र को न देने योग्य है ।।१०।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का विरूपाक्षकवचन नामक
छब्बीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ।।२६।।



सप्तविंशपटलः

सर्वार्थ साधक कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अद्य ते कवचं दिव्यं रम्यं मंत्रमयं परम् ।
सवार्थसाधकं नाम वक्ष्येहं श्रृणु पार्वती ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे पार्वती ! आज मैं तुमसे सर्वार्थ साधक नामक दिव्य, सुन्दर, मन्त्रमय, श्रेष्ठ कवच कहता हूँ ।।१।।

कवचस्यास्य देवेशि दक्षिणामूर्तिको ऋषिः ।
पक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः कामराजश्च कीलकम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

हे देवेशि ! इस कवच के दक्षिणमूर्त्ति ऋषि, पंक्ति छन्द, महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, कामराज (क्लीं) कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष के लिए विनियोग कहे गये हैं। (ॐ अस्य सर्वार्थसाधककवचस्य दक्षिणमूर्तिऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः ।) ।।२-३।।

अं शिरः पातु मे नित्यं आं नेत्रे द्वितीयं मम ।
इं कर्णौ पातु मे नित्यं ईं गंडौ मे सदावतु ।।४।।

अं मेरे शिर की, आं नेत्रद्वय की, इं दोनों कानों, ईं गण्डस्थलों की नित्य सदा रक्षा करें ।।४।।

उं नासां पातु में नित्यं ऊँ मे औष्ठौ सदावतु ।
ऋं मे नित्यं मुखं पातु ॠं मे कंठं सदावतु ।।५।।

उं मेरे नाक की, ऊँ मेरे दोनों ओठों की, ऋं मेरे मुख की तथा ॠं मेरे कण्ठ की सदा रक्षा करें ।।५।।

ऌं मे वक्षः सदावतु ऐं मे नाभिं सदावतु ।
ओं मे पार्श्वौ सदा पातु औं मे पृष्ठौ सदावतु ।।६।।

ऌं मेरे वक्षस्थल, ऐं नाभि, ओं मेरे पार्श्वभाग की, औं पृष्ठ भाग की सदा रक्षा करें ।।५।।

अं शिश्नं पातु मे नित्यं अः कटिं मेऽवत्तात् सदा ।
कं खं गं घं ङं मे उरुं चं छं जं झं ञं मेऽवतु जानू ।।७।।

टं ठं डं ढं णं मे पातु जङ्घाङ्गम् मे सदा।
तं थं दं धं नं मे गुल्फौ पं फं बं भं मं अवतात्॥८॥
पादादौ नखरे नित्यं सांगुलीकौ च सर्वतः।
शिरसः पादपर्यंतं पादादि मस्तकांतकम्।
यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ममावताद्वपुः॥९॥

अं मेरे शिश्न की, अः सदा मेरे कमर की एवं कं खं गं घं ङं मेरे जंघों की, चं छं जं झं ञं मेरे दोनों घुटनों की, टं ठं डं ढं णं मेरे टखनें की, तं थं दं धं नं मेरे गुल्फों की, पं फं बं भं मं पैरों की नख एवं अङ्गुली के सहित सब ओर से नित्य रक्षा करें। शिर से पैर तक एवं पैर से मस्तक तक मेरे शरीर की यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं नित्य रक्षा करें॥७-९॥

दिग्विदिक्षुः सदा देवी सर्वदा पातु मे शिवे।
महा श्रीषोडशीविद्या मातृकाक्षररूपिणी॥१०॥

हे शिवे! सदैव और सर्वसमय श्री मातृकाक्षररूपिणी श्रीमहाषोडशी विद्या देवी दिशाओं तथा विदिशाओं (कोणों) में मेरी रक्षा करें॥१०॥

इतीदं कवचं दिव्यं त्रिषु लोकेषु सुदुर्लभम्॥११॥
पठनाद्धारणाद्देवी सर्वार्थसिद्धिसाधिदम्॥१२॥

हे देवी! यह दिव्य कवच तीनों लोकों में दुर्लभ है जो पढ़ने और धारण करने से सभी अर्थों की सिद्धि का साधक है॥११-१२॥

अर्चा कुर्या निशीथे तु रतिकाले जपं शिवे।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विचरेद्भैरवो यथा॥१३॥

हे शिवे! अर्धरात्रि में और रतिकाल में इसका जप कर साधक सभी सिद्धियों से युक्त होकर भैरव के समान विचरण करे॥१३॥

इदं रहस्य परमं गोप्यं सर्वार्थसाधकम्।
दातव्यं नाऽन्यशिष्याय गोपयेत् साधकेश्वरी॥१४॥

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये सर्वार्थसाधककवचवर्णननाम सप्तविंशपटलः॥२७॥

हे साधकों की ईश्वरि! यह (कवच) रहस्यमय, अत्यन्त गोपनीय तथा सभी प्रयोजनों का साधक है। दूसरे के शिष्यों को इसे नहीं प्रदान करना चाहिए अपितु इसकी रक्षा करे॥१४॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का सर्वार्थसाधककवच नामक
सत्ताईसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ॥ २७॥



अष्टाविंशपटलः

आनन्दवर्धन कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अद्य वक्ष्यामि देवेशि ऋषिस्था भैरवो यथा ।।१।।
पंक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटा देवतेरिता ।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।।२।।
अग्निरुद्रकवित्वार्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

श्रीभैरव बोले–हे देवेशि ! जिस प्रकार इसके भैरव ऋषि, पंक्ति छन्द महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, अग्नि-रुद्र-कवित्व हेतु विनियोग कहा गया है, वह मैं अब कहता हूँ। **(ॐ अस्य आनन्दवर्धनकवचस्य भैरव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः महादेवी त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलक अग्निरुद्रकवित्वार्थे विनियोगः ।)** ।।१-३।।

हृदयाय नमः पातु शिरसो मे ललाटकम् ।
नेत्रे मे शिरसे स्वाहा सकर्णा चावतात् सदा ।।४।।

"हृदयाय नमः" मेरे शिर की, "शिरसे स्वाहा" मेरे दोनों नेत्रों एवं कानों के सहित ललाट की सदैव रक्षा करें ।।४।।

शिखायै वषट् व्यान्मे मुखं सरसनं सदा ।
कवचाय हुँ पायान्मे मुखं सरसनं सदा ।।५।।

"शिखायै वषट्" एवं "कवचाय हुं" जिह्वा के सहित मेरे मुख की सदैव रक्षा करें ।।५।।

नेत्रेभ्यो वषड्व्यान्मेहृदयं च सनासिकं ।
अस्त्राय फट् उरुं पातु मम नित्ये समेढ्रकं ।।६।।

"नेत्रेभ्यो वषट्" नासिका के सहित मेरे हृदय की **'अस्त्राय फट्"** मेढ्र के सहित मेरे उरु (जङ्घों) की नित्य रक्षा करें ।।६।।

अंगुष्ठाभ्यां नमः पातु उरुं मे सततं शिवे ।
तर्जनीभ्यां नमः पातु जानू मे सर्वदा तथा ।।७।।

हे शिवे ! **"अंगुष्ठाभ्यां नमः"** निरन्तर मेरे जङ्घों की तथा **"तर्जनीभ्यां नमः"** सदैव मेरे दोनों घुटनों की रक्षा करें ।।७।।

मध्यमाभ्यां नमः पातु जंघायुग्मं सदा मम ।
अनामिकाभ्यां नमः पातु गुल्फ युग्ममनिशम् ।।८।।

"मध्यमाभ्यां नमः" मेरे दोनों जङ्घों की तथा **"अनामिकाभ्यां नमः"** मेरे दोनों गुल्फों की सैदव निरन्तर रक्षा करें ॥८॥

कनिष्ठाभ्यां नमः पादयुग्ममनिशम् ।
करयोतलपृष्ठाभ्यां पातु मे सकलं वपुः ॥९॥

"कनिष्ठाभ्यां नमः" निरन्तर मेरे दोनों पैरों की तथा **"करयोस्तलपृष्ठाभ्यां"** मेरे सम्पूर्ण शरीर की रक्षा करें ॥९॥

दिक्षु भूमौ तथाकाशे सर्वदा गहने गृहे ।
रणे राजकुले द्यूते षोडान्यासं सदावतु ॥१०॥

षोडान्यास सदैव दिशाओं में, भूमि पर, आकाश में, गहनवन में, घर में, युद्ध में, राजकुल में और जुए में रक्षा करे ॥१०॥

इदं कवचमाद्यं तु मंत्राणां मंत्रमुत्तमम् ।
पठेत्वा धारयेद्देहे देहमुक्तपदं लभेत् ॥११॥

यह कवच मन्त्रों में प्रथम, मन्त्रों में उत्तम मन्त्र है, यदि इसको पढ़ा जाय या धारण किया जाय तो साधक देह मुक्त पद को प्राप्त करता है ॥११ ॥

गुह्यातिगुह्यकवचं रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ।
आनंदवर्धनं देवि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१२॥

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये आनन्दवर्धनकवचवर्णननाम अष्टाविंशपटलः ॥२८॥

हे देवि ! यह आनन्दवर्धन नामक कवच अत्यन्त गोपनीय एवं देवताओं के लिए भी रहस्यमय है, इसे प्रयत्नपूर्वक गोपनीय ही रखना चाहिए ॥१२॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का आनन्दवर्धनकवच नामक
अट्ठाईसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥२८॥



एकोनत्रिंशपटलः

वैरीनाश कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि वक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम्।
वैरिनाशाभिधं दिव्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–हे देवि ! अब मैं देवताओं के लिए भी दुर्लभ, सभी तन्त्रों में गोपनीय, वैरीनाश नामक दिव्य कवच को कहूँगा ॥१॥

वैरिनाशाभिधास्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ।
पंक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथा शक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३।।

इस वैरीनाश नामक कवच के शिव ऋषि, पंक्ति छन्द, महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममोक्षार्थ के प्रयोजन में विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य श्री वैरीनाशकवचस्य शिव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः महादेवी त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्ति : क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः ।)** ॥२-३॥

ॐ बिन्दु मे शिरः पातु त्रिकोणं पातु लोचने ।
वसुकोणं श्रुतिं पातु दिगस्त्रं वदनं मम ।।४।।

ॐ बिन्दु मेरे शिर की, त्रिकोण मेरे नेत्रों की, अष्टकोण कानों की तथा दिगस्त्र (दशकोण) मेरे मुखमण्डल की रक्षा करें ॥४॥

दिक्कोणं पातुं मे कंठे मन्वस्त्रस्त्रं पातु वक्षसं ।
वृत्तं ममावताद्धस्तौ नाभिमष्टदलं मम ।।५।।

दशकोण मेरे कण्ठ की, चतुर्दश कोण वक्षस्थल की, वृत्त मेरे हाथों की तथा अष्टदल कमल मेरी नाभि की रक्षा करें ॥५॥

वृत्तं उरुं सदा पातु जानूं षोडश पत्रकं ।
वृत्तं त्रयं तु मे पातु जङ्घायुग्मं महेश्वरि ।।६।।

हे महेश्वरि ! वृत्त दैव जङ्घों की, षोडशदल कमल घुटनों की, वृत्तत्रय मेरे दोनों टखनों की रक्षा करें ॥६॥

भूमन्दिरं सदा पायात् पादौ सनखरो शिवे ।
यन्त्रराजस्त्रिकूटायाः अवतादखिलं वपुः ।।७।।

हे शिवे ! भूपुर सदैव नख के सहित मेरे दोनों पैरों की रक्षा करे। त्रिकूटा का मन्त्रराज मेरे समस्त शरीर की रक्षा करे ॥७॥

इदं श्रीकवचं पुण्यं यः पठेद्धारयेत् हृदि।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्भवेत् सोऽपि महीधरः॥८॥

जो इस श्रीविद्या के पवित्र कवच को पढ़ता या हृदय पर धारण करता है, उसकी धनसमृद्धि और वैभव से अभिवृद्धि होती है, वह भी राजा हो जाता है ॥८॥

इदं गुह्यतमं वर्म यन्त्रराजप्रकाशकम्।
दिव्यं गोप्यं परं पुण्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥९॥

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये वैरीनाशकवचवर्णननाम एकोनत्रिंशपटलः ॥२९॥

यह कवच अत्यन्त गोपनीय, दिव्य, परमपवित्र तथा अपनी योनि की भाँति छिपाने योग्य है ॥९॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र में त्रिकूटारहस्य का वैरीनाशकवच नामक
उन्तीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥२९॥



त्रिंशपटलः

विजय कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अथ ते कथयाम्यद्य कवचं परमाद्भुतम् ।
गोप्यं विजयनामाद्यं श्रृणु त्वं भक्तिपूर्वकम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–अब मैं तुमसे परम् अद्भुत, गोपनीय, विजय नामक कवच को कहता हूँ। इसे तुम भक्तिपूर्वक सुनो ।।१।।

देवि श्रीविजयाख्यस्य कवचस्यास्य भैरवः ।
ऋषिः प्रोक्तो महादेवि पंक्तिश्छन्दमुदाहृतम् ।।२।।
त्रिकूटादेवता प्रोक्ता ऐं बीजं शक्तिः वाग्भवम् ।
क्लीं कीलको नियोगोऽस्य धर्मकामार्थमुक्तये ।।३।।

हे देवि ! श्री विजय नामक इस कवच के भैरव ऋषि, पंक्ति छन्द, महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, शक्ति, क्लीं कीलक, धर्मार्थकाममुक्तिहेतु विनियोग कहा गया है। **(ॐ श्री विजय नामकवचस्य भैरव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीजं, ऐं शक्तिः क्लीं कीलकः धर्मार्थकाममुक्तये विनियोगः ।)** ।।२-३।।

लक्ष्मीबीजं शिरः पातु पराबीजं च लोचने ।
मदनो वदनं पातु वाग्भवं कंधरां तथा ।।४।।

लक्ष्मीबीज (श्रीं) शिर, परा बीज (ह्रीं) दोनों नेत्रों की, मदन बीज (क्लीं) मुखमण्डल की तथा वाग्भव (ऐं) कन्धों की रक्षा करें ।।४।।

शक्ति हस्तौ च मे पातु तारं वक्षः सदावतु ।
भूतिं कुक्षिं सदा पातु कमला नाभिमंडलम् ।।५।।
वेधा बीजं तथा पृष्ठं लताबीजं च पार्श्वकौ ।
धी बीजं पातु मे शिश्नं मोहबीजं गुदं सदा ।।६।।

शक्ति (सौः) मेरे दोनों हाथों की तथा तार (ॐ) सदा मेरे वक्षस्थल की, भूति (ह्रीं) कुक्षि की, कमला (श्रीं) नाभिमण्डल, वेधा बीज (क) पृष्ठ की, लता बीज (ए) पार्श्वभाग की एवं धी बीज (ई) मेरे शिश्न की, मोह बीज (ल) सदैव गुदा की रक्षा करें ।।५-६।।

मायाबीजं कटिं पातु कूटमाद्यं शिरोवतु ।
कालिबीजं मदोभूमे शक्तिर्जानुयुगं सदा ।।७।।

माया बीज (ह्रीं) मेरे कमर की क ए इ ल ह्रीं का आदिकूट शिर की रक्षा करें।

काली बीज (क्रीं) मदोभूमि मध्य भाग की, शक्ति (स:) दोनों घुटनों की सदा रक्षा करें ॥७॥

वेधो जङ्घायुगं पातु कविर्गुल्फो सदावतु ।
तमो बीजं पातु पादौ माया बीजं समन्वितम् ।।८।।

वेधा (क) दोनों जङ्घों की और कवि (ह) गुल्फों की सदा रक्षा करें तथा माया बीज (ह्रीं) से युक्त तमोबीज (ल) दोनों पैरों की रक्षा करें ॥८॥

रणे राजकुले द्यूते वने वा स्वगृहे पथि ।
रक्ष मां सततं देवि द्वितीयं कूटमुत्तम् ।।९।।

हे देवि ! युद्ध में, राजकुल (न्यायालयादि) में, जुए में, वन में, अपने घर में या रास्ते में निरन्तर उत्तम द्वितीय कूट ह स क ह ल ह्रीं मेरी रक्षा करें ॥९॥

दिग्विदिशः वसु पातु शक्ति बीजं महेश्वरि ।
प्रभाते व्याछिरो बीजो सायं माध्वान्त बीजकम् ।।१०।।

हे महेश्वरि ! आठों दिशाओं एवं विदिशाओं में शक्ति बीज (स) मेरी रक्षा करे। प्रात:काल शिरो बीज (क) सायंकाल माध्वांत बीज (ल) मेरी रक्षा करें ॥१०॥

निशीथे व्यात्पराबीजं सर्वकालं त्रिकूटजम् ।
कूटत्रयं शिवे पातु संग्रामे मे शिवे वतु ।।११।।

हे शिवे ! अर्धरात्रि में पराबीज (ह्रीं), सभी समयों में तृतीय कूट स क ल ह्रीं, संग्राम में कूटत्रय तीनों कूट मेरी रक्षा करें ॥११॥

इदं कवचमाद्यंतं यः पठेत् परमेश्वरी ।
सर्वत्र विजयस्तस्य साधकस्य न संशयः ।।१२।।

हे परमेश्वरि ! इस कवच को आदि अन्त सम्पूर्ण जो पढ़ता है या आराधना के आदि और अन्त में जो पढ़ता है, उस साधक की सब जगह विजय होती है । इसमें कोई संशय नहीं है ॥१२॥

इदं गुह्यतमं वर्म मंत्रोद्धारप्रकाशकम् ।
गोप्यं दिव्यं त्रिकूटाया गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।१३।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये विजयकवचवर्णननाम त्रिंशपटल: ॥३०॥

यह त्रिकूटा का अत्यन्त गुप्त तथा मन्त्रोद्धार का प्रकाशक कवच, गोपनीय, दिव्य तथा तुम्हारे द्वारा अपनी योनि की भाँति गोपनीय है ॥१३॥

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का विजयकवच नामक
तीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ॥३०॥



एकत्रिंशपटलः

विषापह कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना संप्रवक्ष्यामि कवचं देवतामयम् ।
विषापहाख्यपरमं शृणु त्वं भाक्तिपूर्वकम् ।।१।।

श्रीभैरव बोले–अब मैं देवतामय विषापह नामक परम श्रेष्ठ कवच कहूँगा। तुम उसे भक्तिपूर्वक सुनो ।।१।।

देव्या विषापहाख्यस्य कवचस्य ऋषिः शिवः ।
पंक्तिश्छन्दो महादेवि त्रिकूटादेवतेरिता ।।२।।
ऐं बीजं सौस्तथाशक्तिः क्लीं कीलकमुदाहृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगस्तु धारिणो ।।३।।

देवी के इस विषापह नामक कवच के शिव ऋषि, पंक्ति छन्द, महादेवी त्रिकूटा देवता, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक, धारण करने वाले के धर्मार्थकाममोक्ष निमित्त विनियोग कहा गया है। **(ॐ अस्य देव्याः विषापहाख्य कवचस्य शिवः ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लींः कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः ।)** ॥२-३॥

पातु कामेश्वरी नित्या नित्यं मम शिरः सदा ।
नेत्रे मे पातु सततं नित्या श्रीभगमालिनी ।।४।।

कामेश्वरी नामक नित्या, नित्य मेरे शिर की, श्री भगमालिनी नित्या निरन्तर मेरे नेत्रों की सदैव रक्षा करें ॥४॥

कर्णौ मे नित्यक्लिन्ना व्याद्भीरुंडा वाच्य नासिका ।
श्रीवह्निवासिनी नित्यं पातु मे वदनं सदा ।।५।।

क्लिन्ना नित्या मेरे दोनों कानों की तथा भीरुण्डा नित्या नाक की एवं श्री वह्निवासिनी नित्या सदैव नित्य मेरे मुखमण्डल की रक्षा करें ॥५॥

महाविद्येश्वरी नित्या कंठं पायात्सदा मम ।
शिवदूती भुजौ पातु त्वरितव्या करौ मम ।।६।।

महाविद्येश्वरी नित्या सदा मेरे कण्ठ की, शिवदूती नित्या भुजाओं की तथा त्वरिता नित्या मेरे हाथों की रक्षा करें ॥६॥

श्रीकुलसुन्दरी नित्यं पातु मे हृदयं परम् ।
नित्या नित्या सदा पातु नाभिं पातु महेश्वरि ।।७।।

हे महेश्वरी श्री कुलसुन्दरी नित्या नित्य मेरे हृदय की तथा महेश्वरी नित्या सदैव मेरी नाभि की रक्षा करें ॥७॥

नित्या नीलपताका च पातु मे शिश्नमीश्वरी ।
पातु मे विजया नित्या जानुयुग्मं सदा शिवे ।।८।।

हे शिवे ! हे ईश्वरी ! नीलपताका नामक नित्या नित्य मेरे शिश्न की एवं विजया नामक नित्या सदैव मेरे दोनों घुटनों की रक्षा करें ।।८।।

श्रीसर्वमङ्गलानित्या जंघायुग्मं सदावतु ।
ज्वालामाला वतात्पातु पादौ मम नित्या पदांतिका ।।९।।
शिरसः पादपर्यन्तं पादादि मस्तकांतकम् ।
चित्रा नित्या सदा पातु सर्वदा मेऽखिलं वपुः ।।१०।।

हे शिवे ! श्री सर्वमङ्गला नित्या दोनों जङ्घों की, ज्वाला माला नित्या मेरे दोनों पैरों की, शिर से पैर तक तथा पैर से शिर तक सदा पदान्तिका, और विचित्रा नित्या सम्पूर्ण शरीर की सर्वदा रक्षा करें ।।९-१०।।

पूर्वादिदिक्षु सततं धरणौ च दिविद्रिक
पोते वते दहनचौरे भयं गजे च ।
सिंहे गजे जले रणभुवि स्मृत पादपीठंम् ।
देव्यावपुर्मम वपु सदा विषतोऽपि पायात् ।।११।।

पूर्वादि दिशाओं में, धरती पर, आकाश में, पर्वतों, जहाजों पर, अग्नि भय में, चोर भय, राज भय, हाथी, सिंह, जल का भय उपस्थित होने पर पृथिवी पर कहीं चरणों का स्मरण किये जाने पर देवी का सम्पूर्ण विग्रह मेरे शरीर की किसी भी प्रकार के विष से सदा निरन्तर रक्षा करे ।।११।।

इतीदं कवचं देव्या दिव्यं श्रीदेवतामयम् ।
पठेद्वा धारयेन्मूर्ध्नि विषभीतिर्न जायते ।।१२।।

इस प्रकार का देवी का यह कवच श्री देवता का स्वरूप, दिव्य स्वरूपमय है। इसके, पढ़ने या मस्तक पर धारण करने से विष का भय नहीं उत्पन्न होता ।।१२।।

सर्वदृष्टिस्य देवेशि विषग्रस्तस्य वा शिवे ।
बध्वा कवचराजेशं विषमुक्तिर्भवेत् क्षणात् ।।१३।।

हे शिवे ! हे देवेशि ! सब प्रकार के विष से ग्रस्त व्यक्ति की भी इस कवचराज के बाँधने से शीघ्र विषमुक्ति हो जाती है ।।१३।।

विषापहाख्यं कवचं दिव्यं दुर्लभमुत्तमम् ।
अप्रकाश्यं महादेवि कदाचिन्न प्रकाशयेत् ।।१४।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये विषापहकवचवर्णननाम एकत्रिंशपटलः ।।३१।।

हे महादेवि ! यह विषापह नामक दिव्य कवच, दुर्लभ, उत्तम तथा न प्रकाशित करने योग्य है। अतः इसे कभी भी अपात्र के प्रति प्रकाशित न करे ।।१४।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का विषापहकवच नामक एकतीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ।।३१।।



द्वात्रिंशपटलः

मुक्ति साधक कवच

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना श्रृणु देवेशि कथयिष्यामि विस्तरम् ।
मुक्तिसाधकं नाम कवचं परमाद्भुतम् ।। १ ।।

***श्रीभैरव बोले*–**हे देवेशि ! अब मैं तुमसे मुक्ति साधक नामक परम् अद्भुत कवच विस्तार से कहूँगा। तुम उसे सुनो ॥१॥

मुक्ति साधकस्यास्य कवचं परमेश्वरि ।
ऋषिः सदाशिवख्यातं पंक्तिश्च्छन्द उदाहृतम् ।। २ ।।
त्रिकूटा देवता प्रोक्ता वाग्भवं बीजमुच्यते ।
शक्ति बीजं च शक्तिः स्यात् कामराजश्च कीलकं ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग प्रकीर्तितः ।। ३ ।।

हे परमेश्वरि ! इस मुक्ति साधक कवच के सदाशिव ऋषि, पक्ति छन्द, त्रिकूटा देवता, वाग्भव (ऐं) बीज, शक्ति बीज (सौ:) शक्ति, कामराज (क्लीं) कीलक, धर्मार्थकाममोक्ष हेतु विनियोग कहे गये हैं। **(ॐ अस्य मुक्तिसाधक कवचस्य सदाशिव ऋषिः पंक्तिश्च्छन्दः त्रिकूटा देवता ऐं बीजं सौ शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः ।)** ॥२-३॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्री श्रीं पातु मे त्रिपुरा शिरः ।।४।।
त्रिकूटा पातु मे नेत्रे वेधः कविशरद्युता ।
त्रिषर्णा पातु मे कर्णौ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं विभूषिता ।।५।।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौ: ॐ ह्रीं श्रीं त्रिपुरा मेरे शिर की रक्षा करें। वेध: (क) कवि (ह) शरत् (स) से युक्त त्रिकूटा मेरे नेत्रों की और सौ: ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं से सुशोभित त्रिवर्णा मेरे कानों की रक्षा करें ॥४-५॥

अनङ्गकुसुमादेवि पातु ह्रीं श्रीं च नासिका ।
ॐ श्रीं मुखे सदा सोष्ठमनंगवदनावतु ।।६।।

हे देवि ! ह्रीं श्रीं अनङ्ग कुसुमा मेरी नासिका की, ॐ श्री अनङ्गवदना ओठों के सहित मुख की सदा रक्षा करें ॥६॥

कंठे मे नगरे व्यायात् स्कन्धौ मेऽनङ्गवेगिनी ।।७।।
सर्वसंक्षोभिणीशक्तिः पातु वक्षस्थलं मम ।
सर्वविद्राविणी शक्तिः कुक्षिं पातुममानिशं ।।८।।

कंठ सहित मेरे स्कन्ध देश की अनङ्गवेगिनी, मेरे वक्षस्थल की सर्वसंक्षोभिणी शक्ति, कुक्षि की सर्वविद्राविणी शक्ति निरन्तर रक्षा करें ॥७-८॥

श्रीसर्वाकर्षिणीशक्तिः पृष्ठं पातु सदा मम।
शिश्नं पार्श्वौ मे पातु सततं सर्वाह्लादनकारिणी ॥९॥

श्री सर्वाकर्षिणी शक्ति सदा मेरे पीठ की, सर्वाह्लादनकारिणी शक्ति मेरे शिश्न एवं पार्श्वों की रक्षा करें ॥९॥

सर्वसम्मोहिनी शक्तिः नाभिं पातु सदा मम।
शिश्नं मे पातु सततं सर्वस्तम्भनकारिणी ॥१०॥

सर्वसम्मोहिनी शक्ति सदा मेरे नाभि की तथा सर्वस्तम्भनकारिणी शक्ति निरन्तर मेरे शिश्न की रक्षा करें ॥१०॥

श्रीसर्वजृम्भिणीशक्तिः गुह्यं मम सदावतु।
सर्ववशङ्करी शक्तिः कटिं पातु सदा मम ॥११॥

श्री सर्वजृंभिणी शक्ति मेरे गुह्यभाग की तथा सर्ववशंकरी शक्ति मेरे कटि की सदा रक्षा करें ॥११॥

श्रीसर्वरंजिनीशक्तिः उरुं मे पातु नित्यशः।
जानु मे पातु सततं सर्वोन्मादनरूपिणी ॥१२॥

श्री सर्वरञ्जिनी शक्ति नित्य मेरे उरु की तथा सर्वोन्मादनरूपिणी शक्ति निरन्तर मेरे जानु की रक्षा करें ॥१२॥

सर्वार्थसाधिनीशक्ति जङ्घायुग्मं ममावतु।
पादौ मे पातु सततं सर्वसम्पत्प्रपूरिणी ॥१३॥

सर्वार्थसाधिनी शक्ति मेरे दोनों टखनों की और सर्वसम्पूरिणी शक्ति निरन्तर मेरे पैरों की रक्षा करें ॥१३॥

शिरसः पादपर्यन्तं पादादिमस्तकांतकम्।
सर्वमन्त्रमयीशक्तिः पातु मे सकलं वपुः ॥१४॥

शिर से पैर तक तथा पैर से मस्तक तक मेरे सम्पूर्ण शरीर की सर्वमन्त्रमयी शक्ति रक्षा करें ॥१४॥

रणेऽरण्ये राजभये द्यूतचौरगजादिषु।
पायान् मां सततं शक्तिसर्वद्वंद्वक्षयङ्करी ॥१५॥

सर्वद्वंद्वक्षयंकरी शक्ति युद्ध में, जङ्गल में, द्यूत में, अथवा राज भय, चोर भय, हाथी आदि का भय उपस्थित होने पर निरन्तर मेरी रक्षा करें ॥१५॥

सर्वसिद्धिप्रदा पातु पूर्वस्यां दिशि मां सदा।
आग्नेय्यां पातु मां नित्यं सर्वसंपत्प्रदा ततः ॥१६॥

सर्वसिद्धिप्रदा सदा पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें। सर्वसम्पत्प्रदा नित्य अग्निकोण में मेरी रक्षा करें ॥१६॥

सर्वप्रियकरीदेवि दक्षिणे पातु मां सदा ।
नैर्ऋत्यां पातु मां देवि सर्वमंगलकारिणी ।।१७।।

सर्वप्रियंकरी देवी दक्षिण में तथा सर्वमङ्गलकारिणी देवी नैर्ऋत्यकोण में सदा मेरी रक्षा करें ।।१७।।

पश्चिमे मां महादेवि सर्वकामप्रदावतु ।
वायव्यां मां सदा पातु सर्वदुःखविमोचिनी ।।१८।।

हे महादेवि ! सर्वकामप्रदा पश्चिम में एवं सर्वदुःखविमोचिनी देवी सदा वायव्य कोण में मेरी रक्षा करें ।।१८।।

सर्वमृत्युप्रशमनी चोत्तरे पातु मां सदा ।
ईशान्यां पातु मां देवि सर्वविघ्ननिवारिणी ।।१९।।

सर्वमृत्युप्रशमिनी उत्तर में तथा सर्वविघ्नानिवारिणी देवी ईशान कोण में सदा मेरी रक्षा करें ।।१९।।

सर्वाङ्गसुन्दरी देवि मामूर्ध्वं पातु नित्यशः ।
अधस्तात्पातु मां देवि सर्वसौभाग्यदायिनी ।।२०।।

सर्वाङ्गसुन्दरी देवी ऊर्ध्व में तथा सर्वसौभाग्यदायिनी मेरे अधोभाग में सदैव मेरी रक्षा करें ।।२०।।

सर्वज्ञा मां प्रभाते देवि मध्यान्हे सर्वशक्तिका ।
सर्वैश्वर्यप्रदा सायं पातु मां भैरवेश्वरी ।।२१।।

हे देवि ! सर्वज्ञा प्रभात में, सर्वशक्तिका मध्याह्न में, सवैश्वर्यप्रदा नामवाली भैरवेश्वरी सायंकाल मेरी रक्षा करें ।।२१।।

सर्वज्ञानमयादेवी निशीथे मां सदावतु ।
ब्राह्मे मुहूर्तके पातु सर्वदुःखविमोचिनी ।।२२।।

सर्वज्ञानमयादेवी अर्धरात्रि में तथा सर्वदुःखविमोचिनी देवी ब्राह्ममुहूर्त में सदा मेरी रक्षा करें ।।२२।।

सर्वकालं महादेवि पातु मां त्रिपुरेश्वरी ।
सर्वाधारस्वरूपा पायाद्रणे राजभयस्थ माम् ।।२३।।

हे महादेवि ! सभी समयों में त्रिपुरेश्वरी और सर्वाधारस्वरूपा युद्ध तथा राजभय की स्थिति में मेरी रक्षा करें ।।२३।।

सर्वपापहरा पातु वह्निचौरभयात्ततः ।
सर्वानन्दमया पातु द्यूतपोताद्युपद्रवात् ।।२४।।

सर्वपापहरा देवी आग और चोरों के भय से सदा, सर्वानन्दमया जुआ, जलयान आदि सम्बन्धी उपद्रवों से मेरी रक्षा करें ।।२४।।

श्मशानारण्यसिंहादिभयः श्वपदभीतितः ।
पायान्मां सततं देवि सर्वरक्षास्वरूपिणी ।।२५।।

हे देवि ! श्मशान, अरण्य, सिंहादि एवं चाण्डालों के भय से सर्वरक्षास्वरूपिणी निरन्तर मेरी रक्षा करें ॥२५॥

पुत्रान्दारान्धनं गेहं मित्राणि वांधवास्तथा ।
पातु मे ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वेप्सितफलप्रदा ।।२६।।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वेप्सितफलप्रदा देवी मेरे पुत्रों, स्त्रियों, धन, घर, मित्र तथा बान्धवों की रक्षा करें ॥२६॥

इतीदं कवचं दिव्यं देवि पूजामयं परम् ।
मन्त्ररूपं शिवे गुह्यं नवमुद्राप्रकाशकः ।।२७।।

हे शिवे ! यह दिव्य कवच देवीपूजामय सर्वोत्तम मन्त्र रूप, नवमुद्राओं को प्रकाशित करने वाला एवं गोपनीय है ॥२७॥

अणिमाद्यष्टसिद्धीशः त्रिकूटाया रहस्यकम् ।
सर्वस्वं षोडशाक्षर्याः कवचं षोडशात्मकम् ।।२८।।

यह अणिमा आदि अष्ट सिद्धियों का स्वामी तथा त्रिकूटा के रहस्य को प्रकाशित करने वाला, षोडशाक्षरी विद्या का सर्वस्व और षोडशात्मक कवच है ॥२८॥

यः पठेदर्धरात्रौ तु शक्तियुक्तो महेश्वरि ।
मनवे त्रिपुरापुत्रः सर्वतंत्रेषु दीक्षितः ।।२९।।

हे महेश्वरि ! जो शक्ति से युक्त होकर आधीरात में इसे पढ़ता है, वह मनुष्यों में त्रिपुरा का पुत्र (प्रिय) सभी तन्त्रों में दीक्षित हो जाता है ॥२९॥

शक्त्या दिक्षितया युक्तो मान्त्रिकं मन्त्रराधकः ।
पठेद्रात्रौ त्रिकूटायाः कवचानि च षोडशः ।।३०।।
शक्त्या सह चरेद्भोगं रेतसा तर्पयेच्छिवम् ।
प्रादुर्भविष्यति स्मृता सद्यस्त्रिपुरसुन्दरि ।।३१।।

दीक्षिता शक्ति से युक्त हो, मन्त्र की आराधना करने वाला जो मांत्रिक रात्रि में त्रिकूटा के द्वार पर षोडश कवचों को पढ़ कर शक्ति के साथ भोग का आचरण तथा रेतस से शिव का तर्पण करेगा, उसके स्मरण मात्र से त्रिपुरसुन्दरी शीघ्र प्रकट हो जावेगी ॥३०-३१॥

दीक्षिता नास्ति शक्तिश्चेत्साधकस्य महेश्वरि ।
सद्यो जयो भवेद्यर्धो दीक्षितस्यापि सुन्दरी ।।३२।।

हे महेश्वरि ! यदि साधक की शक्ति दीक्षित न हो या उसके अर्धदीक्षित होने पर भी हे सुन्दरि ! वह शीघ्र ही जय प्राप्त कर सकता है ॥३२॥

तस्माद्देवी स्वकांतायै दीक्षां दत्वा विधानवत् ।
साधकात्साधकः शक्त्या सहितः परमेश्वरी ।
पठेत् त्रिपुरसुन्दर्य्या कवचानि च षोडशः ।।३३।।

इसलिए हे देवि ! श्रेष्ठ साधक द्वारा अपनी पत्नी को दीक्षा विधान के अनुसार दीक्षा दिलाकर साधक अपनी उस दीक्षित शक्ति के सहित त्रिपुरसुन्दरी के इन सोलह कवचों को पढ़े ।।३३।।

रवौ भुजे त्वचिः स्मृत्वा त्रिकूटां षोडशाक्षरीम् ।।३४।।
कुङ्कुमेनाष्टगन्धेन कवचानि च षोडशः ।
लिखित्वा वेष्टयेत्पीतसूत्रेण सहसुन्दरी ।।३५।।
रक्त्या लाक्षया वेद्य सुवर्णेनाथ वेष्टयेत् ।
पञ्चगव्येन तां स्नात्वा यथोक्तविधिनार्चयेत्।।३६।।

हे सुन्दरि ! रविवार के दिन त्रिकूटा षोडशाक्षरी का स्मरण करके कुंकुम, अष्टगन्ध से भोजपत्र पर पूर्वोक्त १६ कवचों को लिखकर उसे पीले धागे में उसे लपेट कर या लाल लाख से एवं सुवर्ण से वेष्टित कर, उस यन्त्र (गुटिका) को पञ्चगव्य से स्नान कराकर यथोक्तविधि के अनुसार उसका पूजन करे ।।३४-३६।।

गुटिकेशी महाविद्या धारयेत्साधकोत्तमः ।
पुरुषो दक्षिणो वाह्वो योषिद्वामकरे ततः ।
किं किन्न लभते कामं मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ।।३७।।

इस प्रकार से पूजा की गयी गुटिकारूपिणी महाविद्या को श्रेष्ठ साधक पुरुष अपनी दाहिनी भुजा में तथा स्त्री अपनी बायीं भुजा में धारण करे तो उसकी कौन-सी कामना नहीं प्राप्त होती? अर्थात् उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा मुक्ति उसके करतल में स्थित होती हैं ।।३७।।

वन्ध्या वा काकवंध्या वा च मृतवत्सा च कामिनी ।।३८।।
रजस्वला चतुर्थेऽह्नि धारयेत् हृदयोपरि ।
पुत्रान्चिरायुषो देवि लभते नात्र संशयः ।।३९।।

हे देवि ! वन्ध्या, काकवन्ध्या (एक संतति वाली) या मृतवत्सा स्त्री यदि रजस्वला होने पर चौथे दिन अपने हृदय पर इसे धारण करे तो उसे चिरायु पुत्र प्राप्त हेता है । इसमें कोई संशय नहीं है ।।३८-३९ ।।

श्मशाने यः पठेत् मंत्री कवचानि च षोडश ।
मारयेदखिलान्शत्रून् वशयेद्भुवनत्रये ।।४०।।

जो मन्त्री (मन्त्र साधक) इन सोलह कवचों को पढ़ता है, वह अपने समस्त शत्रुओं को मार डालता तथा तीनों लोकों को वश में कर लेता है ।।४०।।

आकर्षयति स्ववर्गामास्तं भयेद् वायुभास्करौ ।
मोहयेत्रिजगद्देवि साधको मन्त्रसाधकः ।।४१।।

वह मन्त्र साधक स्वर्ग की स्त्रियों को भी आकर्षित तथा वायु एवं सूर्यदेव को भी स्तभित और तीनों लोकों को मोहित कर सकता है ।।४१।।

मुक्तिसाधनको नाम कवचं साधकेश्वरी ।
यो सिद्धिशेवतो भर्तुराज्ञया सततं पठेत् ।
धारयेद्वा लिखेद्वासौ सा भवेत् षोडशी स्वयं ।।४२।।

जो साधकेश्वरी (साधिका) इस मुक्ति साधन नामक कवच को सिद्ध्यर्थ सेवा करती हुई अपने पति की आज्ञा का पालन करती हुई निरन्तर पढ़े-लिखे, या धारण करे तो वह स्वयं षोडशी (त्रिपुरा) हो जाती है ।।४२।।

स्वयं मन्त्री शिवो भूत्वा देवी भूत्वा च तत् प्रिया ।
शिवशक्तिमयं रूपं भवेत् कवचधारणात् ।।४३।।

इस कवच को धारण करने मात्र से स्वयं मन्त्री शिवस्वरूप तथा उसकी पत्नी देवी स्वरूप हो जाते हैं। इस प्रकार दोनों शिवशक्ति रूप हो जाते हैं ।।४३।।

इदं कवचमीशानि दिव्यं मंत्रमयं परम् ।
मुक्तिसाधनकं नाम गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।४४।।

हे ईशानि ! यह मुक्तिसाधन नामक कवच अत्यन्त दिव्य, मन्त्ररूप सर्वश्रेष्ठ तथा अपनी योनि के समान गोपनीय रखने योग्य है ।।४४।।

।। माहात्म्य कथन ।।

इति श्रीमन्त्रराजोऽयं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
श्रीत्रिकूटारहस्याख्यं सर्वमन्त्रनिधिः परम् ।।४५।।
गोपनीयोऽतिगुह्योऽयं त्रिकूटाया रहस्यकम् ।
इदं सारं हितं त्राणं श्रीविद्यानिर्णयाद्धितम् ।।४६।।

इस प्रकार सभी तन्त्रों में गोपित श्री त्रिकूटा रहस्य नामक यह मन्त्र राज, सभी मन्त्रों की परमनिधि स्वरूप है। यह गोपनीय से भी अत्यन्त गोपनीय त्रिकूटा रहस्य सारभूत, कल्याणकारी, रक्षक एवं श्रीविद्या का निरूपण करने वाला ग्रन्थ है ।।४५-४६।।

द्वात्रिंशैर्पटलैर्युक्तं देवीरूपं विचिन्तयेत् ।
यो गुह्यो वर्तते देवि तन्त्रराजो महेश्वरि ।।४७।।
न तत्र देवि दुर्भिक्षं न दारिद्र्यं कदाचन ।
मारीभयं न तथासीद्वह्निचौराद्युपद्रवम् ।।४८।।
तत्रैव वसते लक्ष्मीः परिपूर्णापि निश्चला ।
त्रिकूटा वसते तत्र यन्त्रतन्त्रोऽयमीश्वरी ।।४९।।

हे महेश्वरि ! हे देवि ! हे ईश्वरि ! यदि बत्तीस पटलों से युक्त इस यन्त्र तन्त्रमय ग्रन्थ को देवी का स्वरूप मानकर, जो इस तन्त्रराज में गुप्तरूप से विराजमान है, चिन्तन करे तो वहाँ दुर्भिक्ष या दारिद्र्य कभी नहीं होता और न मारीभय या अग्नि भय ही होता है। वहीं लक्ष्मी परिपूर्ण और विशेष रूप से निश्चल हो निवास करती हैं। वहीं त्रिकूटा स्वयं तन्त्र-यन्त्र स्वरूप से निवास करती हैं ।।४७-४९।।

पूजयेद्देवि तन्त्रेशि रक्तपुष्पैर्विशेषतः ।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्धूपदीपादितर्पणैः ।।५०।।
बलिंदद्यान् महेशानि साधकः सर्वसिद्धये ।
गोदानं स्वर्णदानं च रूपदानं तथैव च ।।५१।।

हे देवि, हे महेशानी, हे तन्त्रेशी ! साधक सब प्रकार की सिद्धि के लिए गन्धाक्षत-पुष्प, विशेषरूप से लाल पुष्पों, धूप, दीप, तर्पण आदि से पूजन करे तथा बलिदान, गोदान, स्वर्णदान, रूपा (चाँदी) का दान करे ।।५०-५१।।

दत्वा देवि त्रिकूटेयं साधकस्य हि सिद्धये ।
तद् गृहं च भवेत्पूर्णं धनधान्यविभूतिभिः ।।५२।।
गोमहिष्यादिभिर्देवी गजाश्वपरिपूरितम् ।
तद् गृहं देवतातुल्यं यन्त्रतन्त्रोयमीश्वरी ।।५३।।

इस प्रकार से दानादि करने पर यह त्रिकूटा साधक को सिद्धि प्रदान करती हैं तथा उसका घर धन-धान्य, वैभव, गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा आदि से पूर्ण रूप से परिपूर्ण हो जाता है। वह गृह जहाँ, यह त्रिकूटा रहस्य नामक तन्त्र उपस्थित होता है, देवता तुल्य हो जाता है ।।५२-५३।।

।। देव्युवाच ।।

भगवन्करुणाम्भोधे सर्वतन्त्रैकपारगः ।
क्रीतास्मि भवतानेन कथितेन महेश्वरि ।।५४।।

देवी बोलीं–हे भगवन्! आप करुणा के सागर तथा सभी तन्त्रों में पारङ्गत हो। मुझे महेश्वरि सम्बोधन के इसके कथन द्वारा मैं आपके द्वारा खरीद ली गयी हूँ ।।५४।।

श्रीदेव्याषोडशाक्षर्य्या तन्त्रराजस्य धूर्जटे ।
विद्या श्रुत्वा महानन्दो ततो मे त्रिपुरान्तक ।।५५।।

हे त्रिपुरान्तक ! हे धूर्जटे ! आप द्वारा श्री देवी, षोडशाक्षरी विद्या के इस तन्त्रराज को सुनकर मुझे महान आनन्द हो रहा है ।।५५।।

।। श्रीभैरव उवाच ।।

श्रीत्रिकूटारहस्याख्यं तन्त्रमन्त्रैकसागरम् ।
अदातव्यमभक्ताय कुचैलाय दुरात्मने ।।५६।।

धूर्ताय बुद्धिहीनाय दीक्षाहीनाय पार्वती ।
अकुलाथ निंदकाय हीनाय गुरुश्रद्धया ।।५७।।

श्रीभैरव बोले–हे पार्वती ! यह श्री त्रिकूटा रहस्य नामक ग्रन्थ तन्त्र-मन्त्र का एक मात्र सागर है, जो अभक्त, दुरात्मा, कुचैल (कुवस्त्रधारी), धूर्त, बुद्धिहीन, दीक्षारहित, अकुल (कुलमार्ग से रहित), निन्दक और गुरु के प्रति श्रद्धाविहीन व्यक्ति को देने योग्य नहीं है ।।५६-५७।।

स्वपुत्रायापि तन्त्रेशं दत्वा कुष्टी भवेत्कलौ ।।५८।।

उपर्युक्त दोषों से युक्त अपने पुत्रों को भी इस तन्त्रराज को प्रदान करने वाला साधक कलि में कुष्टी होता है ।।५८।।

इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम् ।
सर्वस्वं मे शिवं तत्र गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।५९।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रे त्रिकूटारहस्ये मुक्तिसाधककवचवर्णननाम द्वात्रिंशपटलः ।।३२।।

यह परम रहस्य मैंने तुम्हारी भक्ति के कारण तुमसे कहा है । यह मेरा सर्वस्व है तथा कल्याणकारक है, अगनी योनि की ही भाँति गोपनीय है ।।५९।।

श्री रुद्रयामलतन्त्र के त्रिकूटारहस्य का मुक्तिसाधककवच नामक
बत्तीसवाँपटल सम्पूर्ण हुआ ।।३२।।

।। श्रीत्रिकूटा रहस्याख्यं राजतन्त्रकः श्री त्रिपुरसुन्दर्या इति ।।
।। श्री जगदम्बिकार्पणमस्तु ।।
इति शुभम् ।

श्री दक्षिणाकालिका देवी की कृपा से
इसकी कल्याणी हिन्दी टीका
सम्पन्न हुई ।।



हमारे प्रकाशन

श्रीमहाभागवत उपपुराण

ब्रह्मार्चन पद्धतिः (हिन्दी/अंग्रेजी)

सद्भाव सेतु शङ्कर

बृहद्देवी सूक्तम्

नवार्ण मन्त्र लेखन क्रम

दिव्य चण्डीक्रमा दुर्गा सप्तशती

कालिका पुराणम् (यन्त्रस्थ)

श्रीकाली तत्त्वम् (यन्त्रस्थ)

देवी पुराणम् (यन्त्रस्थ)



नवशक्ति प्रकाशन, चौकाघाट, वाराणसी